बुन्देली
कहावतें और मुहावरे

मध्यप्रदेश के बुन्देलखण्ड जनपद की वाचिक साहित्य परम्परा

डॉ. दुर्गेश दीक्षित

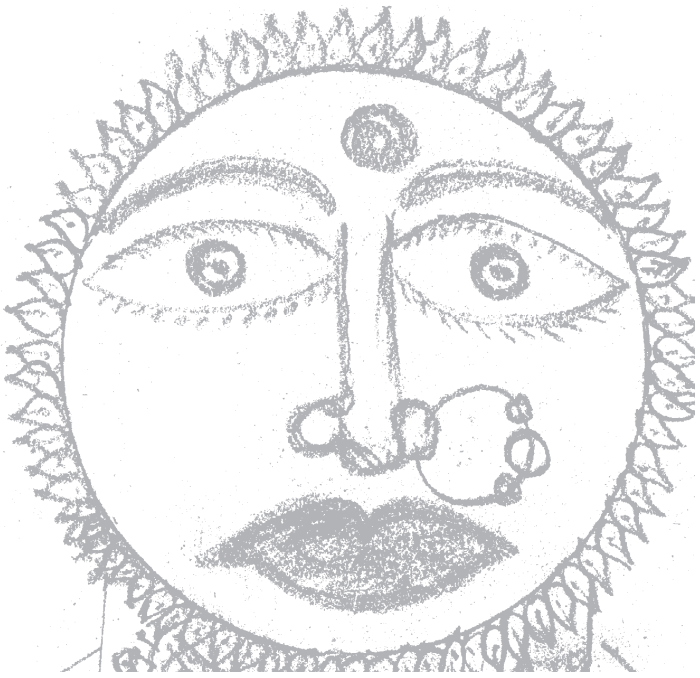

बुन्देली

कहावतें और मुहावरे

मध्यप्रदेश के बुन्देलखण्ड जनपद की वाचिक
साहित्य परम्परा

डॉ. दुर्गेश दीक्षित

प्रधान सम्पादक
श्रीराम तिवारी

सम्पादक
अशोक मिश्र

आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् भोपाल का प्रकाशन

प्रकाशक – आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल-462002
फोन – 0755-2661948, 2661640
E-mail : mplokkala@rediffmail.com
mptribalmuseum@gmail.com
web. : www.mptribalmuseum.com

प्रकाशन वर्ष – वर्ष 2013 प्रथम संस्करण

स्वत्वाधिकार – आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

शब्दांकन – आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

आवरण – मिट्टी शिल्प (मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय)

मुद्रण – मध्यप्रदेश माध्यम, भोपाल

मूल्य – 300/- रुपये (तीन सौ केवल)

■ पुस्तक से सम्बन्धित समस्त विवादों का न्यायालयीन कार्य क्षेत्र भोपाल होगा।

■ पुस्तक में प्रकाशित समस्त सामग्री लेखक की है, आवश्यक नहीं कि प्रकाशक इससे सहमत हो।

ISBN - 978-93-83118-01-4

व्यक्ति का अनुभव उत्तरोत्तर जितना सघन होता जाता है- उतनी ही मौन की स्थिति बनती चली जाती है। अनुभव के सन्दर्भ में भी यह स्थिति लागू होती है। अनुभूति जितनी गहरी होगी- कहने में उतनी सूत्रात्मक हो जाती है।

जनपदीय कहावतें/ लोकोक्तियाँ/ मुहावरे और पहेलियाँ लोक अनुभव के सूत्रात्मक कथन हैं, जो बहुत सारे अर्थों को अपने में संरक्षित किये रहते हैं। बहुत कुछ कहने से हमेशा यह बेहतर होगा कि मात्रा में कम कहकर अधिक सम्प्रेषित किया जाय। लोक समाजों ने इस अनुभव सार को अपनी-अपनी भाषा में कहा है। वाचिक साहित्य परम्परा की इस विरासत का संग्रह ऐसे समय में बहुत महत्त्वपूर्ण है- जबकि स्मृति का ह्रास होता जा रहा हो।

अकादमी के अनुरोध पर वयोवृद्ध साहित्यकार डॉ. दुर्गेश दीक्षित ने बुन्देली मुहावरे और लोकोक्तियों का संग्रह किया है। लोक साहित्य में उत्सुक पाठकों को यह रूचिकर लगेगा और अपनी प्रतिक्रिया भी अकादमी को देंगे-ऐसी आशा है।

- सम्पादक

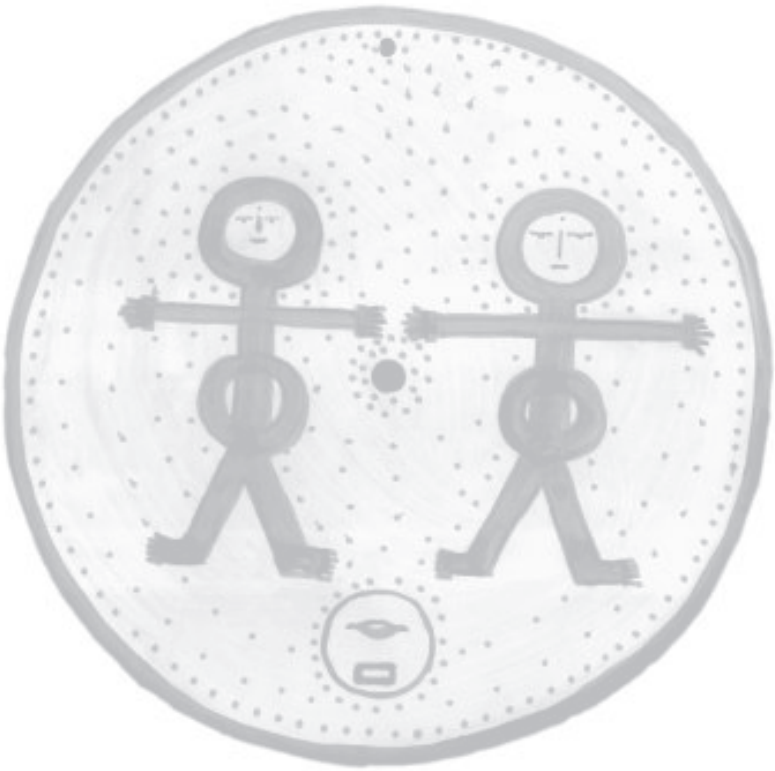

अनुक्रम

कहावतें	—	09
कहावतों की कहानियाँ	—	63
मुहावरे	—	87

कहावतें

कहावतें और मुहावरे जनमानस के लिए प्रकाश स्तम्भ हैं। इनके प्रकाश में हम जीवन के कठिन क्षणों में लोकानुभव से मार्गदर्शन प्राप्त कर सफलता का मार्ग खोज लेते हैं। यह वह चिनगारी है, जिसमें अनन्त ऊष्मा है। जो जनमानस को मति, गति और शक्ति प्रदान करती है। हम किसी भी प्रसंग की चर्चा करें। वार्तालाप के समय उससे संबंधित अनेक कहावतें अनायास ही मुँह से निकल पड़ती हैं, जो सार्थक और प्रसंगोचित होती हैं। यदि किसी व्यक्ति से पूछा जाये कि तुम्हें कितनी कहावतें याद हैं तो वह तुरंत कह देगा कि एक भी नहीं यदि आप उसी व्यक्ति से कुछ देर के लिए किसी भी विषय पर चर्चा करेंगे तो बीच–बीच में उसके मुँह से अनायास ही कहावतों और मुहावरों की झड़ी लग जायेगी। यही इनकी लोक–व्याप्ति का प्रमुख प्रमाण है। इनका साम्राज्य विस्तृत है। इनके गढ़ने वालों की सूझ–बूझ, सूक्ष्म पर्यवेक्षण–क्षमता और चिंतनशीलता प्रशंसनीय है। वे सच्चे अर्थों में जीवन दृष्टा और मार्ग प्रदर्शक थे।

ये नदी के उन शिलाखण्डों की तरह अनगढ़ हैं, जो युग युगान्तर काल के प्रवाह में थपेड़े खा–खाकर शालिग्राम बन जाते हैं या शिवत्व को प्राप्त कर लेते हैं। इनमें लोक का बेडौलपन है, छंदों की शास्त्रीयता नहीं है। फिर भी इनमें काव्य का सहज प्रवाह और स्वाभाविकता है, जो कृत्रिमता से कोसों दूर हैं। वे सार–गर्भित और सहज स्मरणीय हैं। कहावतों के संदर्भ में परम विद्वान, प्राच्य साहित्य के सुप्रसिद्ध अध्येता डॉ0 वासुदेवशरण अग्रवाल का कथन विशेष उल्लेखनीय है। उन्होंने अपने ग्रंथ 'पृथ्वी–पुत्र' में लिखा है – **'लोकोक्तियाँ मानवी ज्ञान के चोखे और चुभते हुए सूत्र हैं।'**

अनंत काल तक धातुओं को तपाकर सूर्य रश्मियाँ नाना प्रकार के रत्न–उपरत्नों का निर्माण करती हैं, जिनका आलोक छिटकता रहता है। उसी प्रकार ये लोकोक्तियाँ

मानवी–ज्ञान के घनीभूत रत्न हैं, जिन्हें बुद्धि और अनुभव की किरणों से फूटने वाली ज्योति प्राप्त होती है। लोकोक्तियाँ प्रकृति के स्फुर्लिंगी (रेडियो–एक्टिव) तत्वों की भाँति अपनी प्रखर किरणें चारों ओर फैलाये रहती हैं। उससे मनुष्य को व्यावहारिक जीवन की गुत्थियाँ सुलझाने में बड़ी सहायता मिलती हैं। ये अनुभवजन्य ज्ञान के संक्षिप्त सूत्र हैं। शिल्प की दृष्टि से ये अनेक प्रकार की होती हैं। गद्य और पद्य में और तुकांत होना इनका सहज लक्षण है। ये एक पदीय, दो पदीय, तीन पदीय, चार पदीय और कुछ छह पदीय तक होती हैं। तुकांतता और छंदबद्धता इनका प्रमुख लक्षण है। ये ज्यादातर दोहा छंद में प्राप्त होती हैं। इनकी रचना लोक–शिल्पियों ने की है, इसलिए इन्हें काव्य शास्त्र की कसौटी पर नहीं कसा जा सकता। लोक–शिल्पियों ने टूटी–फूटी भाषा में ज्ञान के खजाने लुटाये हैं। मानव–जीवन के पग–पग पर इनकी उपयोगिता है। ये भूल–भटके पथिकों का मार्ग–दर्शन करती हैं। विषम परिस्थितियों और गाढ़े समय में ये सीधा मार्ग प्रदर्शित करती हैं। इनका आश्रय लेकर बड़े से बड़े झगड़े और बड़ी से बड़ी पंचायतें अपने आप सुलझ जाती हैं। यदि इन्हें नीतिशास्त्र का पर्याय कहा जाये तो उचित होगा।

भोजपुरी साहित्य के अध्येता, लोकसाहित्य मनीषी डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने कहावत, मुहावरा, खुंस, औटपाय को लोक सुभाषित में ही परिगणित किया है। इनमें से खुंस और औटपाय को लोकोक्ति और लोक कहावतों के अन्तर्गत स्थान देना ही उचित है।

अर्थ और प्राचीनता

यदि कहावत शब्द का संधि विच्छेद किया जाये तो कह + आवत बनता है, जिसका अर्थ है– कहते आये हैं। इसका सीधा सम्बन्ध लोक प्रचलन से है। जिस विचार को परंपरा से कहते आये हैं, वह कहावत है। इसे लोकोक्ति, सूक्ति और सुभाषित की संज्ञा दी जा सकती है। ये जनकल्याण से आपूरित और मार्गदर्शिका होती हैं। सूक्ति या सुभाषित प्रायः किसी वयोवृद्ध व्यक्ति का अनुभवजन्य कथन होता है जो पीढ़ी दर पीढ़ी अर्जित लोकानुभव तथा लोकज्ञान से परिमार्जित होता जाता है। काल की अग्नि में युगों–युगों तक तपता है। कुंदन की भाँति खरा उतर कर 'लोकोक्ति' अथवा 'कहावत' का रूप धारण कर लेता है। कहावतों का जन्म कब, कैसे हुआ? यह जिज्ञासा सदैव जिज्ञासु पाठकों के मन को कुरेदती रहती है। सच पूछा जाये तो कहावतों की परंपरा बहुत ही प्राचीन है। यह विश्व का बौद्धिक साहित्य है। इसे नीति मूलक साहित्य भी कहा जा सकता है। इस संदर्भ में प्राच्य साहित्य के अध्येता डॉ0 वासुदेव शरण

अग्रवाल का कथन प्रासंगिक होगा– 'भारत वर्ष में बौद्धकाल और उपनिषद् युग से विकसित हुई नीति साहित्य की यह परंपरा कौटिल्य–सूत्र तथा कौटिल्य के अर्थशास्त्र से अपेक्षाकृत अधिक संपन्न हुई।' वैसे तो चाणक्य सूत्र सूक्तियों से भरा पड़ा है जिसे बुंदेली में चन्नायकौं कहा जाता है। बुंदेलखण्ड में शिक्षा का शुभारंभ 'ओनामासीधम्' (ओम् नमः सिद्धम्) से होता था। इसके बाद पाटियाँ पढ़ाई जाती थीं। पाटियाँ वैदिक सूत्रों के विकृत रूप हैं। आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल, नूतन बिहार कालोनी टीकमगढ़ ने पाटियों के अनुरूप वैदिक सूत्र प्रस्तुत करके अपने मत की भली–भाँति पुष्टि कर दी है।

चाणक्य सूत्र संस्कृत की कहावतों का भण्डार हैं, जिनका रूपान्तर आज की बुंदेली कहावतों में दिखाई दे रहा है। चाणक्य सूत्र की दो कहावतें प्रस्तुत हैंः–

श्वः सहस्रादद्य काकिणी श्रेयसी

(4/58 चाणक्य सूत्र)

अर्थात् कल के हजार से आज की कौड़ी श्रेष्ठ है। बुंदेली में इससे मिलती–जुलती एक कहावत प्रचलित है – 'नौ नगद ना तेरा उधार।'

श्वोमयूरादद्य कपोतो वरः

(4/59 चाणक्य सूत्र)

अर्थात् कल के महंगे मोर से आज का सस्ता कबूतर श्रेष्ठ है। 'काल के माँगे मोर सें आज कौ सस्तों कबूतर अच्छों है'।

कामसूत्र में भी कुछ संस्कृत की कहावतें प्राप्त होती हैं। उनमें से एक कहावत दृष्टव्य है –

वरसांशयिकान्निष्काद सांशयिकः।
कार्षापणः इतिलोकार्यातकाः।।

(1/2/24 कामसूत्र)

अर्थात् स्वर्ण मुद्रा से रजत मुद्रा अच्छी है जिसमें कोई खटका है। इसका अर्थ यह हुआ कि उन दिनों बुन्देलखण्ड में स्वर्ण और रजत मुद्राओं का प्रचलन था। इससे इस कहावत की प्राचीनता का अनुमान लगाया जा सकता है। आचार्य चाणक्य और वात्स्यायन के ग्रंथों में नीति और जनकल्याण पर आधारित सैकड़ों कहावतें प्राप्त होती हैं।

कहावतें प्रायः किसी न किसी घटना पर आधारित होती हैं। लोगों ने जैसा देखा वैसी ही कथा कही–सुनी और वे कथाएँ लोक साहित्य की अमूल्य निधि बन गईं। भाषा में गतिशीलता और प्रवाहमयता लाने के लिए कथाकारों ने लोक कहावतों का खूब प्रयोग किया है। यही कारण है कि जातक कथाओं, पंचतंत्र की कथाओं, बृहत्कथा, मंजरी कथा–सरित्सागर, हितोपदेश और दशकुमार चरित्र में लोक कहावतों का भण्डार भरा पड़ा है। इन कथाओं का चरम वाक्य अथवा सूत्र–वाक्य ही 'कहावत' का स्वरूप ग्रहण कर लेता है। किसी विशेष प्रकार की घटना की प्रत्यक्ष अनुभूति इन कहावतों की उत्पत्ति का मूल कारण हैं। वैसी घटनाएँ जब भी, जहाँ भी घटती हैं, वह सूत्र स्मरण हो आते हैं और कहावत गढ़ ली जाती है। पाली भाषा में 'सिद्धि जातक' में प्रयुक्त एक पाली की कहावत प्रस्तुत है –

जीवकञ्च स्वमतं दिस्वाः धनपालिञ्च दुष्गंत।
पन्थकञ्च बने मूढ़ं पापको पुनरागता।।

अर्थात् जीवंक नामक व्यक्ति मृत दिखा, धनपाली नामकदासी को दुर्गति में देखा, पंथक नामक व्यक्ति को वन में रास्ता भूलकर पागलों की तरह भटकते देखा और फिर पापक अपने घर आ गया। ये पाली की लोक कहानी बुंदेली में भी थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ आज भी प्राप्त होती है। एक महिला के पति का नाम 'ठनठनराय' था। महिला को ये नाम अच्छा नहीं लगता था। वह नामों की सार्थकता का पता लगाने के लिए निकल पड़ी। किन्तु वह नामों की विपरीत स्थिति को देखकर अपने पति से नाम सें संतुष्ट होकर अपने घर लौट आई। इस कहानी का संक्षिप्तांश कहावत के रूप में इस प्रकार बुंदेलखण्ड में प्रचलित है –

लकरी बेंचत लाखन देखे,
घास खोदतन धनपत राय।
अमर हते जो मरतन देखे,
तुमई भले मोरे ठनठनराय।।

दूसरी महिला को अपने पति का नाम 'छुछइयाँ' ठीक नहीं लगता। जब उसने नामों की दुर्दशा देखी तो उसने अपने पति का नाम 'छुछइयाँ' ही ठीक समझा। इस कथा पर आधारित एक कहावत प्रचलित हो गई :–

मरे अमर जू हमने देखे,
धनपत माँगे भीक

लच्छमी कंडा बीनत फिरतीं,
ईसैं नाँव छुछइयाँ ठीक।।

सारे देश के जनपदों के चिंतकों के विचारों में प्रायः समानता दिखाई देती है। केवल भाषा और घटनाओं में ही अंतर दिखाई देता है। कहावतों के मूल भावों में समानता है। राजस्थान में भी इसी भाव से मिलती जुलती एक कहावत प्रचलित है –

अमरोतो मैं मरतो देख्यो, भाजत देख्यौ सूरो।
कोदरतो मैं खुसती देखी, लाछ बुहारै कूड़ो।
गोरा तो गोबर चुगै, खसम भलौ लैटेंरौ।।

इस प्रकार की लघुकथाओं पर आधारित सैंकड़ों कहावतें आज भी लोक में जीवित और प्रचलित हैं। यह जातक कथा ढाई हजार वर्ष पुरानी है। इनके आधार पर कहावतों की प्राचीनता का अनुमान लगाया जा सकता है। बुंदेलखण्ड में कुछ ऐसी लघुकथाएँ प्रचलित हैं, जिन्हें कहावतों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यदि उन कहावतों की गहराई में जाकर देखें तो एक लघुकथा उजागर हो जाती है।

जैसे– **'पईं पईं करत फिरों**
घी देतन बामुन नर्रयात्
चूले की खाँईं मजोटे में हुन कड़नें
माते दुके पिआंर में को कयै को बैरी होय
नंगी भली कै मूसर आड़ो
अपनीं–अपनी परी आन को जाबैं कुरयानें कान

ये कहावतें लघुकथाओं के संक्षिप्त रूप हैं।

बड़ी–बड़ी पोथियों, काव्य ग्रंथों, कहानियों और लोकगाथाओं में जो बात विस्तार से कही जाती है, वही बात कहावतों में सूत्र रूप में कह दी जाती है। कहावत में कथा के संकेत मात्र होते हैं। रामचरित मानस जैसे महाकाव्य के संबंध में बुन्देलखण्ड में एक कहावत प्रचलित है –

इक राम हते इक रावन्ना,
इक ठाकुर ते इक बामन्ना।
उननें उनकी नार हरी,
इननें ऊकी नास करी।।

बात हती बस एतन्ना,
तुलसी नें लिख दओ पोथन्ना।।

यह कहावत विशाल महाकाव्य का एक लघु संस्करण मात्र है। कहावतें केवल विद्वानों के शोध प्रबंधों तथा पुस्तकालयों की ही शोभा नहीं हैं वे लोकमानस द्वारा स्वीकृत तथा जनता के कंठ में सदैव विराजमान जीवित संदर्भ हैं। कच्छ के लोक साहित्य के प्रमुख अध्येता श्री दुलेराम कारणी का कथन अत्यंत सटीक है– 'सुभाषित जहाँ एक दुकान पर चलने वाली हुण्डी है, वहाँ कहावत एक ऐसा राजमान्य लोक–सिक्का है जो रास्ता चलते बाजार में बेधड़क चाहे जहाँ चलाया जा सकता है।' (कच्छी कहेवतों, पृष्ठ 5 का हिन्दी रूपान्तर)।

बुन्देली कहावतें मानव जीवनोपयोगी हैं। वे कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, ज्योतिष और नीति पर आधारित हैं। मानव–जीवन में पग–पग पर इनकी उपयोगिता है। अधिकांश कहावतें पद्यबद्ध हैं। कहावतकारों ने अपनी बात कहने के लिए ज्यादातर दोहा, छंद का उपयोग किया है। ज्यादातर कहावतें तुकांत होने के कारण कहने सुनने में रूचिकर प्रतीत होती हैं। हालांकि अधिकांश कहावतकार अनाम और अज्ञात हैं। मौसम, कृषि पर आधारित कहावतों के रचयिता के रूप में घाघ–भड्डरी और बोधा का नाम विशेष उल्लेखनीय है। स्वास्थ्य की दृष्टि से कुछ वर्जित वस्तुओं का नामोल्लेख एक कहावत में माहवार किया गया है –

चैतें गुड़ बैशाखें तेल।
जेठें लटा अषाढ़ें बेल।।
सावनें निब्बू भादों दई।
क्वार करेला कातक मई।।
अगनें जीरे पूसें धना।।
माव में मिसरी फागुन चना।।
जो जे चीजें बंदकैं खाय।
बिना बुलाव सरग खौं जाय।।

इस कहावत में मानव जीवनोपयोगी शिक्षा दी गई है। सुप्रसिद्ध कहावतकार घाघ–भड्डरी और बोधा ने अपने परिपक्व अनुभव के अनुसार मौसम और वर्षा की उपयोगी जानकारी कृषकों को प्रदान की है, जिनके अनुसार वे कृषि की भावी योजनाएँ बना लेते हैं। इस प्रकार की कुछ कहावतों के उदाहरण प्रस्तुत हैं –

बटिया खेती, साँट सगाई।
जा में नफा कौन नें पाई।।

प्रायः परिश्रम करने से ही कृषि कार्य में अधिक लाभ प्राप्त होता है। एक भुक्त–भोगी की कहावत सुनने योग्य है–

खेती तौ थोरी करै, मेहनत करैं सिवाय।
राम चहै वा मनुस खौं, टोटौ कभऊँ न आय।।

कहावतकारों ने वर्षा के लक्षण भी कुछ कहावतों में दिए हैं –

चैत चमक्कैं बीजली, बरसै सुदि बैशाख।
जेठैं सूरज जो तपैं, निश्चै बरसा भाख।।

कुछ कहावतों में अनावृष्टि के भी लक्षण बताए गए हैं –

पंचमि कातिक शुक्ल की, जो होबैं शनिवार।
तौ दुकाल भारी पड़े, मचिहै हाहाकार।।
जेठ बदी दसवीं दिना, जो शनिबासर होइ।
पानी रये न धरनि पै, विरला जीबैं कोइ।।

कुछ कहावतों में अपशकुन सूचक लोगों के लक्षण भी दिए गए हैं। जरा देखिये एक कहावत को –

सौ में फुली सहस में काना, सवा लाख में ऐंचकताना
ऐंचकताना करी पुकार, मैं मानी कैरा सैं हार।
कैरा बुद्धि विनासी, करें बाप की हाँसी।
जीकी की नइयाँ छतियैंन बार, ऊसें मानें कैरा हार।।

इसी प्रकार की एक कहावत और देखिये –

काना कुबड़ा तिरपटा, मूँढ़ में गंजा होय।
इनसें बातें जब करों, हात में डण्डा होय।
पंडित वैद मसालची, इनकी उल्टी रीत।
औरें गैल बतायकैं, अपुन नाकबैं भीत।।

स्वास्थ्य की दृष्टि से कुछ मूल्यवान बातें भी बुंदेली कहावतों में बताई गई हैं, जिनकी पग–पग पर उपयोगिता है।

निन्नें पानी जो पियें, हर्र भूँज कैं खाय।
दूद बियारी जो करें, वैद घरै नाँ जाय।।
ब्यारी कभऊँ न छोड़िए, बिन ब्यारी बल जाय।
जो ब्यारी औगुन करें, दुपरैं थोरौ खाय।।

ब्यालू के संबंध में लोक–कहावतों में जीवनोपयोगी निर्देश दिए गए हैं –

सावन ब्यारी जब कब करिए, भादों बाकौ नाम ना लिइए।
क्वाँर मास के जे पखवारे, जतन जतन सें जे निनवारे।
आदे कातिक परें दिवारी, भर–भर पेटां करों ब्यारी।

एक कहावत में गंभीरता का परिचय दिया गया है –

अधजल गगरी छलकत जाय।
भरी गगरिया चुपकें जाय।।

इसी प्रकार का भाव संस्कृत की कहावत में भी प्रदर्शित हो रहा है–

संपूर्ण कुम्मोन करोति शब्दं, अर्द्धों घटो घेषमुपैति नूनं।
बिद्वान्कुलीनोन न करोति गर्वम, गुणे विहीना बहु जल्पयान्ते।

कुछ कहावतों में स्थानीयता का प्रभाव दिखाई देता है। जैसे–

अपनी–अपनी परी आन, को जाबै कुरयानें कान

× × ×

कोरी कौ ब्याव, कड़ेरो हाँत जोरैं फिरें।

× × ×

घर के जान बरातें गए, रानीपुरें कठवा में दए।

× × ×

कोउ कयें कँउकी मदउ कयें मउकी

× × ×

उनकी तों पलेरा कैसी लगी

× × ×

तुम कौन बल्देवगढ़ की तोप आव

आदि कहावतें आज भी प्रचलित हैं।

जमीन से जुड़े हुए अनेक कवियों तुलसी, कबीर, रहीम आदि की अनेक पंक्तियाँ बुंदेली कहावतों का रूप धारण कर समाज में प्रयुक्त हो रही हैं। अनुकरण के आधार पर ये सारे समाज के लिए उपयोगी बन जाती हैं। फिर लोक अपने मनचाहे ढंग से उनका लौकिक संस्करण तैयार कर लेता है। अनेक स्थलों पर लोग केवल एक ही पंक्ति से काम चला लेते हैं, जैसे– 'अब पछताये होत का जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत' 'रघुकुल रीति सदा चलि आई' मूरख हृदय न चेत' 'खेलत में को काकों गुसइयाँ' 'जाखों राखे साइयाँ मार सके न कोय' भावी भेंट सकें त्रिपुरारी' 'शंकर सहायतों भयंकर का करें' आदि कुछ सुप्रसिद्ध कवियों की पंक्तियाँ कहावतों के रूप में आज भी प्रयुक्त हो रही हैं। कुछ कहावतें अति क्षेत्रीय होती हैं, जिनमें क्षेत्रीय स्थलों का नामोल्लेख होता है। जैसे– बरसें कँऊं, कड़ें तो अड़वारे तरें हों।, बड़े लड़इया महुबे वारे, तालन में ताल भोपाल कौ और सब तलइयाँ, रानिन में रानी कमलापति और सब रजइयाँ आदि समाज में प्रचलित हैं। कहावतों को किसी भौगोलिक और भाषाई सीमा में आबद्ध नहीं किया जा सकता। जहाँ लोकानुभव मेल खाता है, वहाँ वे अपना स्थान बना लेती हैं। उनमें आवश्यकतानुसार भाषाई परिवर्तन भी हो जाता है। यही कारण है कि अनेक बोलियों की कहावतों में समानता पाई जाती है। केवल उनमें भाषाई अंतर होता है। कहावतकारों के चिंतन में समानता दिखाई देती है। कुछ छोटी कहावतें और मुहावरे अपने मूल शब्दों के साथ ही अन्य बोलियों में भी प्रचलित हो जाते हैं, जैसे– पाँय जब मुटरयाँय, मरें न मोंच देय। इनमें मुटरयाँय और माचौ शब्द मुख्यतः अवधी के हैं, किन्तु इनका बुंदेली में धड़ल्ले से प्रयोग हो रहा है।

कुछ कहावतें–मुहावरों के रूप में प्रयुक्त होती हैं। ये सब उनके प्रयोग पर आधारित होती हैं। कभी कोई कहावत–मुहावरा बन जाता है और मुहावरा–कहावत का रूप धारण कर लेता है। जैसे– 'मरतई साई नईं परत' कहावत है। यदि इसे प्रश्न के रूप में प्रयुक्त किया जाय तो ये मुहावरा बन जाता है। जैसे– का मरतई साई पर गई? इस प्रकार के रूपान्तरण प्रायः होते ही रहते हैं। लोक साहित्य की सबसे महत्त्वपूर्ण विधा कहावतें और मुहावरे ही हैं। इनसे समाज को जीवन शक्ति प्राप्त होती रहती है। ये परिस्थिति और समयानुसार अपना चोला बदलती रहती हैं। यदि इन्हें लोक शिक्षा की मार्ग–दर्शिका कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। कहावतों और मुहावरों का शाब्दिक विस्तार भले ही कम होता है। ये गागर में सागर भरने का प्रयास करतीं हैं। ये सहज, सरल, अर्थपूर्ण और आकर्षक होती हैं। इनके पीछे लोक जीवन का दीर्घकालिक अनुभव होता है। ये अनुभव–जन्य लोक टिप्पणियाँ हैं। ये अद्‌भुत, अनुभूत, रामबाण शब्दौषधि हैं। इनका असर तत्काल होता है और दीर्घकाल तक बना रहता है।

ये भाषा को सौंदर्य और सामर्थ्य प्रदान करती हैं। अधिकांश कहावतें और मुहावरे लोकभाषाओं से आती हैं। इनके पीछे लोक जीवन की समृद्ध परम्पराएँ सहेजी हैं। इनकी सार्थकता, उपयोगिता और सामर्थ्य पर कोई प्रश्न चिन्ह नहीं लगाया जा सकता है। कहावतों और मुहावरों से रहित साहित्य कभी जन मानस के हृदय को नहीं छू सकता है। सामान्य जन तो इन्हें अलंकार की भाँति ही प्रयोग करते हैं। लोगों की स्मृति में तो हजारों कहावतें और मुहावरे सुरक्षित रहते हैं। किसी से पूछने पर दो चार कहावतें ही बता पाता है। उसी व्यक्ति से बातचीत करने पर उसके मुख से सैकड़ों कहावतें और मुहावरे अनायास ही निकल पड़ते हैं। डॉ0 हरदेव बाहरी के अनुसार 'मुहावरे' भाषा के श्रृंगार हैं और इनमें अनेक प्रकार के अलंकारों का सहज और अनायास प्रयोग होता है। मुहावरों के बिना भाषा नीरस और निष्प्राण है। ऐसी कोई भाषा नहीं है, जिसमें मुहावरे नहीं हों। जब साहित्य में लोक सूचित इस सम्पत्ति का उपयोग कम या समाप्त होने लगे तो समझना चाहिए कि उस साहित्य की समाप्ति के दिन समीप आ गए हैं।

डॉ. ओमप्रकाश गुप्त ने 'मुहावरा' को परिभाषित करते हुए लिखा है– 'अभिधा से भिन्न कोई विशेष अर्थ देने वाली किसी भाषा के गढ़े हुए वाक्य वाक्यांश अथवा शब्दों इत्यादि को मुहावरा कहते हैं। ऐसे अपूर्ण और विशेष वाक्य या वाक्यांश जो अपने शब्दों का सामान्य वाच्यार्थ न प्रकट कर कुछ विलक्षण अर्थ जताते हैं; उन्हें मुहावरा कहते हैं, जैसे अत्यधिक भूखे होने की स्थिति को व्यक्त करने के लिए 'पेट में चूहे दौड़ना'' वाक्यांश का प्रयोग करना। मूलतः मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ है– मुँह पर चढ़ी हुई बात।

डॉ. भोलानाथ तिवारी के शब्दों में 'मुहावरा' भाषा विशेष में प्रचलित उस अभिव्यक्त इकाई को कहते हैं, जिसका प्रयोग प्रत्यक्षार्थ से अलग लक्ष्यार्थ के लिए किया जाता है। डॉ0 वासुदेव नंदन प्रसाद कहते हैं कि ऐसा वाक्यांश जो सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराए, मुहावरा कहलाता है।

मुहावरे के शब्दार्थ के रूप में मुहावरा वाग्धारा रोजमर्रा बोलचाल, बातचीत और अभ्यास आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है, किन्तु इनका प्रचलन न के बराबर है। सामान्यतः ऐसे विशिष्ट अर्थ देने वाले वाक्यांशों के लिए मुहावरा शब्द ही सबसे अधिक प्रचलित, बोधगम्य और स्वीकार्य है।

मुहावरे बुन्देली में हजारों की संख्या में हैं। जहाँ कोई शब्द या वाक्यांश वाच्यार्थ से हटकर लक्षणा या व्यंजना मूलक अर्थ देता है और लोक द्वारा उस शब्द या शब्द

समूह का वही अर्थ स्वीकृत हो जाता है, तो वही शब्द या वाक्यांश मुहावरे का रूप ग्रहण कर लेता है। बुंदेली मुहावरे मुख्य रूप से क्रिया, विशेषण क्रिया और थोड़े बहुत संज्ञा रूप में भी प्रयुक्त होते हैं। कुछ मुहावरे सुलभता, दुर्लभता, मानसिकता एवं सामाजिक स्थितियों के अर्थ द्योतक होते हैं। मुहावरों में अन्तर्निहित लक्षणा और व्यंजना के कारण किसी भी भाषा की अभिव्यक्ति, सामर्थ्य और रोचकता में वृद्धि होती है।

लोकोक्ति लोक जीवन के अनुभव से उत्पन्न होती है। इसका शाब्दिक अर्थ भी इस तथ्य की ओर संकेत करता है। लोक + उक्ति अर्थात् लोक प्रचलित कथन ही लोकोक्ति है। इन्हें कहावत भी कहते हैं। अर्थात् जो कहा जाए या कहीं जाने वाली बात। ये चिरकालीन अनुभव ज्ञान के सूत्र हैं। समास रूप में चिर संचित अनुभव ज्ञान राशि का प्रकाशन ही इनका प्रमुख उद्देश्य है। ये मानव–जीवन में इतनी महत्त्वपूर्ण होती हैं कि इनसे बड़े–बड़े झगड़े और पंचायत निपटा ली जाती हैं। इनका जन्म, घटना और प्रकृति, व्यवसायों तथा प्राणियों के विभिन्न गुणों, आदतों, क्रियाकलापों के फलस्वरूप होता है। इनके रचयिता अनाम होते हैं। किसी व्यक्ति द्वारा कहा गया अनुभव–जन्य कथन लोक समर्थन या अनुकरण से लोकोक्ति का रूप धारण कर लेता है। कई बार प्रसिद्ध कवियों और लेखकों की उक्तियाँ भी कहावत का रूप धारण कर लेती है।

लोकोक्तियाँ या कहावत एक ऐसा शब्द समूह है, जहाँ जीवनानुभव का सागर शब्दों की गागर में समाया होता है। भर्तृहरि के अनुसार अर्थ का निवास शब्द में नहीं, बल्कि सम्पूर्ण वाक्य में होता है। लोकोक्ति अपने में समाये शब्दों के अर्थ को निश्चित ही नहीं करती, वरन् उसे विस्तारित करके उसके भूगोल और इतिहास को उजागर और चरितार्थ भी करती है।

उक्ति का अर्थ किसी नामचीन व्यक्ति के कथन से है। जैसे– **'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्'** यह गीता की उक्ति है। **'हुइहै सोई राम रचि राखा'** यह मानस की उक्ति है। इसी प्रकार कबीर की साखियों में उक्तियाँ भरी पड़ी हैं। उनकी हर साखी में कोई न कोई मानव–जीवनोपयोगी कहावत कही गई है, जैसे–

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपहिं सीतल होय।।
बुरा जो देखन को चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपनों, मुझ सा बुरा न कोय।।

मध्यकाल के कवियों में तुलसी, बिहारी, वृन्द, रहीम और गिरिधर की कुण्डलियों मे लोकोक्तियों का बहुत अच्छा प्रयोग हुआ है। जैसे – बाबा तुलसी ने अपने दोहे में कहा है–

तुलसी पक्षिन के पिये, घटें न सरिता नीर।
धरम किए धन न घटें, जो सहाय रघुवीर।।

कुछ इसी प्रकार का कथन कविवर रहीम का भी है–

तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पान।
कहं रहीम पर काज हित, सम्पत सुचहिं सुजान।।
जो रहीम उत्तम प्रकृति, का कर सकत कुसंग।
चंदन बिष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग।।

बुंदेली के सिद्धहस्त कवि ईसुरी की चौकड़ियों में बुन्देली की लोकोक्तियों का प्रसंगानुकूल अत्यन्त सुन्दर प्रयोग हुआ है। कुछ उदाहरण देखने योग्य हैं–

ओई नीम में मानें ईसुर, ओइ नीम कौ कीरा।

× × ×

ईसुर लगत सबई खौं नौंने, दूर के ढोल सुहानें।

× × ×

ईसुर होत कबहुँ नईं देखी, ऊँट की चोरी न्योरें।

× × ×

ईसुर कबहुँ बजत नईं देखी, एक हात से तारी।

× × ×

जो तुम करन फैसला चाओं, दोई जनें गम खाओ।

उनकी चौकड़ियों में इस प्रकार की अनेक लोकोक्तियों का भण्डार भरा पड़ा है। संस्कृत कवियों में कालिदास, माघ, भारवि, दण्डी आदि ने लोक कहावतों का सुन्दर प्रयोग किया है। लोक कहावतों का प्रयोग करने से भाषा–सामर्थ्य में वृद्धि होती है। लोकोक्ति जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि यह लोक की उक्ति है। लोक साहित्य की तरह यह तो वाचिक परंपरा की चीज है और यह अनाम भी होती है। यह बात सत्य है कि उक्ति किसी न किसी व्यक्ति के मुख से प्रारंभ में निःसृत हुई होगी। फिर वह लोक की संपत्ति के रूप में प्रचलित हुई। लोकोक्तियों में उसके अपने अंचल के प्रतीक पुरूष

'मिथ' बनकर अगर उनके पीछे खड़े मिलते हैं, तो वे किसी साक्ष्य या हवाले की तरह काम नहीं करते। उस लोकोक्ति में प्राणवत्ता, सादगी, ताजगी, और काव्य दृष्टि की सृष्टि करके उसे एक रचना ही बनाते हैं। लोकोक्तियाँ, लोक कथाओं और लोक गीतों के समान लोक की रचनाएँ ही हैं। ऐसी लोकोक्तियों मे मिथ कथा शिल्प की तरह प्रतिष्ठित होती हैं। पं. विद्यानिवास जी मिश्र ने अपने एक निबंध 'भारतीय लोक साहित्य की पहचान' में शिल्प विधान को लोक साहित्य की असली पहचान माना है। उन्होंने लिखा है कि यह शिल्प–विधान अभिव्यक्त को अभिव्यंजन से जोड़ने का महत्त्वपूर्ण कार्य करता है। इतिहास जहाँ बीते समय का चेष्टा पूर्वक यथातथ्य वर्णन है, वहीं मिथक इतिहास और इतिहास से परे हमारे समय में झाँकने की खिड़की है। बुन्देली वाचिक परंपरा की सार्थकता मिथकीय परंपरा के चलते ही हैं और जीवन्त हैं। मिथक देश–काल की भौतिकता में नहीं, मानव संवेदन में रचे–बसे होते हैं। लोकोक्तियों में चरित्र या देश काल के विस्तार को सघन किया है। और एक काव्य–बिंब की रचना करती है। अलंकार शास्त्र के आचार्यों में कुंतक की मान्यता है कि 'अगर वह चीज कविता है, कवि जिसकी रचना करता है तो वह सीधे स्पष्ट वर्णन और अभिव्यक्ति में वक्रोक्ति का समावेश कर उसे काव्यात्मक बना देता है। इसमें वक्रोक्ति की जगह लोकोक्ति कर दिया जाए तो यह लोकोक्ति सौन्दर्यशास्त्र की दृष्टि से सटीक परिभाषा होगी।'

सुप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डॉ. भोलानाथ तिवारी ने लोकोक्ति की परिभाषा देते हुए कहा है– **'विभिन्न प्रकार के अनुभवों, पौराणिक तथा ऐतिहासिक व्यक्तियों एवं कथाओं, प्राकृतिक नियमों और लोक विश्वासों आदि पर आधारित चुटीली, सारगर्भित, सजीव, संक्षिप्त लोक प्रचलित ऐसी उक्तियों को लोकोक्ति कहते हैं' जिनका प्रयोग बात की पुष्टि या विरोध, सीख तथा भविष्य कथन आदि के लिए होता है।'**

इसके आधार पर कुछ मूल्यवान तथ्य निकाले जा सकते हैं, जैसे– वह अनाम होती हैं, प्रकृति और समय से गहरा तादात्म्य होता है, बोली और मिथकों के आधार पर उसकी गहरी पहचान बनती है। उसके शिल्प में आदिम–गंध रची–बसी होती है, जिसे सुनकर तुरन्त पता चल जाता है– **'रामधई जेई आये।'**

लोकोक्तियों के पौराणिक या ऐतिहासिक चरित्र उसके अपने मिथक हैं, जैसे'– **'राजा भोज भरम में भूले, घर–घर हैं जे मटया चूले।'** इस लोकाक्ति में एक संक्षिप्त कथा समाई हुई है। यह तो एक संकेत मात्र है।

लोक की गहरी रचनात्मक आसक्ति ने उसे हर चीज का नाम देने को अभिप्रेरित किया है। बुंदेली में ऐसे सैकड़ों शब्द मिलेंगे, जिनका हिन्दी या अंग्रेजी पर्यायवाची नहीं हैं।

बुन्देली में लोकोक्ति को 'अहाने' कहते हैं। कहावत का ठीक और सटीक अर्थ है– कथा–वत। ऐसी उक्ति जो एक लघु कथा के समान हो, जैसे–

इक तो बड़ों–बड़ों में नाव, दूसर बीच गैल में गांव।
ऊपै भये पईसन सें हीन, दद्दा हम पै विपदा तीन।।

इस प्रकार की सांकेतिक लोकोक्तियों में कोई लघु कथा समाई रहती है। ये तो उस कहानी के संकेत मात्र हैं।

बुंदेली में कहावत को 'कहनात' या 'कानात' भी कहा जाता है। इसमें कथा मात्र का संकेत होता है। बुंदेलखण्ड में ऐसे अनेक अहाने प्रचलित हैं, जो मनोरंजक और हास्य प्रधान हैं। कभी किसी भोले–भाले व्यक्ति को प्रायः कुछ चंचल लोग अहाने कह–कहकर ठग लेते हैं। किसी भोले व्यक्ति को बारात के आनंदमय वातावरण से वंचित करके हल के श्रम–साध्य कार्य में लगा देते हैं। एक चालाक व्यक्ति, सीधे–सादे व्यक्ति से कहता है– क्यों भाई **'मुसर–मुसर हर हांकौ कै मुश्किल काम बरातें जैव'** सुनकर वह भोला आदमी कह उठता है। भइया! हम तो धीरे–धीरे हल ही हाँकते रहेंगे।

इसी प्रकार एक भोले व्यक्ति से सत्तू छीनकर उसे धान पकड़ा देते हैं। एक चालाक व्यक्ति के हाथ में सत्तू और धान का भरा कटोरा है। वह धान का कटोरा किसी दूसरे को देकर सत्तू का उपभोग स्वयं करना चाहता है। देखो भाई मेरे पास सत्तू और धान के कटोरे हैं, वह उन दोनों की विशेषताएँ बताता है–

सत्तू मन भत्तू जब घोरे तब खाये,
धान बिचारी चट्ट कूटी पट्ट खाई।

भोला आदमी कहन मात्र से ठगकर कह उठता है– भाई साहब आप तो हमें ध ाान ही दे दीजिएगा। मैं उसे कूटकर खा लूँगा। मैं सत्तू के पचड़े में नहीं पड़ना चाहता।

इस प्रकार के अनेक अहाने बुंदेलखण्ड के वयोवृद्ध लोगों की जबान पर हैं, जो मनोरंजक और शिक्षा प्रद है। प्रायः बुंदेलखण्ड में यह अहाना मनोरंजन के लिए कहा जाता है–

एक फूटी मौवन के खाये सैं, एक फूटी समदी के आये सैं।

इस कानात में भी एक लघुकथा समाई हुई है। इस प्रकार के अनेक अहाने यहाँ कहे–सुने जाते हैं, जैसे –

कोउ कये कउं की, मदउ कयें मउ की।

× × ×

अपनी–अपनी परी आन, को जाबैं कुरयानें कान।

× × ×

कौंन–कौंन खौं धरिये नांव, कथरी औढ़ें सबरों गांव।

× × ×

नैंकें पूनें खालये पान, दांत निपोरैं कड़ गये प्रान।

× × ×

नाउ–नाउ की बरात, टिपारों को लै चले।

× × ×

नौं मैंदा की कै ठनकौं लांगन।

कहावत और लोकोक्ति की तरह बुन्देलखण्ड में तीन अन्य विधाएँ प्रचलित हैं और वे हैं– पहेली, अटका और लटका। पहेली के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं–

नौचे बार फटाये कपड़ा, मोती लये उतार।
ऐसी जा विपदा परी, नंगी कर दई नार।।

इस पहेली का उत्तर है–मक्का का भुट्टा।

दूसरी पहेली देखिये। इस प्रकार की पहेलियों को सुलझाने में बहुत मानसिक व्यायाम करना पड़ता है–

दो पग चलें चार लटकाएं, चला जाए मन बैना।
ऐरी सखी मैं तोसों पूँछू, तीन सीस दो नैना।

यह एक विचित्र पहेली है। इसमें श्रवण कुमार का काँवर में बैठाकर अपने अंधे माता–पिता को तीर्थाटन को ले जाने का दृश्य है। दो पग चलें अर्थात् काँवर को कंधे पर रखकर श्रवण कुमार चल रहे हैं। चार लटकाये– अंधे माता–पिता के चार पांव नीचे लटक रहे हैं। तीन सिर दो नैंना अर्थात् माता–पिता और श्रवण कुमार के तीन सिर

हैं और श्रवण कुमार की केवल दो आँखें हैं, क्योंकि माता–पिता तो अंधे ही हैं।

तीसरी पहेली के लिए अपने मस्तिष्क पर अधिक जोर लगाना पड़ रहा है–

एक परी, एक खड़ी, एक छमाछम नाच रही।

इस पहेली का उत्तर कढ़ाही में पकने वाली पूड़ी है। कढ़ाही में एक पूड़ी सिकने के बाद खड़ी रहती है। एक उसी में पड़ी रहती है और एक कढ़ाही में पड़ी–पड़ी नाचती रहती है। इसे सुलझाने के लिए बहुत सोचना पड़ता है। चौथी पहेली बड़े ही ध्यान से सुनिए –

चार नरम चार गरम, चार बालूसाई।
जो ई किसा खौं बताय, उयै पाव भर मिठाई।

इसका उत्तर सर्दी, गर्मी और बरसात ये तीन ऋतुएँ हैं। पांचवी पहेली देखिए–

तनक सी मन्नक सी, हरदी कैसी गाँठ।
चटाक चूमा लै गई, हाय मोरी दैया।।

इस पहेली का अर्थ है, एक छोटी सी पीले रंग की बर्र जिसके काटने से कष्ट होता है।

अटका– यह एक तरह से पहेली जैसा ही होता है। पूछने पर पहले तो आदमी अटक कर रह जाता है। इसी कारण से इसका नाम 'अटका' रखा गया है। थोड़े से अटका के खुलते ही सारा प्रसंग स्पष्ट हो जाता है। 'अटका' शब्द का अर्थ है अटक जाना या रुक जाना अथवा अटकल लगाना। इसका अर्थ है अनुमानतः किसी गुत्थी को सुलझाना। प्रायः ग्राम के अशिक्षित लोगों को इस प्रकार के अनेक अटका याद रहते हैं। जो शिक्षित लोगों को इस प्रकार पूछकर अपना ज्ञान प्रदर्शित करते हैं। यह एक प्रकार का बुद्धि परीक्षण है। उदाहरण स्वरूप कुछ अटका यहाँ प्रस्तुत हैं, जिन्हें सुलझाने के लिए बहुत मानसिक व्यायाम करना पड़ता है। इनकी भाषा तो अस्पष्ट और उलझी हुई सी बुंदेली होती है। जो सुनने में अट–पटी और विपरीत सी दिखाई देती है, किन्तु वे होते हैं सार्थक और प्रसंगानुकूल। कुछ अटका विचारणीय हैं–

राम की बैंन, भरत की सारी।
भयो न ब्याव रही न क्वारी।

यह अटका सुनने में बहुत अटपटा सा लगता है। जरा सोचिए कि राम की बहन, भरत की सारी कैसे हो सकती है, जबकि राम और भरत भाई–भाई हैं। ये बात बिलकुल

उल्टी सी लगती है। इसी प्रकार विवाह हुआ नहीं और अविवाहित भी नहीं। भला सोचिए कि ये दोनों बातें एक साथ कैसे हो सकती हैं। सुनते ही लोग अटक कर रह जाते हैं, किन्तु गंभीरता से चिंतन करने पर राम के निर्वासन और अयोध्या के राजसिंहासन का प्रसंग उभर कर सामने आ जाता है और अटका अपने आप सार्थक हो जाता है। राम की बैन अर्थात् राम के वचन भरत ने स्वीकार कर लिए। भयो न ब्याव अर्थात् राम का राजतिलक भी नहीं हुआ और राजसिंहासन खाली भी नहीं रहा। उस पर राम की खड़ाऊँ सुशोभित हो रही थी। मस्तिष्क पर जरा जोर लगाने पर समस्त सार्थक प्रसंग सामने आ गया। इस प्रकार के अटकों से बुद्धि परीक्षण में सहयोग प्राप्त होता है। एक दूसरा विचारणीय अटका प्रस्तुत है –

मड़वा गिर गओ दूला मर गओ, दुल्हिन भई अहवाती।
गाँव की सखियाँ गारी गाबैं, सुन–सुन आबैं हाँसी।।

उपरोक्त अटका में सारी स्थितिया। विपरीत सी प्रतीत हो रही हैं। किन्तु बातें हैं सब सार्थक। यह राजा जनक के यहाँ धनुष यज्ञ का प्रसंग है। राम के धनुष तोड़ते ही मण्डप ध्वस्त हो गया। अनेक राजा और राजकुमार दूल्हा बनने की इच्छा से रंगभूमि में उपस्थित हुए थे किन्तु उन सबकीं इच्छाएँ मर चुकी थीं। और सीता राम के गले में वरमाला डालकर अहवाती हो गईं। इस मनोरम दृश्य को देखकर जनकपुर की सखियाँ मंगल गीतों का गायन करने लगीं। इस मंगलमय प्रसंग को सुनकर अति प्रसन्नता होती है। अब एक और अटका देखिए–

चार जीव, निरजीव पहरूआ,
चोरी हो गई चीज
बड़ी चोर न भीतर आया

सारी स्थितियां विपरीत हैं। चोर सजीव और पहरेदार तो निर्जीव हैं। चोर अंदर प्रवेश नहीं करता और बहुत बड़ी चीज चुराकर ले जाता है। ये कितने आश्चर्य की बात है। सोचने पर सीताहरण का दृश्य सामने प्रकट हो जाता है। रावण चोर सजीव था और लक्ष्मण रेखा निर्जीव थी। रावण को झोपड़ी में प्रवेश नहीं करना पड़ा। भिक्षा के बहाने सीता को बाहर बुलाकर उठा कर ले गया। इससे बड़ी चोरी और क्या हो सकती है? अटकों में अटकी हुई इस प्रकार की अनेक गुत्थियों को सुलझाना पड़ता है, जिससे बुद्धि अधिक प्रखर हो जाती है। कुछ और इसी तरह के अटके ग्रामों के वयोवृद्ध लोगों की जबान पर हैं, जो नवयुवकों से पूछ–पूछ कर बौद्धिक परिपक्वता का परिचय देते हैं। एक और अटका पर विचार कीजिए–

भिक्क ने मारी लात और वे रिसा चली।

सुनने में यह अटका बे 'सिर पैर का दिखाई देता है। लात मारकर रिसानें की बात समझ में नहीं आती है। गंभीरता से सोचने पर भृगु ऋषि का प्रसंग सामने आ जाता है। यह एक पौराणिक प्रसंग है। सबसे बड़े देवता की पुष्टि करने के लिए भृगु ऋषि सोते हुए विष्णु के वक्ष स्थल पर पद प्रहार करते हैं। किन्तु विष्णु रूष्ट न होकर उनके चरण चाँपने लगते हैं, जिससे विष्णु जी की महानता सिद्ध होती है। इस प्रसंग को लेते हुए कविवर रहीम ने एक दोहा लिखा है–

छमा बड़न को चाहिए, छोटन को उत्पात।
का रहीम हरि कौ घट्यो, जो भृगु मारी लात।।

एक और अटका देखने योग्य है–

ऐ सखि चल वहाँ, बरसे हैं घनघोर बूंद नहीं जहाँ।
ऐ सखि चल वहाँ, लगा है दरबार बात नहीं जहाँ।

इस अटका की दोनों पंक्तियों के अलग–अलग अर्थ हैं। प्रथम पंक्ति में कहा गया है कि इन्द्र ने क्रोधित होकर घनघोर जल–वृष्टि की, किन्तु गोवर्धन की छाया में किसी पर बूँद नहीं गिर पाई थी। दूसरी पंक्ति में द्रोपदी के चीर हरण का संकेत है। भरे दरबार में चीर हरण होता रहा, किन्तु कोई कुछ बोल नहीं पाया।

दंदी के दंद भओ, बेदंद की हँसी।
बिना बाप लरका भओ, मताई घरे न हती।।

इस अटका में लव–कुश के जन्म की कथा का संकेत है। रावण के अपहरण से लोकोपवाद के कारण राम ने सीता का परित्याग कर दिया था। फिर भी घनघोर जंगल के बीच बाल्मीकि के आश्रम में लव का जन्म हुआ था। इसी कारण अटका में 'बिना बाप लरका भओ, मताई घरे न हती' कहा गया है।

गेर–फेर बारी लगी, भीतर बिड़े ढोर।
ढोर–ढोर सबरे बँधे, खूटा लै गओ चोर।

हनुमान जी की पूंछ के घेरे में वानर सेना बंद है, किन्तु उस वानर सेना के बीच से अहिरावण राम और लक्ष्मण को ले गया था।

लटका– यह एक मुहावरा है। किसी काम में लटका झटका देना या हीला

बहाना करना ही लटका है। इसमें अलंकारों और चमत्कारिक भाषा का सटीक प्रयोग का किया जाता है, जैसे–

वर मांगत वर पै गई, वर पायो तत्काल।
वर पाई बेवर हुई, पंडित करो विचार।।

इस दोहे में श्लेष अलंकार के माध्यम से कैकेयी के दशरथ जी से वरदान मांगने के प्रसंग को उभारा गया है।

तुला–तुला को बैर है, कुंभ खोल गओ चोर।
वृष राम पौंचाइयों मोखो डारे दोर।

इसमें तुला राशि राम, रावण, कुंभ राशि सीता और वृष राशि हनुमान का चमत्कारिक प्रयोग का एक लटका स्वरूप है।

लोकोक्तियों का महत्त्व और उनकी उपयोगिता

इनसे भाषा की व्यंजना शक्ति बढ़ जाती है।

ये भाषा को सौन्दर्य प्रदान करती हैं।

ये भाषा को सरल, सहज और रोचक बनाती हैं।

इनसे विचार अभिव्यक्ति में सहयोग प्राप्त होता है।

इनसे भाषा में प्रवाह बना रहता है।

विशेषताएँ

संक्षिप्तता– इनमें कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक भाव समाहित होते हैं। कहावतें गागर में सागर होती हैं। जैसे– अंत भला सो सब भला।

लय और गति– कुछ ऐसी लोकोक्तियाँ हैं जो लय और गति के निर्वाह के साथ तुकांत भी होती है, जिन्हें शीघ्र ही स्मरण किया जा सकता है, जैसे –

उत्तम खेती, मध्यम वान।
अधम चाकरी, भीख निदान।।

दोहा या चौपाइयों की कुछ पंक्तियाँ लोकोक्ति का रूप धारण कर लेती हैं, जैसे–

प्राण जाए पर वचन न जाई।
अब पछताए होत का चिड़िया चुग गई खेत।

सत्यता और अनुभव– लोकोक्तियाँ अनुभवजन्य ज्ञान के सूत्र हैं। इनके पीछे दीर्घकालिक अनुभव और सत्य होता है, जैसे –

जाके पाँव न फटीं बिमाई, वौ का जाने पीर पराई।

घरेलू भाषा का प्रयोग– इनके रचयिता कोई साहित्यकार नहीं होते। ये सामान्य अनुभवी लोगों के कथन मात्र हैं, जिन्होंने जो कुछ देखा–सुना और अनुभव किया, उसे सीधी सादी भाषा में व्यक्त कर दिया और वह कहावत बन गई। इन में साहित्यिकता का अभाव होता है। इनका प्रमुख स्रोत लोक भाषाएँ हैं। कुछ कहावतें अभद्र होती हैं जिनमें बोलचाल की भाषा का प्रयोग होता है, जैसे –

जोंन पातर में खाव, ओई में छेद करो।

अनाम रचयिता– इनके रचनाकार अनाम होते हैं। कोई भी अनुभवी व्यक्ति अपने विचारों को कहावतों के रूप में व्यक्त कर देता है और वे समाज की मूल्यवान निधि ा बन जाती है। लोग उन सबका समय पर उपयोग कर लेते हैं। जैसे –

हाथ के कंकन खौं का आरसी
ऊँची दुकान, फीकौ पकवान
नाँच न आबै, आँगन टेड़ों आदि।

लोकप्रियता– लोकप्रियता ही लोकोक्ति का प्रमुख गुण है। प्रायः कोई लोकप्रिय कथन ही लोकोक्ति का रूप धारण कर लेता है। लोकप्रियता के कारण ही लोग इनका स्मरण रखते हैं और समय पर उनका उपयोग करते हैं। जैसे –

आसमान सें गिरो उर खजूर में अटक गओ।
कालौ अक्षर भैंस बिरोबर। आदि

लोकोक्तियों/कहावतों के प्रकार

लोक नीति, लोक व्यवहार (सामाजिक व्यवहार), लोक दर्शन (धर्म, जीवन–दर्शन, भाग्यवाद), लोक स्वास्थ्य (स्वास्थ्य एवं आहार), कृषि एवं पशुलक्षण, लोक ज्योतिष एवं ऋतु ज्ञान, लोक वाणिज्य (अर्थ एवं वाणिज्य), लोक विश्वास,ऐतिहासिक, जाति विषयक, कहावतों की कहानियाँ।

समानता और अंतर

दोनों ही गंभीर और व्यापक अनुभव की उपज हैं।

दोनों का अर्थ विलक्षण और अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। अर्थ अभिधात्मक और साधारण नहीं होता।

दोनों की भाषा शैली सरस और प्रवाहपूर्ण होती है।

दोनों में प्रयुक्त शब्दों के स्थान पर पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग नहीं किया जा सकता।

दोनों का प्रयोग किसी अन्य अर्थ या भाव के रूप में नहीं किया जा सकता।

इनका अर्थ प्रायः रूढ़ होता है।

दोनों की सार्थकता प्रयोग के बाद ही सिद्ध होती है।

मुहावरे

– ये केवल वाक्यांश हैं।

– ये स्वतंत्र प्रयोग नहीं हैं।

– मुहावरों में उद्‌देश्य विधेय का पूर्ण विधान नहीं होता। अर्थ स्पष्टता के लिए यह वाक्य के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

– इनका प्रयोग वाक्य में सौन्दर्य पुष्टि के और चमत्कार के लिए किया जाता है।

– ये क्रिया मूलक होते हैं।

– मुहावरे गद्य का भाग होते हैं। ये लक्षणार्थक होते हैं।

– इनमें लक्ष्यार्थ की प्रधानता होती है।

– इनके अंत में प्रायः 'ना' होता है।

– मुहावरे विकारी शब्द हैं।

कहावतें

– ये संपूर्ण वाक्य हैं।

– ये स्वतंत्र प्रयोग हैं।

– कहावत में उद्‌देश्य और विधेय होता है, इसका प्रयोग स्वतंत्र किया जाता है।

– इनका प्रयोग कथन में किया जाता है।

– ये सत्य पर आधारित होती हैं।

– ये गद्य और पद्य दोनों में ही प्राप्त होती हैं और सार्थक होती हैं।

– ये अत्यंत सहज वाच्यार्थ पूर्ण होती हैं।

– इनके अंत में प्रायः 'ना' नहीं होता है।

– ये अविकारी होती हैं।

बुन्देलखण्ड में कहावतें प्रायः निम्न प्रकार की प्रयुक्त की जाती हैं –

कृषि और वर्षा पर आधारित।

ज्योतिष, ऋतुज्ञान और पशु लक्षण आधारित

लोक नीति विषयक

व्यवहार आधारित।

दर्शन (धर्म, जीवन–दर्शन, भाग्य) आधारित

स्वास्थ्य और आहार आधारित

वाणिज्य आधारित

विश्वास आधारित

ऐतिहासिक संदर्भ आधारित

कहावतों की कहानियाँ

उपर्युक्त बिन्दुओं के आधार पर बुंदेलखण्ड की कहावतों का अध्ययन विस्तार पूर्वक किया जा सकता है –

कृषि और वर्षा पर आधारित

बुन्देलखण्ड का प्रमुख व्यवसाय कृषि है। क्षेत्र की 90 प्रतिशत जनता कृषि कार्य में संलग्न है। इस क्षेत्र की कृषि वर्षा पर आधारित है। जिस वर्ष पर्याप्त वर्षा हो जाती है, उस वर्ष दोनों फसलों का उत्पादन अपने आप बढ़ जाता है। वर्षा के अभाव में फसलों की दशा दीन होती है। हमारे पूर्वजों ने कृषि को ही श्रेष्ठ व्यवसाय निरूपित किया है और वे लगातार कृषि की उन्नति के लिए चिंतन करते आये हैं। उनका चिंतन और अनुभव आज भी कहावतों के रूप में सुरक्षित है। बुन्देलखण्ड का कृषक समुदाय उन कहावतों का आश्रय लेकर कृषि कार्य में संलग्न है। भले ही आज की कृषि यांत्रिकी

और रासायनिक खादों पर आधारित हो गई हैं फिर भी पूर्वजों की अनुभव–जन्य बुंदेली की कृषि कहावतें उपयोगी सिद्ध हो रही हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण कृषि कहावतों के उदाहरण प्रस्तुत हैं–

उत्तम खेती मध्यम वान,
अधम चाकरी भीख निदान।

हमारे पूर्वजों की दृष्टि में कृषि श्रेष्ठ व्यवसाय रहा है। उनकी दृष्टि में वाणिज्य मध्यम और नौकरी अधम और निन्दनीय रही है। हालांकि आज के समय में समाज में नौकरी को अधिक महत्त्व दिया जा रहा है –

झटपट खेती, झटपट न्याय।
झटपट कर कन्या कौ व्याव।।

समय आने पर तुरन्त ही खेती कर लेना उचित है। तभी समुचित लाभ प्राप्त हो सकता है। उसी प्रकार न्याय और कन्या के विवाह में शीघ्रता आवश्यक है–

डार कौ चूकौ बंदरा,
अषाढ़ कौ चूकौ किसान,
कितऊँ कौ नई रत।

आषाढ़ माह से वर्षा का शुभारंभ हो जाता है। पानी बरसते ही कृषि कार्य प्रारंभ हो जाता है। जो कृषक आषाढ़ लगने पर कृषि कार्य नहीं कर पाते, उन्हें पछताना पड़ता है। जिस प्रकार डाल से चूके हुए बंदर को टोली से निकाल दिया जाता है।

धीरें बंज, उकताँय खेती।

प्रायः व्यापार मे सफलता धैर्य से प्राप्त होती है, किन्तु समय आने पर कृषि कार्य शीघ्रता पूर्वक करना लाभकारी होता है।

खेती धन की नाश, धनी न हुइयै पास।

जो व्यक्ति खेती अपने हाथ से करता है अथवा अपनी निगरानी में कृषि कार्य सम्पन्न कराता है, उसे ही लाभ प्राप्त होता है। दूसरों के हाथ में खेती छोड़ने से हानि होती है।

बटिया खेती, साँट सगाई।
जामें नफा कौन ने पाई।।

प्रायः साझेदारी की खेती हानिकारक और असफल होती है। स्वार्थ भावना के कारण अनबन हो जाती है। जिस प्रकार आँटे–साँटे के विवाह असफल रहते हैं। उनमें तालमेल नहीं हो पाता है। उसी प्रकार साझेदारी की खेती हानिकारक होती है।

खेती तौ थोरी करों, मेहनत करो सिवाय।
राम चहै वा मनुस खौं, टोटौ कभऊँ न आय।।

जो व्यक्ति थोड़ी सी ही खेती करता है, किन्तु परिश्रम अधिक करता है। ऐसे व्यक्ति को कभी नुकसान नहीं हो पाता।

जरयाने उर काँस में, खेत करो जिन कोय।
बैला दोऊ बेंचकैं, करौ नौकरी सोय।।

कंटीली झाड़ियों और काँस से भरी हुई भूमि पर खेती करना ठीक नहीं है। उस भूमि में उत्पादन नहीं होगा, बल्कि हानि ही होगी। उस भूमि पर खेती करने से अच्छा यही है कि अपने दोनों बैल बेचकर परदेश में नौकरी करने लगें।

अषाढ़ करी गोंतरी, सावन करीं अथइयाँ
क्वाँर मांस में खोजत फिरबैं, गरूं कौन तलइयाँ।।

जो लोग आषाढ़ लगने पर कृषि कार्य में संलग्न नहीं होते, बल्कि इधर–उधर घूम फिर कर समय काटते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति समय निकल जाने पर पछताते ही रहते हैं।

आलू बोबै अँधेरे पाख, खेत में डारैं घूरा राख।
समय–समय पर करें सिंचाई, तब आलू उपजे मन भाई।।

आलू को कृष्ण पक्ष में बोना चाहिए। फिर खेत में गोबर की खाद और राख डालकर, समय–समय पर सिंचाई करना चाहिए। तब कहीं आलू का मनचाहा और पर्याप्त उत्पादन होगा।

खेती पाती वीनती, औ घोड़े कौ तंग।
अपने हाथ सँभालिए, लाख लोग हों संग।।

खेती, पत्र, विनती और घोड़े के तंग को सदैव अपने हाथ से सँभालना ही उचित है। इनमें से खेती ही प्रमुख है। जो खेती को अपने हाथ से संभालता है, उसको ही विशेष लाभ मिल पाता है।

पर हत बंज, संदेशन खेती

दूसरे के हाथ से कराया हुआ व्यापार और संदेशों से की गई खेती, कभी सफल नहीं हो पाती है।

ठाँढ़ी खेती गाभिन गाय।
तब जानौं जब मौं में आय।

खेत में खड़ी फसल और गाभिन गाय का सुख तभी जानिए, जब उनका परिणाम सामने आ जाये। खेत का अन्न और गाय का दूध मुँह में आने पर सुख प्रदान करता है।

तिरिया रोबैं पुरूष बिना।
खेती रोबैं मेह बिना।।

खेती के लिए पानी आवश्यक है, पानी के बिना खेती निरर्थक होती है। जिस प्रकार पति के बिना स्त्री रोती है, उसी प्रकार पानी के बिना खेती रोती है।

खेती उनकी कहें, जो हल अपने हाँत गहें।
आदी खेती उनकी कहें, जो नित हल के संग रहें।
बयें बीज उपजें नईं तहाँ, जो पूछें कै हल है कहाँ।

जो स्वयं हल चलाकर खेती करते हैं, उन्हें खेती का पूरा लाभ मिलता है। जो खेत पर रहकर दूसरों से किसानी कराते हैं, उन्हें खेती का आधा लाभ मिलता है। किन्तु जो अपनी खेती से अनजाने रहते हैं, उनकी खेती निष्फल रहती है।

भूमि न भुमियां छोड़िये, बड़ौ भूमि कौ बास।
भूमि विहीनी बेल जो, पल में होत बिनास।।

अपनी जमीन नहीं छोड़ना चाहिए। भूमि पर निवास करना महानता है। भूमि को छोड़ने वाली बेल का शीघ्र ही नाश हो जाता है।

गेंबड़े खेती, मेड़े महुआ।
ऐसौ है तौ कौन रखउआ।।

गाँव के निकट खेती और मेंड पर खड़े हुए महुए की रक्षा कौन कर सकता है?

नित नई खेती दूजै गाय, जो न देखै ऊकी जाय।
खेती करें रात घर सोबैं, काटैं चोर मूँढ़ धर रोबैं।।

नित्य की खेती और गाय को जो स्वयं नहीं देखते हैं, उसकी खेती और गाय चली जाती है। जो खेती करके रात्रि में घर पर सोते हैं और उसकी रखवाली नहीं करते, उसकी खेती चोर काट ले जाते हैं और मालिक को सिर पीट–पीटकर पछताना पड़ता है। अतः अपनी खेती और गौ सेवा स्वयं ही करना चाहिए। दूसरों के भरोसे छोड़ना उचित नहीं है।

सन घनों वन बेगरो, मेंढक फाँदे ज्वार।
पैंड़–पैंड़ पै बाजरा करे दलुद्दर पार।।

सन की बुआई घनी, कपास को कुछ अंतर पर और ज्वार मेंढ़क के कूदने के फासले की तरह बोने से उत्पादन क्षमता बढ़ जाती है और दरिद्रता अपने आप दूर हो जाती है।

सावन में ससरारैं रये, पूस में खाए पुआ।
चैत में छैला पूँछत डोलें, तुमरें काका हुआ।।

जो कृषक सावन का महीना ससुराल में रहकर व्यतीत कर देता है और पूस के महीने में इधर–उधर विचरण करके मौज उड़ाता फिरे, उसे खेती में कोई लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। उसे अन्य कृषकों के उत्पादन के समाचार को सुनकर पछताना पड़ता है।

पूस न बइए, पीस खइये

गेहूँ की बुआई पूस माह के पूर्व हो जाना चाहिए। पूस में बौनी करने में कोई लाभ नहीं है। इससे अच्छा तो गेहूँ को पीसकर खा लेना उचित है।

देखत के हम ऊजरे, ऊसर मोरौ नाँव।
मोरे भरोसे जिन रहों, काड़ बिरानों खांव।।

ऊसर भूमि अनुपजाऊ होती है। देखने में ऐसी भूमि उजली दिखाई देती है। ऊसर भूमि पर खेती करने वाले किसान को घाटा हो जाता है और उसे ऋण के बल पर समय काटना पड़ता है।

उसी तरह अनुपजाऊ भूमि की एक किस्म पडुआ भी है। मानो वह स्वयं कह रही है–

देखत के हम खसखसे, पडुआ मोरौ नाँव।
मोरे भरोसे जिन रहों, काड़ बिरानों खाव।।

कच्चा खेत न जोतै कोई।
नईं तौ बीज न अकुरा होई।।

कच्चे खेत की जुताई नहीं करना चाहिए अन्यथा बीज अंकुरित नहीं हो पाता है। कच्चे खेत से तात्पर्य है खेती की पूर्ण तैयारी।

कातिक मास रात हर जोतौ।
टाँग पसारें घर मत सोतौ।।

कार्तिक के माह में कृषक को रात–दिन परिश्रम करना चाहिए। इस माह में सुख की नींद सोना उचित नहीं है।

खेती उत्तमकाज है, इहि सम और न होय।
खाबे को सबखौं मिलें, खेती कीजे सोय।।

खेती करना श्रेष्ठ कार्य है। इससे बढ़कर कोई दूसरा धंधा नहीं है। जो मन लगाकर खेती करते हैं, उनका भरण–पोषण भली भाँति हो जाता है। वे अभाव ग्रस्त नहीं रह पाते हैं।

घनों बौका उर गैरों जोता, कभऊँ हारत नइयाँ।

घना बोने वाला और गहरी जुताई करने वाला कभी असफल नहीं हो पाता। खेत में ज्यादा बीज डालना कोई बुरा नहीं है। कुछ दाने मर जाते हैं और कुछ खराब निकल जाते हैं, फिर भी फसल अच्छी उग आती है। गहरी जुताई खेती के लिए लाभकारी होती है।

जादाँ पढ़े सो घर सैं गये।
थोरौ पढ़े सो हर सैं गये।।

गाँवों के लोग अधिक पढ़–लिख जाने पर नौकरी करने के लिए घर छोड़कर बाहर चले जाते हैं। थोड़ा बहुत पढ़ा–लिखा ग्रामीण युवक अपने पैतृक व्यवसाय खेती करने में लज्जा का अनुभव करने लगता है।

ससुरें हर फार कौ ताव, बहुऐं खँगवारे को ताव।

सबको अपने–अपने कार्य की अनिवार्यता का ध्यान रहता है। प्रायः परिवार में ससुर अपनी खेती किसानी को प्राथमिकता देते हैं, किन्तु घर की बहुओं को अपने जेवर की चिन्ता रहती हैं।

आन गाँव की खेती और वन गाँव कौ बंज नईं होत।

दूसरे गाँव की खेती और जंगली गाँव में रहकर व्यापार में सफलता प्राप्त नहीं हो सकती।

जो हर जोतै खेती बाकी, और नई तौ जाकी ताकी।

जो लोग अपनी खेती अपने हाथ से करते अथवा करवाते हैं, उन्हीं को खेती से विशेष लाभ प्राप्त होता है। जो लोग अपनी खेती दूसरों के भरोसे पर छोड़ देते हैं, उनकी खेती धीरे–धीरे उनके हाथ से चली जाती है।

बारी खेतैं खाय, तौ विधि में कहा बताय।

खेत की रक्षा के लिये लगाई गई बारी ही यदि खेत को खाने लगे, तो इसमें किसी का क्या वश है।

यदि रक्षक ही भक्षक बन जाये तो इसमें किसका दोष है?

अरे बिजूका खेत के, काहे अपजस लेत।
आप न खेतैं खात है, औरें खान न देत।।

अरे खेत के बिजूके! तुम अपने सिर पर अपयश क्यों ले रहे हो। खेत को न तो तुम स्वयं खाते हो और न दूसरों को खाने देते हो। खेतों में कपड़े पहनाकर पुरूषाकृति का एक पुतला तैयार करके खड़ा किया जाता है। उसे रखवाला समझकर पशु–पक्षी खेत में प्रवेश नहीं कर पाते हैं।

करे न खेती परे न फंद।
घर–घर डोलें मूसर चंद।।

जो कृषि कार्य में व्यस्त न रहकर अपना उत्तरदायित्व नहीं संभालते। वे मूर्खों की तरह इधर–उधर भटकते फिरते हैं। ऐसे अकर्मण्य लोगों का समाज में कोई स्थान नहीं है।

खेती कर आलस करें, भीख माँग सुस्ताय।
सत्यानास की का चली, अठ्यानास हो जाय।।

खेती करने वाला किसान यदि आलस्य करता है और भीख मांगने वाला आराम करता है, तो उसका सर्वनाश हो जाता है। परिश्रमी व्यक्ति को ही कृषि में लाभ हो पाता है।

खेती विनती पत्री, और खुजावन खाज।
घोड़ा आप पलानियों, जो प्रिय चाहौ राज।।

हे प्रिय! यदि आप सुख प्राप्त करना चाहते हो तो खेती, विनती, पत्री, खाज खुजलाना और घोड़े को स्वयं कसकर तैयार रखिएगा।

गेवड़े खेती हमनें करी, कर धोबिन सों हेत।
अपनों करो कौंन सें कइये, चरो गदन नें खेत।।

गाँव के समीप कभी खेती नहीं करना चाहिए। गाँव के पशु खेती उजाड़ देते है। धोबिन से प्रेम करना ठीक नहीं है। उसके गधे खेती को नष्ट कर देते हैं।

जाकौ ऊँचौ बैठबौ, जाकौ खेत निचान।
ताकौ बैरी का करें, जाकौ मीत दिवान।।

जिस व्यक्ति का उच्चस्तरीय लोगों के साथ बैठना हो, जिसका खेत नीचा हो, मंत्री जिसका मित्र हो, उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है।

बाढ़ै पूत पिता के धरमा।
खेती उपजैं अपनें करमा।।

पुत्र–पिता के धर्म से बढ़ता है और खेती परिश्रम से उपजती है।

बड़ैन की सौंज खेती करी।
भुस बाँटतन अबेरा परी।।

खेती में साझेदारी करना उचित नहीं है। बड़ों के साथ खेती में साझेदारी करने से भूसा बाँटने में परेशानी होती है।

बिन बैलन खेती करी, बिन भैयन के रार।
बिना दुलैया घर करैं, चौदह साख लबार।।

बिना बैलों के खेती करने वाला, बिना भाइयों के लड़ाई ठानने वाला और बिना पत्नी के घर बसाने वाला चौदह पीढ़ी तक मूर्ख रहता है।

बैरी कौ मत मानबौ, उर तिरिया की सीख।
क्वाँर करें हर जोतनी, तीनऊँ मागैं भीख।।

शत्रु की सलाह मानने वाला, पत्नी की शिक्षा पर चलने वाला और क्वाँर में हल जोतने वाले सदैव असफल रहते हैं और उन्हें भीख माँगनी पड़ती है।

ओई की रोटी, ओई की दार।
ओई की टटिया लगी दुआर।।

कृषकों के लिए चने की खेती बहुत लाभकारी होती है। उसके अनेक उपयोग हैं। चने की रोटी बनाकर चने की दाल के साथ खाई जा सकती हैं। चने के भूसे की टटिया बनाकर दरवाजे पर लगाई जा सकती है।

उकतायें खेती, धिरयायें बंज।

कृषि कार्य को बड़ी ही तत्परता से समय पर करने पर ही लाभ होता है। व्यापार में लाभ प्राप्त करने के लिए धैर्य धारण करना आवश्यक है। प्रायः अधीरता के कारण व्यापार में घाटा हो जाता है।

कयें खेत की सुनें खरयान की।

कथनी और करनी में अंतर। प्रायः कुछ लोग कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। उनकी बातों पर विश्वास नहीं किया जा सकता है।

करें न खेती परे न फंद, घर–घर डोलें मूसर चंद।

जो व्यक्ति परिश्रम से डरकर कृषि कार्य नहीं करता, वह पागल बना हुआ इधर–उधर भटकता रहता है।

लाल बरसें ताल भरें, कारे बरसें पारें।
जब उठे धुआँ धारे, तब आये नदी नारे।

आसमान में जब काले और लाल बादल घुमड़ते हैं, तब जरा भी वर्षा नहीं होती है। धुआँ धारे बादलों से ही घनघोर जल–वृष्टि होती है।

कुआँ की माटी कुँअई में लगत।

लोगों को कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होता है। आप जितना करेंगे, आपको उतना ही लाभ होगा।

कुठिया में गुर फोरबो।

गोपनीय ढंग से षड्यंत्र रचना।

कुदई परस कैं मठा खौं गये।

किसी कार्य को सुनियोजित ढंग से नहीं करना, जिसके कारण कार्य अपूर्ण रह जाता है।

कै खैहैं गेहूँ, कै रैहैं योंहूँ।'

लोग अपने व्यक्तित्व के अनुरूप ही कार्य करते हैं अथवा शांत ही बैठे रहते हैं।

कोदों में बिक गए।

थोड़े से प्रलोभन में अपना सिद्धांत खो बैठना।

खाईं गकरियां गाये गीत, जे चले चैतुआ मीत।

केवल स्वार्थ सिद्धि तक ही स्थिर रहना। स्वार्थ सिद्ध होते ही पीछा छोड़ देना।

गरब कौ बिरछा, कबहुँ नईं हरयाबैं।

घमंडी का प्रायः पतन ही होता है। उसे उन्नति के अवसर प्राप्त नहीं हो पाते हैं।

ग्यांन गरें फंस जात, जब घर कौ नाँज बड़ात।

विपन्नता में मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। संस्कृत में कहा भी गया है– *सर्वे गुणाः कांचनंआश्रयंते।*

गागर में नाज गमरियें राज।

छोटे लोगों को थोड़ी सी सुख–सुविधा मिलते ही घमण्ड हो जाता है।

घर कौ परसैया अंधियारी रात।

अवसर मिलने पर अपनों को लाभान्वित करना।

घर कौ भैया खाबे खौं ललाय।
बेड़िया कौ पड़ा औदेरी चर जाय।

अपने आत्मीय जन कष्ट–सहन करें और इधर–उधर के लोग गुलछर्रे उड़ायें। ये कहाँ तक न्याय संगत है?

घर की खेती, अपनी होती।

घर की सामग्री सर्व सुलभ होती है। उसका किसी भी समय उपयोग किया जा सकता है। इसी भाव से मिलती–जुलती एक कहावत और प्रचलित है– *'घर की मुरगी दार बिरोबर।'*

चार मईना आम खाये, चार मइना गुठली।
चार मइना इतै उतै, ऐसई साल उठली।

इस प्रकार की स्थिति प्रायः अकर्मण्य लोगों की होती है, जो व्यर्थ में इधर–उधर भटकते फिरते हैं।

जब दाँत हते सो चना नईं, जब चना हैं सो दाँत नईं।

परिस्थिति के अनुसार आनंद प्राप्त करने में व्यवधान उत्पन्न होना।

जब लों डलिया में भटा भाजी, सो पटेलन काकी।
बिक गये भटा भाजी, सो काछन की काछन।।

स्वार्थ सिद्धि तक सीमित सम्मान। विपन्न होते ही मनुष्य का मूल्य घट जाता है।

जरी बराई, करी लुगाई।

जिस प्रकार जले हुये गन्ने में रस नहीं होता, उसी प्रकार दूसरी की हुई औरत नीरस होती है।

जाँ–जाँ व्यास मठा खौं जाँय, भैंस पड़ा दोई मर जाँय।

अभागे की उपस्थिति अन्य लोगों को भी कष्टदायक हो जाती है।

जाके घर में सौ–सौ गाय, बौका छाँछ परायो खाय।

अपने को निर्दोष सिद्ध करने का प्रयास। सैकड़ों गायों का मालिक दूसरे के घर मठ्ठा माँगने क्यों जाएगा।

जात सुभाव न छूटें, लात उठाकैं मूतें।
जातीय गुण अलग दिखाई देते हैं। कुत्ते टाँग उठाकर पेशाब करते हैं।

जिमीं जोरू जोर की, जोर घटें सें और की।
शक्तिशाली लोग ही जमीन और पत्नी पर अधिकार कर पाते हैं।

जिन्दा हाती लाख कों, मरो सवा लाख को।
समय निकलने पर वस्तु के मूल्य में वृद्धि हो जाती है।

जिनई गुनन छोड़ी भेलसी, तेली मिलें परोस।
अभाग्य प्रायः आदमी का साथ नहीं छोड़ता।

जुनई कौ लचकों में पिट भरना आय।
पटी कौ लहंगा लहंगों में तन ढकना आय।
सामान्य ढंग से गरीबों का जीवन यापन करना।

जीके हात में लोई, ऊकौ सब कोई।
शक्तिशाली लोगों का सभी साथ देते हैं।

जीकी बंदरिया ओई सें नचत है।
लोग अपनी–अपनी कला में पारंगत होते हैं।

जी पातर में खाये ओई में छेद करो।
कृतघ्न अर्थात् किए हुए को भूल जाना।

जे घर में सुरती नहीं, नहीं पान सैं हेत।
वे घर ऐसे जायगें, ज्यों मूली कौ खेत।

जिसका सब कुछ है, उसी को अभाव–ग्रस्त रहना पड़ रहा है।

जैसों खैहों अन्न, वैसों बनहैं मन्न।
जैसों पीहों पानी, ऊसई बोलौ बानीं।
अन्न के आधार पर मनोभाव उत्पन्न होते हैं और पानी से बाणी निर्मित होती है।

दमड़ी की हंडी गई, कुत्ता की जात तो जान लई।
थोड़ी सी हानि होने पर वास्तविकता का ज्ञान होना।

दम भाई सो सगा भाई।
नशेबाज एक साथ मिल–जुलकर रहते हैं।

आग कौ छड़कौ लड़ैया, बिजली खौं डरात।
धोखा खाने वाले लोग सदैव सतर्क रहते हैं।

दार भात में मूसर चंद।
जबरन किसी के बीच घुसने का प्रयास।

चैत खाँईं गाँकरें, अषाढ़ खाये पुआ।
घर–घर पूछत फिर रये, तुमाये का हुआ।।
अकर्मण्य की सोचनीय स्थिति।

दूबरी उर दो अषाढ़, चरन गई दूर कौ हार।
अपने हाथ से अपने आप पर विपत्ति डाल लेना।

गांज बरें पूरन कौ लेखौ।
सर्वनाश के अवसर पर थोड़ी सी हानि की चिन्ता।

पूरो आसमान फटो थिंगरिया कन्नों लगाऊत।
सर्वनाश के समय सुधार होना कठिन है।

बरसें कऊं कड़े तो ओरछा हुन।
बुंदेलखण्ड की नदियों का पानी बेतवा में एकत्रित होकर ओरछा के समीप से प्रवाहित होता है।

बदरिया ऊनी है तो बरसें जरूर।
आसमान में घुमड़ने वाले बादल जलवृष्टि करते हैं।

बाढ़ें पूत पिता के करमें, खेती बाढ़ें अपनें करमें।
पिता के सत्कर्मों से पुत्र की वृद्धि होती है और कठिन परिश्रम करने से खेती में लाभ प्राप्त होता है।

बादर देख कें पोतला नईं फोरो जात।
फल की आशा में कर्म नहीं छोड़ा जाता।

वामन–बनिया पनया साँप, ना उनमें रिस न इनमें विष।
ब्राह्मण और वणिक क्रोध नहीं करते तथा पनया सर्प सदैव विष हीन होता है।

बाई जू खा लेंय तब कऊँ बायनों बांटें।
कंजूस से दान की आशा करना व्यर्थ है।

बेशर्म के पोंदन पै रूख जमो, बौकत मोंय छांयरों भओ।

बेशर्म व्यक्ति के लिए मान और अपमान में कोई अंतर नहीं होता। उसकी दृष्टि में दोनों बराबर हैं।

भरे तला में घोंघा प्यासौ।

संपन्नता में भी असंतुष्ट रहना।

भरोसे की भैंस, पड़ा बियानी।

आशा के विपरीत फल प्राप्त होना।

भैंस बिआये पड़ा के पोंद फटें।

किसी को पीर बढ़े और किसी दूसरे को कष्ट हो। यह तो मात्र प्रदर्शन है।

भैंस के सींग भैंस को भारी नई होत।

अपना बोझ आदमी स्वयं वहन कर लेता है।

मठा खौं जा रये, चपिया पाँछे दुकांये।

विपन्नता को छिपाने का प्रयास।

मकरी अपने जार खौं खालेत।

अपने हाथों से अपना सर्वनाश करना।

महुआ मेवा बेर कलेवा, गुलगुच बनीं मिठाई।

महुआ और बेर बुंदेलवासियों के मधुर व्यंजन हैं।

मिलन लगे दूध भात, बिसर गये माई बाप।

सुख–सुविधा मिलने पर लोग घर–परिवार भूल जाते हैं।

मुंडी गइया सदा कलोर।

ठिगने कद का आदमी नया सा दिखाई देता है।

मौआ से टपक रये।

अनायास उपलब्धि होना।

गगरिया में नाज, गमरियैं राज।

थोड़ी सी उपलब्धि पर घमण्ड करना।

सूकौ भोजन कुलरिनी, और कुलच्छनि नार।
पाँव पनइया है नहीं, नरकों के फल चार।
ये चारों कारण मनुष्य के लिए दुखदायक हैं।

हमाई बिलइया, हमईं से म्याऊँ।
सेवक स्वामी पर हावी होने को प्रयत्नशील हो।

हंडिया कौ नौंन जानबो।
आंतरिक स्थिति से परिचित होना।

ज्योतिष, ऋतुज्ञान एवं पशु लक्षण आधारित

हमारे पूर्वजों ने जो कुछ देखा, समझा और अनुभव किया, उसे कहावतों के रूप में समाज के समक्ष प्रस्तुत कर दिया। वे समस्त कहावतें सत्यता की कसौटी पर खरी उतरती हैं। उन्होंने दिन और तिथियों के अवसर पर घटित होने वाली घटनाओं को अपनी आँखों से देखा है। आँखों से देखे गए दृश्य कभी झूठ नहीं हो सकते। जो ज्योतिष और गणित के अनुसार सत्य सिद्ध होते हैं। घाघ, भड्डरी और बोधा की कहावतें कृषक समुदाय में अनुकरणीय हैं। बुन्देलखण्ड के किसान इन कहावतों को दृष्टि पथ में रखकर कृषि कार्य किया करते हैं। इस प्रकार की कुछ कहावतों के उदाहरण प्रस्तुत हैं।

सुक्रवार की बादरी, रही सनीचर छाय।
ऐसौ बोलें भड्डरी, बिन बरसें ना जाय।।
शुक्रवार के दिन उमड़ने वाला बादल यदि शनिवार तक आकाश मण्डल में छाया रहता है तो भड्डरी का विश्वास है कि निश्चित ही पानी बरसेगा।

परमा तुऐं दोज धाराय।
तो कछू दिना सावन के लै जाय।।
नवतपा के अवसर पर यदि प्रतिपदा को पानी बरस जाये और द्वितीया तक बादल गड़गड़ाता रहे, तो सावन तक पानी बरसने की संभावना नहीं रहती।

काँटौ सालैं कीचकौ, औ बदरई कौ धाम।
माता सालैं दूसरी, और परायौ काम।।

कीचड़ में धंसा हुआ काँटा यदि पाँव में चुभ जायं तो बहुत कष्ट देता है। इसी तरह बदली वाली धूप, सौतेली माता और दूसरे के यहाँ काम करना बहुत कष्टदायक होता है।

कारे बदरा जिय डरवाबैं।
भूरे बादर जल बरसाबैं।।

आकाश में छाये हुए काले–काले बादल डरावने लगते हैं। किन्तु आकाश में छाये हुए भूरे बादल खूब पानी बरसाते हैं। ऐसा पूर्वजों का अनुभव और विश्वास है।

लाल बरसें ताल भरें, कारे बरसें पारे।
जब उठे धुआँ धारे, तब आए नदी नारे।।

आकाश में घुमड़ने वाला लाल रंग का बादल थोड़ा सा पानी बरसा पाता है, जिससे तालाबों में पानी आ जाता है। काले बादल तो थोड़ा सा ही पानी बरसा पाते हैं, किन्तु धुआँ धारे मेघ तो घनघोर वर्षा करके नदी–नालों में उफान ला देते हैं।

दूबरी उर दो असाढ़।
चरन गई दूर कौ हार।।

आषाढ़ के महीने में चारों ओर कीचड़ ही कीचड़ होता है, इस कीचड़ में दूर तक चरने को जाने में एक दुबली गाय को भारी कष्ट होता है। जिस प्रकार एक विपत्तियों के मारे हुए व्यक्ति पर दुख का पहाड़ टूट पड़ना कितना कष्ट कारक नहीं होगा?

बादर ऊपर बादर धाबैं।
कहें भड्डरी जल बरसाबैं।।

लोक कहावतकार भड्डरी का कथन है कि जब आसमान में बादल के ऊपर बादल सघन होने लगता है तो पानी बरसने की पूर्ण संभावना होती है।

बादर देखकै पोतला नईं फोरे जात।

बादल को देखकर पानी पीने वाले पात्र को नष्ट करना ठीक नहीं है। केवल आशा से ही कार्य पूर्ण नहीं होता है।

अगहन बढ़ी आठें घटा–बिज्जू समेती जोय।
तौ सावन बरसें भलौ, साख सवाई होय।।

अगहन कृष्ण पक्ष अष्टमी को यदि आसमान में काले–काले बादल घिरते हैं और बिजली चमके तो सावन में खूब पानी बरसेगा और फसल का उत्पादन सवाया हो जायेगा।

उत्तर–उत्तर दै गई, हस्त गयो मुख मोरि।
भली बिचारी चित्रा, परजा लई बहोरि।।

उत्तरा और हस्त नक्षत्र में पानी न बरसने के कारण कृषि कार्य में बाधा उत्पन्न हो गई। किन्तु चित्रा नक्षत्र में पानी बरस जाने से कृषकों की हालत में काफी सुधार हो गया। खेती का अवसर प्राप्त हो गया।

मघा न बरसे, भरे न खेत।
माता न परसें, भरे न पेट।।

मघा नक्षत्र में सर्वाधिक जल वृष्टि होती है। जब तक मघा नक्षत्र में पानी नहीं बरस जाता, तब तक खेत पूरी तरह से भर नहीं पाते हैं। जब तक माता अपने हाथ से परोसकर भोजन नहीं कराती, तब तक पेट नहीं भर पाता है। अर्थात् संतुष्टि प्राप्त नहीं होती।

बरस लगै अगनौवा।
पटों फेर दो दौवा।।

यदि पुनर्वसु नक्षत्र लगते ही पानी बरसने लगे तो फिर पानी बरसने की आशा नहीं रहती। ऐसी स्थिति में जमीन का कोई महत्त्व नहीं है।

बरस लगेंगी ऊतरा।
माँड़ पियेंगे कूतरा।।

यदि उत्तरा नक्षत्र लगते ही जल वृष्टि होने लगे तो शेष नक्षत्रों में पर्याप्त वर्षा होगी और चावल की फसल का भारी उत्पादन होगा।

चित्रा बरसें तीन भये, गोऊँ सक्कर माँस।
चित्रा बरसें तीन गये, कोदों तिली कपास।।

चित्रा नक्षत्र में जल बरसने से कोदों, तिली और कपास नष्ट हो जाते हैं, किन्तु गेहूँ और गन्ना की भारी उपज होती है।

दिन बादर उर रात तरइयाँ।
काहै जाने राम करइयाँ।।

दिन भर आसमान में बादल छाये रहें और रात में तारे छिटके रहें तो यह स्थिति अनिष्ट कारक मानी जाती है। बड़े बुजुर्ग लोग सोचते हैं कि भगवान अब ना जाने क्या करने वाला है।

मंगलवारी परैं दिवारी।
हँसै किसान रोय व्योपारी।।

यदि मंगलवार को दीपावली का त्योहार पड़े तो कृषक बन्धुओं को भारी लाभ होगा और वे पूरे वर्ष प्रसन्न रहेंगे। व्यापारियों को हानि होने की संभावना है, जिसके कारण वे पूरे वर्ष दुखी रहेंगे।

जाड़ौ ठाँढ़ौ खेत में, करे हेत की बात।
मोरे दुश्मन तीन हैं, रूई कंबल उर पिआँर।।

जाड़ा अपने आप अपने बचाव का उपाय सारी प्रजा के समक्ष प्रकट कर रहा है। रूई, कंबल और पिआँर ही मेरे शत्रु हैं। इनसे ही जाड़े का बचाव हो सकता है।

गाड़र को बिगना लगैं, बन को लगें तुसार।
कोदौं खौं अगिया लगै, मोरौ बनों बिचार।।

जाड़ा कहता है कि यदि भेड़ों को बिगना खा जाये। कपास पर तुसार लग जाये और कोदों को अगिया रोग लग जाये, तभी मेरा काम बन सकता है।

जा दिन घोडी ता दिन गाय।
बई दिन होरी दिओं जराय।।

जिस दिन घोड़ी की पूजा हो, उसी दिन गाय की पूजा होगी और उसी दिन होली का त्योहार होगा। ज्योतिष का यह नियम है कि क्वार शुक्ल नवमीं, कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा और फाल्गुन की पूर्णिमा को एक ही दिन पड़ेगा।

बारे सें हम बोलत नइंयाँ, ज्वान लगैं मोरौ भाई।
बूढ़न खौं हम छोड़त नइंयाँ, ओढ़ै फिरें रजाई।।

जाड़ा कह रहा है कि बच्चों और जवानों पर हमारा कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। किन्तु वृद्धों पर हम पूरी तरह से हावी हो जाते हैं और हमसे बचने के लिए उन्हें रजाई ओढ़नी पड़ती है।

पुरूवा में जो पछुआब है।
हँस कैं नार–पुरूष सें कहैं।
बौ बरसैं जा करें भरता।
सबै कहैं यह अमिट बिचार।।

पुरवाई चलते–चलते यदि पछुआ हवा चलने लगे, तो निश्चित ही घनघोर वर्षा होगी। जो स्त्री पर पुरूष से हँस–हँस कर बात करती है, वह एक न एक दिन दूसरा पति रख लेगी।

जेठ बदी दसमीं दिना, सनिवासर होई।
पानी रयें ना धरनि पै, बिरला जीबैं कोई।।

यदि ज्येष्ठ माह की दशमी को शनिवार का दिन पड़े तो वर्षा की आशा समाप्त हो जाती है। अकाल पड़ने पर लोगों का जीना कठिन हो जायेगा।

जो सुर चलैं, उतई पग दीजै।
भद्रा भरनी एक न लीजै।।

जो स्वर चल रहा हो, उसी ओर प्रस्थान करना चाहिए। उस समय ग्रह, नक्षत्र पर विचार करना उचित नहीं है।

पंचमि कातिक सुक्ल की, जो होबैं सनिवार।
तौ दुकाल भारी परें, मचिहैं हाहाकार।।

यदि कार्तिक शुक्ल पंचमी को शनिवार का दिन पड़े, तो अकाल पड़ेगा और ध ारती पर हाहाकार मच जाएगा।

चौदह पूनों जेठ की, वर्षा बरसें जोय।
चौमासौ बरसै नहीं, नदियँन नीर न होय।।

ज्येष्ठ मास की चतुर्दशी और पूर्णिमा को यदि पानी बरस जाये तो पूरी बरसात भर पानी नहीं बरसेगा और नदियाँ खाली रहेंगी।

चैत वदी परमा दिवस, जो आबै रविवार।
बायु कोप होबै घनौं, सह न सकैं भू भार।।

चैत्र कृष्ण पक्ष प्रतिपदा को यदि रविवार पड़ता है तो वायु का कोप बहुत बढ़ जायेगा और धरती उस वेग को सहन नहीं कर सकेगी।

चैत चमक्कैं बीजली, बरसैं सुदि बैसाख।
जेठैं सूरज जो तपै, निश्चै बरसा भाख।।

चैत्र में बिजली चमके और वैशाख शुक्ल पक्ष में पानी बरसे, ज्येष्ठ में भयंकर गर्मी पड़े तो अच्छी बरसात होगी।

मघा पूर्वा लागी जोर, उर्द मूंग सब धरो बहोर।
बऊत बनें तौ बइयों, नातर बरा बरी कर खइये।।

मघा और पूर्वा नक्षत्र में अधिक जलवृष्टि होने पर उर्द, मूँग की फसल नष्ट हो जाती है। ऐसी स्थिति में यदि आप उर्द, मूँग की फसल बो सकें तो बोइएगा नहीं, बरा–बरी बनाकर खा लीजिएगा।

जेठ मास जो तपें निरासा।
तौ जानों बरसा की आसा।।

यदि ज्येष्ठ के महीने में भयंकर गर्मी पड़ेगी तो पर्याप्त वर्षा की आशा बढ़ जाती है।

बादर में हुन बादर खमसैं।
कहै भड्डरी पानी बरसैं।।

लोक कहावतकार भड्डरी का कथन है कि जब आसमान में छाये हुए बादल, बादलों से टकराकर घर्षण करने लगते हैं, तब जल वृष्टि की संभावना बढ़ जाती है।

माघ मास में हिम परैं, बिजली चमकें जोय।
जगत सुखी निश्चय रहैं, वृष्टि घनेरी होय।।

माघ मास में ओले पड़ें और बिजली चमके तो घनघोर वर्षा होगी और सारा संसार सुखी रहेगा।

मेघ करौंटा लै गओ, इंद्र बाँध गओ टेक।
बेर मकोरा यों कहें, मरन न दैहों एक।।

भले ही बादल जल वृष्टि न करें, इंद्रदेव नाराज हो जायं। किन्तु बुंदेली धरती में उत्पन्न होने वाले बेर मकोरा जनता का पालन पोषण कर देते हैं। तभी तो कहा जाता है कि –'मौवा मेवा बेर कलेवा, गुलगुच बनीं मिठाई।'

रोहनि, उत्तरा रेवति स्वाँति, कन्या जन्में आधी रात।
आप मरैं माई दुख पाबैं, जियें तौ कुल को लगाबैं दाग।।

रोहणी उत्तरा, रेवती और स्वाति नक्षत्र में आधी रात में जन्म लेने वाली कन्या प्रायः मरकर माता–पिता को कष्ट देती हैं। यदि जीती है तो कुल को कलंकित कर देती है।

साँझें धनुष सकारें मोरा।
जे दोंना पानी के बोरा।।

शाम को आकाश में इन्द्र धनुष और बड़े सबेरे मोर का नृत्य दिखाई देना जल वृष्टि के संकेत हैं।

सावन में पुरवैया, भादों में पछयाव।
हरवारे हर छोड़कैं, लरका जाय जिबाव।।

यदि सावन में पुरवाई चले और भादों में पछुवा हवाएं चलें तो ये सब अकाल के लक्षण हैं। ऐसी स्थिति में कृषि कार्य छोड़कर परिवार के भरण–पोषण के लिए कोई दूसरा धंधा अपना लेना चाहिए।

सावन सुकला सप्तमी, जो गरजैं अधिरात।
तुम जइयों पिय मालवा, हम जैहैं गुजरात।।

श्रावण शुक्ल सप्तमीं को यदि आधी रात को बादल गरजता है तो अकाल पड़ेगा और लोग दाने–दाने को मोहताज हो जाएंगे। ऐसी स्थिति में प्रियतम आप उदर पोषण के लिए मालवा चले जाना और मैं गुजरात चली जाऊँगी।

सोम सुक्र गुरूवार को, फूस अमावस होय।
घर–घर बजें बधाईयाँ, दुखी न दीखै कोय।।

यदि पौष माह की अमावस्या सोमवार, गुरूवार और शुक्रवार को पड़े तो संसार में सुकाल आ जायेगा और कोई दुखी न दिखाई देगा।

हस्त बरसें तीन होंय, साली सक्कर मास।
हस्त बरसें तीन जाँय, तिल कोदों उर कपास।।

हस्ति नक्षत्र में वर्षा होने से धान, ईख और उर्द की फसल अच्छी होती है। जबकि तिल, कोदों और कपास की फसल नष्ट हो जाती है।

अम्बा फलैं तौ नव चलें, अण्ड फलें इतराय।
अति कौ फूलौ सहजनौ, जरा मूँढ़ सें जाय।।

आम का वृक्ष फल देने पर झुकता है। अरण्ड का वृक्ष फूल देने पर इतराता है। सहजन का वृक्ष अधिक फूलने पर समूल नष्ट हो जाता है।

अधजल गगरी छलकत जाय।
भरी गगरिया चुपकें जाय।।

आधी भरी हुई गागर छलकने लगती है, किन्तु भरी हुई गागर, शान्ति पूर्वक चली जाती है। आधे–अधूरे ज्ञान वाले लोग इतराने लगते हैं, किन्तु विद्वान और ज्ञानी लोग गंभीर और शांत चित्त वाले होते हैं।

फागुन कौ मेह बुरौ, बैरी कौ नेह बुरौ।
सारौ घर माँझ बुरौं, बिगरौं भानेज बुरौ।।

फागुन के महीने की वर्षा कष्टकारक होती है। शत्रु का प्रेम घातक होता है। घर में साले का रहना अच्छा नहीं होता और भानेज का बिगड़ना ठीक नहीं है।

भरनी भद्रा बौ गिनें, जिनके हैगी रिद्ध।
दीन दलुद्री का गिनें, जब चालें तब सिद्ध।।

साधन संपन्न व्यक्ति ही भरनी, भद्रा जैसे ज्योतिषीय नक्षत्रों पर ध्यान दिया करते

हैं। किन्तु दीन दरिद्री व्यक्ति इन पर कोई विचार नहीं करते है। जब वे चल देते हैं, तभी उन्हें सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

माघ मास की बदरिया, और क्वाँर कौ घाम।
जो दोऊ सह सकें, करें चाकरी काम।।

जो कोई माघ मास के बादल और क्वाँर मास की धूप को सहन कर लेते हैं। वही दूसरों की नौकरी करने में सक्षम हो पाते हैं।

माहौ गेहूँ जेठ गुर, भादौं मास कपास।
बहू मायकें धी धरैं, राखैं होय बिनास।।

माघ मास में गेहूँ, ज्येष्ठ मास में गुड़, भादों के महीने में कपास, मायके में बहू और पुत्री को घर में रखना विनाश कारक होता है।

मोर पाँख सी बदरिया, राँड़ें काजर रेख।
जो बरसें बौ घर करें, जामें मीन न मेख।।

जो बादल मोर पंख के समान होते हैं, वे निश्चित ही बरसते हैं। जो विधवाएं काजल लगाने लगतीं हैं, वे निश्चित ही दूसरा घर बसा लेती हैं।

सरिता कूप, तड़ाग नृप, जे घट कबँहु न देत।
करम कुम्म जाकौं जितै, सो उतनौं भर लेत।।

नदी, कुआँ, तालाब और राजा सबको मनचाहा देते हैं। जिसका जितना कर्म और पुरुषार्थ होता है, वह उतना ही प्राप्त कर लेता है।

अंदरा पीसैं, कुत्ता खाय।

प्रायः कुत्ते द्वार–द्वार पर भटक कर खाद्य पदार्थ पर मुँह मारते रहते हैं। जब अधा पीसता है तो कुत्तों को आटा खाने का अवसर मिल जाता है। लापरवाह और सीधे सादे लोगों के परिश्रम का फल चालाक लोग प्राप्त कर लेते हैं और वह बेचारा हाथ मलता ही रह जाता है।

अड़की ऊँट लगो, पै अड़की तौ होय।

धनाभाव के कारण आदमी विवश हो जाता है। कोई चीज कितनी ही सस्ती क्यों न बिके, किन्तु उसको खरीदने के लिए पैसा चाहिए। ऊँट भले ही चार कौंड़ियों में बिकता हो, किन्तु उसको खरीदने के लिए चार कौंड़ी कहाँ से पायें? 'हाँत न मुठी, खुरखुरा उठी।'

अँदा धुंध दरबार में, गदा पँजीरी खाँय।

जिस स्थल पर योग्य–अयोग्य का अंतर स्पष्ट न हो, वहाँ अयोग्य और चापलूस लोग अपना स्वार्थ सिद्ध कर लेते हैं।

दमरी की हंडी फूटी, कुत्तन की जात तौ जान लई।

थोड़े से नुकसान में ओछे प्राणियों की प्रवृत्ति समझ लेना। समय पाकर हांड़ी में कुत्ते ने मुँह डाल दिया। एक पैसे की हंडी को फोड़ना पड़ा, किन्तु कुत्ते की कुप्रवृत्ति को तो समझ गये।

अपनी अटकी पै गदा सैं कक्का कनें आऊत।

कभी–कभी कोई ऐसा काम अटक जाता है कि महत्त्वहीन लोगों को महत्त्व देना पड़ता है। अपना काम बनाने के लिए गधे से भी कक्का कहना पड़ता है।

अपनी घानी पिर जाय,
फिर तेली के बैल खौं नार खाँय।।

अपना कार्य सिद्ध हो जाये, फिर दूसरों की हानि की कोई चिन्ता नहीं है। बैल कोल्हू चला कर तेल निकाल दे, फिर चाहे बैल को सिंह खा ले तो हमें इसकी कोई परवाह नहीं है। इस प्रकार का व्यवहार प्रायः कृतघ्न और स्वार्थी लोगों का होता है।

अपने दोरैं कुत्ता सेर होत।

स्थानीय प्रभाव के कारण शक्तिहीन शक्तिशाली हो जाते हैं। मालिक के दरवाजे पर खड़ा हुआ कुत्ता अपने आपको शेर समझता है, क्योंकि उसे अपने स्वामी का आश्रय प्राप्त है।

अबै साँप बामी में सैं आ कड़ो।
चमरदन्दोर में नईं फसो।

यह अन्योक्ति उन नवयुवकों के लिए प्रस्तुत की गई है, जिन्हें संसार छल, कपट, प्रपंच और दुनियादारी का कोई ज्ञान नहीं होता। जैसे बामी से निकलने वाला सर्प मायाजाल (चमरदन्दोर) से अपरिचित होता है।

असाड़ कौ भव लड़इया, सावन में कये,
ऐसों बसकारौ कभऊँ नईं देखो।।

आषाढ़ में उत्पन्न होने वाला स्यार, यदि सावन में कहे कि हमने ऐसी बरसात कभी नहीं देखी। इसके पूर्व उसके सामने सावन आया ही नहीं था। ये सब अनुभवहीनता की बकवास है।

आँदरी घोड़ी घुने चना।
मसकें जारी घुरिया घना के घना।।

जिसको भले–बुरे का कोई ज्ञान नहीं होता है, उसे चालाक ठगते रहते हैं। अपना खराब माल गलाते रहते हैं। जिस प्रकार एक अंधी घोड़ी को घुने चने दिखाई नहीं देते और वह मस्ती से चबाती जाती है।

आरी बाँड़ी आरौं लिइये,
ऊने कई कै मैं तौ पूँछई उठाँय ठाँढ़ी।

ये गायों के झुण्ड में उपद्रव करने का उपक्रम है। गायें पूँछ उठाकर उछल कूद करने लगती हैं। कोई उन्हें उपद्रव करने के लिए उकसाता है। समाज में कुछ लोग कानाफूसी करके अशांति उत्पन्न करा देते हैं।

ऊँट की चोरी न्योरें न्योरें नईं होत।

इतने बड़े ऊँट को कोई छिपाकर ले जाये असंभव है। यदि कोई किसी बड़ी वस्तु को चुराकर ले जाये तो वह चोरी एक न एक दिन उजागर अवश्य हो जाएगी।

ऊँट की पीर, गदा खौंनईं दागो जात।

किसी को कष्ट हो और इलाज किसी दूसरे का किया जाये। यह तो असंगति है। यदि ऊँट को कोई कष्ट हो तो उपचार ऊँट का ही किया जाना चाहिए न कि गधे का।

ऊँट के मौं में जीरौ।

आवश्यकता से बहुत ही कम वस्तु प्राप्त होना। ऊँट जैसे भारी भरकम शरीर में जीरे जैसी छोटी वस्तु का क्या महत्त्व।

ऊँट चढ़ें कुत्ता ने काटो।

ऊँट पर चढ़े हुए व्यक्ति को कुत्ता काट ले। यह एक अनहोनी और असंभव घटना है।

ऊँट चढ़ें मलकइयाँ औरन लगतीं।

उच्च पद प्राप्त होते ही लोग इतराने लगते हैं। अर्थात् ऊँट पर चढ़े हुए सवार की कमर अपने आप मटकने लगती है।

ऊँट पै बोझ लदों, कुरिया पर पर जाय।

कोई बोझा ढो रहा है और किसी को कष्ट हो रहा है। यह एक प्रकार से

दिखावटी सहानुभूति का नाटक है। बोझ तो ऊँट की पीठ पर लदा है और कोरी का झुकना नाटक नहीं तो और क्या है?

कौअन के कोसें ढोर नईं मरत।

किसी की अशुभकामनाओं से किसी का अहित नहीं होता। कौवे चाहें कि पशु मरते रहें और हमें माँस खाने को मिलता रहे तो ये सब असंभव है।

कयें सें धोबी गदा पै नईं चढ़त।

किसी के कहने से कोई लज्जावान कार्य नहीं करता। वैसे तो धोबी का काम गधा पर बैठना ही है। किन्तु वह दूसरों के कहने पर गधे पर नहीं बैठेगा।

करिया कुत्ता, मुतिया नाँव।

रूप रंग विपरीत नामकरण। कुत्ते का रंग काला है, किन्तु नाम उसका मुतिया रखा गया, जबकि मोती का रंग श्वेत होता है।

कागा चलें हंस की चाल।

अपने स्वभाव के विपरीत कार्यों का प्रदर्शन। कुत्सित कार्य करने वाला कौवा यदि हंसों के कार्यों का अनुकरण करने लगे तो निश्चित ही किसी दुष्कर्म की आशंका रहती है।

कुत्तन के बगर में कनक कौ दिआ।

असुरक्षित स्थान पर किसी वस्तु को सोच–समझकर रखना चाहिए। कुत्तों का खाद्य पदार्थ गेहूँ का आटा है। कुत्तों के स्थान पर आटे का दीपक रखना निरर्थक है।

कुत्ता की छोत, बिलइयै नहीं लगत।

अर्थात् कुत्ता की छूत बिल्ली को नहीं लगती। किसी व्यक्ति के अपराध का फल उसी व्यक्ति को भोगना पड़ता है। किसी दूसरे को नहीं। प्रायः बच्चे इस कहावत को कह–कहकर खेलने लगते हैं।

कुत्ता की पूँछ पुँगरिया में डारी,
जब कड़ी सो टेड़ी की टेड़ी।

बुरे लोगों की आदतों में प्रयत्न करने पर भी सुधार नहीं हो पाता। जिस प्रकार कुत्ते की टेढ़ी पूँछ पुँगरिया में डालने पर भी सीधी नहीं हो पाती। वह पुँगरिया से निकालने के बाद टेढ़ी ही निकलेगी।

कुत्ता लड़याव तौ बौ मौं चाटन लगत।

ओछे लोगों को सिर पर चढ़ाने से अपमान ही हाथ लगता है। कुत्ते को ज्यादा प्यार करने से वह मालिक का मुँह चाटने लगता है। कहा भी गया है–

काटे चाटे श्वान के दुहू भाँति विपरीत।
कुत्ता मूतै जाँ, सौ गारी पाय।

कुत्ता जहाँ पेशाब करता है वहाँ उसे सैकड़ों गालियाँ खानीं पड़ती हैं। कुत्ते कभी धरती पर पेशाब नहीं करते, वे किसी न किसी वस्तु पर पेशाब कर देते हैं। इसी कारण से उन्हें गालियाँ खानी पड़ती हैं। जिसकी जो आदत है, वह उसे कभी छोड़ नहीं सकते।

कुतियाँ प्रागै जान लगें, तो हँडियाँ तौ को चाटैं।

प्रायः ओछे कार्य करने वाले लोग यदि अच्छे कार्यों की ओर मुड़ते हैं, तो बड़े अचंभे का विषय है। वैसे कुतियों का काम है, हंडी चाटना। यदि वे हंडी चाटना छोड़कर तीर्थ यात्रा करने लगें तो आश्चर्य की बात है। ये आश्चर्यजनक कार्य उनके आचरण के विपरीत है।

कुत्ते डारी लायचीं, सूंघ–सूंघ मर जाय।।

वस्तु कितनी ही मूल्यवान क्यों न हो, किन्तु अनजान व्यक्ति के लिए निरर्थक है। जैसे इलायची के स्वाद का कुत्ते को कोई ज्ञान नहीं है। इसी कारण से वह अपने सामने पड़ी इलायची को सूंघ– सूंघकर रह जाता है।

केंकरन के जाए, माटियई खोदत।

लोग प्रायः अपने पारिवारिक संस्कारों के अनुरूप ही कार्य करते हैं। केकड़े का काम है मिट्टी खोदना तो केकड़े के बच्चे भी मिट्टी खोदेंगे।

कै हंसा मोंती चुनें, कैं लंघन कर मर जाँय।

जिसके कुल–परिवार की जो रीति होती है, लोग उसी का परिपालन करते चले जाते हैं। वे स्वार्थ सिद्धि के लिए किसी भी स्तरहीन गतिविधि को नहीं अपनाते। हंस केवल मोती चुगता है। मोती न मिलने पर वह भले ही भूखा मर जाये पर वह किसी अन्य वस्तु को ग्रहण नहीं करता।

खग जानें खग ही की भासा।

प्रायः पक्षी ही पक्षियों की भाषा को समझते हैं। किसी रहस्यमय बात को उसका जानकार व्यक्ति समझ पाता है और दूसरे नहीं। यह लक्षण मूलक संकेत है।

बंदर का जानें अधरख कौ स्वाद।

सबकी रुचियाँ और इच्छाएं अलग–अलग प्रकार की होती हैं। बंदरों का खान–पान बिलकुल भिन्न है। जिसने कभी अदरक चखा भी नहीं है। उसे अदरक के स्वाद का ज्ञान कैसे हो सकता है?

खर–खाई उर कुत्तन की जूँठी।

परिस्थितिवश मनुष्य को कभी अखाद्य भी खाना पड़ता है, जो निन्दनीय और प्रतिष्ठा के प्रतिकूल है। एक तो पशुओं का भोजन खली को खाना पड़ा और वह भी कुत्तों की जूठी। ये सब विषम परिस्थिति का खेल है।

गदन खौं मुड़घरे नईं बाँदे जात।

कभी–कभी लोग स्वार्थवश निम्न कोटि के लोगों को भी सम्मान देने लगते हैं। मुड़धरे का अर्थ है पशुओं के सिर की साज–सज्जा। दीपावली के दूसरे दिन गाय, बैल, बछड़ों के सींगों पर रंग–बिरंगी रस्सियों को सुसज्जित किया जाता है और यह पूजा केवल गाय, बछड़ों और बैल की ही की जाती है। गधों की पूजा नहीं होती है। इसी संदर्भ में यह कहावत चल पड़ी है।

गदन खौं गू पकवान।

छोटे लोगों की पसंद भी बहुत ही छोटी है। जैसे गधे का सुस्वाद भोजन मल ही होता है। उनकी रुचि भी जाति के अनुरूप होती है।

गदइया गुर हगन लगैं तो बराई को पेरैं।

यदि ओछे लोग बड़े और महत्त्वपूर्ण काम करने लगें तो बड़े लोग अच्छे काम करने में कतराने लगें। यदि गधी के पेट से गुड़ निकलने लगे तो लोग गन्ने की खेती करके गन्ने को पेरने का प्रयास क्यों करेंगे?

गदन चराए खेत, जी कौ पाप न पुन्न।

यदि गधों को फसल चरा दी जाये तो उससे कोई लाभ नहीं है। जिसका न कोई पाप है और न कोई पुण्य। मूर्ख और अकर्मण्य लोगों को खिलाना–पिलाना व्यर्थ है।

गदा सें जीतें नईं तो रेंगटा के कान मरोरे।

जो गधे से जीतते नहीं हैं वे उसके बच्चे के कान मरोड़ने लगते हैं। कभी–कभी सबलों से पराजित होने वाले लोग निर्बलों पर अपना गुस्सा उतारने लगते हैं।

घरैं आँय नागन पूजें, बामी पूजन जाँय।

लोग घर पर आये नाग की तो पूजा नहीं करते और बामियों (साँप के बिलों) की

पूजा करते फिरते हैं। लोग समीपवर्ती सुविधा का तो लाभ नहीं लेते और व्यर्थ में इध र–उधर भटकते फिरते हैं।

घरैं आव तौ मताई मारैं, उर बायरैं जाव तौ कुत्ता काटैं।

जो आदमी चारों तरफ से विपदाओं से घिरा रहता है, उसे कहीं भी सुख–शांति प्राप्त नहीं होती । उसकी स्थिति बड़ी विचित्र हो जाती है। घर आने पर माता मारती है और बाहर जाने पर कुत्ता काटता है।

घुरवा मरें गदन कौ राज।

घोड़े के मरने पर गधे राजा बन जाते हैं। शक्तिशाली लोगों के समाप्त होने पर निर्बलों का वर्चस्व बढ़ जाता है।

चल्ली में गइया लगाँय, करम खौं खोर दयें।

जान–बूझ कर लोग भूल करने लगते हैं और कुछ बिगड़ने पर भाग्य को दोषी ठहराने लगते हैं। चलनी में गाय लगाने से दूध कैसे प्राप्त हो सकता है।

जाँ–जाँ व्यास मठा खौं जाँय,
भैंस पड़ा दोई मर जाँय।

भाग्यहीन लोगों के साथ प्रायः अभाग्य ही जुड़ा रहता है। वे जहाँ भी जाते हैं, अपशकुन सूचक सिद्ध होते हैं। व्यास जी इतने अभागे हैं कि जहाँ–जहाँ वे मट्ठा लेने जाते हैं, वहाँ भैंस और पड़ा दोनों ही मर जाते हैं।

जा बेरा ना बा बेरा, गदैं नौंन दैं दो।

कोई काम समय पर अच्छा लगता है। कुसमय में किया गया कार्य निरर्थक होता है। समय पर पशुओं को नमक दिया जाता है। कुसमय में गधे को नौन देना निन्दास्पद होता है।

जी की बँदरिया ओई सैं नचत।

जो जिस कार्य को करता रहता है, वह धीरे–धीरे उस कार्य में पारंगत हो जाता है। जो जिस बँदरिया को नचाता रहता है, वही उस बँदरिया को नचा सकता है। कोई दूसरा नहीं नचा सकता है।

जी गाँव में कुकरा न होत हुइयैं, का उतै भुंसरा न होत हुइयैं।

यह लोगों की भ्रान्ति है कि मुर्गा बोलने से ही सबेरा होता है। सबेरा तो सूर्योदय से ही होता है। कुछ लोग मिथ्याभिमान वश ऐसा सोचने लगते हैं कि सारे गाँव का भार मेरे ही सिर पर है।

टाँड़े में हो कड़ गई, लुखरो सो नें कान जू बजन लगीं।

जब कभी कोई लोमड़ी पशुओं के झुण्ड के बीच से निकल जाती है, तो वह अपने आपको उनसे श्रेष्ठ समझने लगती है। अर्थात् जब कभी कोई साधारण व्यक्ति बड़ों के साथ थोड़ा बहुत बैठ जाता है, तो गर्व का अनुभव करने लगता है।

डेढ़ टाली, टीले पै बगर।

कुछ लोग आत्म प्रदर्शन के आदी होते हैं। कम सामर्थ्य होते हुए भी अपने आपको बहुत बड़ा प्रदर्शित करते हैं। जैसे कोई एक दो गायें रखने वाला आदमी ऊँचाई पर गौशाला बनाकर एक बड़ा गौ स्वामी बनने का दिखावा करते हैं।

तला तो खुदो नइयाँ उर मगर सुसान लगो।

कार्य पूर्ण होने के पूर्व कल्पना लोक में विचरण करते हुए बातों के बताशे बनाना। जैसे तालाब खुदने के पहले मगर के सुसाने की आवाज सुनाई देने लगे।

तेली को तमोली करै, तौ कोलू टूटैं बैल मरैं।

यदि कोई अनाड़ी आदमी किसी काम को करता है, तो वह कार्य विधिवत् संपन्न नहीं हो पायेगा। उसमें कोई न कोई त्रुटि अवश्य रह जायेगी। जैसे कोई पान लगाने वाला तमोली तेल पेरने के लिए कोल्हू चलाने लगे तो कोल्हू टूट जायेगी या बैल मर जायेगा।

थुरमोलू उर उदार, लमथनू उर दुदार।

कुछ लोग अपनी चतुरता से हर वस्तु क्रय करने में विशेष लाभ प्राप्त करने का प्रयास करते हैं, किन्तु उन्हें अपने स्यानपन में सफलता नहीं मिल पाती है। जैसे कोई गाय खरीदने वाला अधिक दूध देने वाली गाय को कम पैसों में खरीदना चाहे और उसी पर उधार करना चाहे तो कैसे संभव होगा। ऐसे लोगों की योजनाएँ अपने आप विफल हो जायेंगी।

दलाँकबे खौं साँड़ उर गोबर करबे गऊ के जाये।

कुछ लोग बहादुरी का प्रदर्शन करते हैं और अपने से अधिक शक्तिशाली के सामने भयभीत होकर शांत स्वभाव का बन जाते है। जैसे कोई साँड़ कमजोर पशु को देखकर सहजोर बन जाता है। किन्तु अपने से बड़े के सामने टट्टी करके गाय का सीधा सादा बछड़ा बन जाता है। ये सब अवसरवादियों की स्थिति है।

दान की बछियैंन के दाँत नईं देखे जात।

दान दी गई वस्तु पर अधिक विचार–विमर्श नहीं किया जाता है। जो कुछ दान

के रूप में प्राप्त हो, उसे प्रेम–पूर्वक स्वीकार करना चाहिए। दान में दी गई बछियों की आयु नहीं देखी जाती।

दिबारी के चोंखैं पड़ा मोटौ नईं होत।

दो–चार दिन खिला–पिला देने से आदमी के स्वास्थ्य में कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता है। एकाध दिन पड़ा को भैंस का पूरा दूध पिला देने पर वह मोटा नहीं हो जाता। दीपावली के दिन भैंस का दूध दुहा नहीं जाता। उस दिन पूरा का पूरा दूध पड़ा ही पी लेता है। किन्तु वह एक दिन के दूध पीने पर मोटा नहीं हो पाता है।

दुदार गइया की दो लातें सउनें आउतीं।

दूध के प्रलोभन से प्रायः दूध देने वाली गाय की लातें सहन करनी पड़ती हैं। जिससे स्वार्थ सिद्ध होता है, उसका भला–बुरा व्यवहार भी सहन करना पड़ता है।

दूबरी और दो असाढ़ चरन गई दूर कौ हार।

किसी शक्तिहीन व्यक्ति से अधिक काम लेना कष्ट कारक होता है। इस कारण से उस पर दुहरा बोझ पड़ जाता है। एक दुबली गाय आषाढ़ की कीचड़ भरी भूमि में जब दूर तक चरने के लिए चली जाती है, तब उसे भारी कष्ट सहन करना पड़ता है। अर्थात् एक व्याधि के साथ अनेक व्याधियाँ सहन करना।

नरकऊ गइयाँ, कुढ़िया बरेदी।

अर्थात् जैसों को तैसा मिल जाना। मैला खाने वाली गाय को चराने वाला चरवाहा यदि कोढ़ी मिल जाये तो फिर कहना ही क्या है। उनसे भलेपन की आशा व्यर्थ हैं, उनसे किसी का भला हो ही नहीं सकता।

नाँव लखन दे मौ कुतिया सौं।

नाम के अनुरूप, सूरत और रूप–रंग न होना। जैसे नाम तो लखन देवी है, किन्तु सूरत कुतिया के समान है। प्रायः नामों के अनुरूप रूप रंग और कार्यकलाप नहीं होते हैं। इसी कारण से ''नाँव बड़े उर दरसन थोरे की'' कहावत प्रचलित हो गई है।

नौ सौ मूसें टोर बिलइया चली हज्ज खौं।

जीवन भर कुकर्म करने वाला व्यक्ति यदि सत्कर्म की ओर मुड़ता दिखाई दे तो आश्चर्यजनक बात है। नौ सौ चूहों को मार–मार कर खाने वाली बिल्ली यदि तीर्थ यात्रा करने के लिए जाने लगे तो आश्चर्य है।

पंछियँन के चरें खेत नईं बड़ात।

पक्षियों के चुनने से खेत समाप्त नहीं हो जाता है। अर्थात् थोड़ी बहुत गरीबों की सहायता करने से आदमी कभी गरीब नहीं होता है, बल्कि उसकी वृद्धि ही होती है। कुछ इसी तरह की बात बाबा तुलसी भी कह गए हैं–

तुलसी पक्षिन के पियें, घटें न सरिता नीर।
धरम किए धन न घटें, जो सहाय रघुवीर।।

पंछिन में कौवा मांसन में नौवा, सबसें चतुर होत।

समाज में इस प्रकार की आम धारणा है कि पक्षियों में सबसे ज्यादा चतुर कौवा और मनुष्यों में ज्यादा चतुर नाई होता है। ये कहावत जातीय विशेषता पर आधारित है। संस्कृत में भी कुछ ऐसा ही कहा गया है–

काकः पक्षिसु चांडालः पशुषु गर्दभ,
नराणां कोऽपिं चांडालः सर्वेषु निंदकः।

पड़ा बैल कौ गाथौ नईं डरत।

विभिन्न रुचियों और आदतों के लोगों को एक साथ नहीं रखा जा सकता। जिस प्रकार पड़ा और बैल एक साथ बँधकर नहीं रह सकते। क्योंकि इन दोनों का खान–पान अलग–अलग प्रकार का है।

पाँवनन सें साँप नईं मरत।

किसी दूसरे के सहयोग से किसी कार्य में सफलता प्राप्त नहीं हो पाती है। जिस प्रकार सर्प मारने का काम मेहमान नहीं कर पाते। इस जोखिम भरे कार्य को तो स्वयं ही करना पड़ेगा।

बँदरा बैल सौ जेठौ पूत, बाज–बाज कौ कड़ें सपूत।

बंदर की तरह लाल मुँह वाला बैल और ज्येष्ठ पुत्र ये इने–गिने ही अच्छे निकलते हैं। वैसे ये अधिकांश निकम्मे ही होते हैं। ये अनुभवी और पारखी लोगों का दृष्टिकोण है।

बनया बामन, पनया साँप।
इनमें बिस न उनमें साँच।।

वणिक वृत्ति वाले ब्राह्मण में सत्य के दर्शन नहीं होते। इस प्रकार के ब्राह्मण प्रायः स्वार्थ सिद्धि में लीन रहते हैं। जिस प्रकार पानी में रहने वाले सर्प में विष नहीं होता है।

बनियाँ मित्र न बेस्या सती।
कागा हंस न बगला जती।।

वणिक किसी का मित्र नहीं हो सकता। उसकी मैत्री तो स्वार्थ तक ही सीमित होती है। वेश्या कभी सती नहीं हो सकती। वह तो पर–पुरुष गामिनी महिला है। माँस भक्षण करने वाला कौवा कभी हंस की तरह मोती नहीं चुग सकता। जिस प्रकार मछलियों को खाने वाला बगला योगियों की तरह भक्ति भावना में लीन नहीं रह सकता। ऐसा अनुभवी लोगों का दृष्टिकोण है।

बाप ने मारीं मेंढकी, बेटा तीरन्दाज।

ये एक प्रकार की व्यंग्योक्ति है। कुछ कायर लोग बहादुरी की झूठी डींगें हाँकते हैं। उनके पिताजी तो मेंढ़की मारते रहे और उनके ये पुत्र तीरन्दाज बने हुए हैं।

बामुन कुत्ता नाऊ, जात देख गुर्राऊ।।

प्रायः ब्राह्मण, कुत्ता और नाई अपने जाति भाइयों को देखकर ईर्ष्या करने लगते हैं। कभी–कभी वे कोई न कोई बहाना लेकर लड़ बैठते हैं। स्वार्थवश उनमें परस्पर द्वेष भावना होती है।

बिच्छू कौ तौं मंत्र नई जानत,
साँप के बिल में हाँत डारत।

जिन्हें छोटे–मोटे कार्यों को करने का तो अनुभव नहीं है और वे बड़े से बड़े कार्य करने को तत्पर हो जाते हैं। इसीलिए यह कहा जाता है कि लोग बिच्छू से अधिक जहरीले सर्प के बिल में हाथ डालते हैं। ये सब अनुभव–हीनता का कारण है।

बुकरा की मताई, कबनों अधाई बधाई बोलै?

बकरे की माँ बकरे की प्राण रक्षा के लिए कब तक देवी–देवताओं को मनाती रहेगी। एक न एक दिन तो उसे कटना ही पड़ेगा। नाशवान वस्तु को कितने दिन तक बचाया जा सकता है?

बैल न कूदैं–कूदै गौन, जौ तमासौं देखें कौन।

बैल कभी उछल कूद नहीं करता, बल्कि उसकी पीठ पर लदा हुआ सामान उसे कूदने की प्रेरणा देता है। कुछ लोग दूसरे के बल इतराते हैं। ऐसे लोगों के मूर्खतापूर्ण कार्य–कलाप तमाशा बनकर उपहास का कारण बन जाते हैं।

भई गति साँप छछूँदर कैसी।

यह एक प्रकार की द्विविधा पूर्ण स्थिति है। जब कभी सर्प छछूँदर को पकड़ लेता

है, तो न वह उसे निगल पाता है और न छोड़ पाता है। द्विविधा पूर्ण स्थिति में रहकर वह उसे पकड़े ही रहता है। कहा भी गया है –

दुविधा में दोऊ गये, माया मिले न राम।

भैस बिआय, पड़ा के पौंद पटें।

कुछ लोग दूसरों को कष्ट उठाते हुए देखकर अपने ऊपर कष्ट न आ जाने की आशंका से भयभीत होते हैं। भैंस की बच्चा जनने की पीड़ा देखकर पड़ा भयभीत होने लगता है। यह एक प्रकार की व्यंग्योक्ति है।

भौकें न दर्राय मसकऊँ काट खाँय।

ये धोखेबाज लोगों की स्थिति है। ये सीधे–सादे और भोले–भाले दिखाई देते हैं, किन्तु अवसर मिलने पर चाहे जिसको कष्ट दे देते हैं। उनकी स्थिति उस सीधे–सादे कुत्ते की तरह होती है, जो न कभी भोंकता है और न दर्राता है और चुपचाप चाहे जिसको काट खाता है। इस प्रकार के प्राणी बहुत खतरनाक होते हैं। इनसे सदैव सतर्क रहना चहिए।

मगरन खौं बुड़कइयाँ नईं सिकावनें आवतीं।

हर प्राणी अपने पैतृक कार्य में पारंगत होता है। उसे उसके कार्य की शिक्षा देना आवश्यक नहीं है। मगर पानी में रहता है। डूबना उसका नित्य कार्य है। उसे डूबने की शिक्षा देने की आवश्यकता नहीं है।

मियाँ रिसानें मुर्गी मारी।

बड़े लोग प्रायः छोटों पर अपना गुस्सा उतारते हैं। मियाँ जी जब नाराज होते हैं तो मुर्गी को मारकर शांत हो जाते हैं। यह उन पर व्यंग्योक्ति है, जो कमजोर लोगों को सताकर अपना क्रोध शांत कर लेते हैं।

मुण्डी गइया सदा कलोर।

यह उन स्त्रियों पर व्यंग्योक्ति है जो अपने साज–श्रृंगार के कारण सदैव जवान दिखती रहती हैं। जिस प्रकार छोटे कद और सींगो वाली गाय हमेशा कलुरिया की तरह दिखाई देती रहती है।

राजा की कुतिया सें कुत्तो जू कनें परत।

बड़े–बड़े लोगों को तो सम्मान दिया ही जाता है, बल्कि उनके आश्रितों को भी लोग आदर दिया करते हैं। यहाँ तक कि राजा की कुतिया को भी 'कुत्तों जू' कहकर सम्मान दिया जाता है।

लड़इयँन में लोइया नईं खोए जात।

छोटे–मोटे लाभों के लिए मूल्यवान वस्तुओं का उपयोग नहीं किया जाता। जिससे लाभ की अपेक्षा हानि अधिक होती है। जिस प्रकार शेरों का शिकार करने वाली लोहे की गोली का उपयोग स्यारों के मारने में किया जाये तो व्यर्थ है। ये हानि का सौदा कोई मूर्ख ही करेगा।

लड़इया के गू खौं पारें नईं चड़ाव जात।

स्वार्थ सिद्धि के लिए किसी महत्त्वहीन व्यक्ति को सिर पर चढ़ाना निरर्थक है। जिस प्रकार स्यार के मल को पहाड़ पर चढ़ाना मूर्खता है।

लपकी गाय गुलेंदे खाय, दौर–दौर मउआ तर जाय।

जिसको जिस वस्तु के खाने में आनंद प्राप्त होता है, वह उसे खाने के लिए सदैव तैयार रहता है। जिस प्रकार गुलेंदे खाने वाली गाय दौड़–दौड़कर महुवे के नीचे जाया करती है।

लवा फंसे तीतुर फंसें, तुमकाँ फंसीं बटेर।

कभी–कभी अपराधियों के साथ निरपराधी भी फँस जाते हैं। फसल को हानि पहुँचाने वाले लवा और तीतुर जाल में फँस जाते हैं और कभी–कभी उनके साथ बटेर भी फँस जाती है। ये सब उनके साथ रहने का दुष्परिणाम है।

लीली काँद बेंगनी खुरा, कभऊँ न निकरै बरधा बुरा।

लम्बी काँदौर, नीला रंग और बैगनीं खुरों वाला बैल बहुत अच्छा माना जाता है। कृषक बैलों के क्रय करते समय उसका रूप रंग देखकर मोल–भाव करते हैं।

लेंड़ा हाती अपनिअँई फौज मारत।

डरपोक हाथी मार–काट देखकर पीछे की ओर लौटकर अपनी ही सेना को कुचलकर मारता चला जाता है।

सत्त नारान में गदा नईं पेड़ों जात।

शुभ और मंगल सूचक कार्यक्रमों के मध्य अपशकुन सूचक वस्तुओं की प्रस्तुति उचित नहीं है। जिस प्रकार सत्यनारायण की कथा के वाचन के अवसर पर गधे का प्रवेश अनुचित है।

साँड़–साँड़ लरें, बारी कौ भुरसन होय।

बड़ों–बड़ों के झगड़ों में छोटों पर संकट आ जाता है। जिस प्रकार दो साँड़ों की लड़ाई में बारी व्यर्थ में चकनाचूर हो जाती है।

साँप के गोड़े साँपई खों दिखात।

सर्प के पैर सर्प को ही दिखाई देते हैं। सच बात तो यह है कि सर्प के पैर होते ही नहीं हैं। वह पेट के बल पर रेंगता है। इसी कारण से उसे उरग कहा जाता है। लोग औरों को देखकर अटकलें लगा लेते हैं, किन्तु वास्तविक स्थिति का पता उसे स्वयं ही होता है। यह कहावत अनुमान के आधार पर संचालित हुई है।

साँप के घरै पाँवनें, फन सें फन मिलावनें।

जो जैसा होता है, उसे वैसे ही मित्र और सगे–सम्बन्धी मिल जाते हैं और उनके मिलने–जुलने का तरीका भी अलग होता है। जब साँप के घर पर कोई दूसरा सर्प मेहमान के रूप में आता है, तब वे दोनों फन से फन मिलाकर भेंट करते हैं।

साँप बिलगइया लैकैं बिल में घुसै,
तौ बारा जाँगा सैं छुलैं।

यदि सर्प लहरा–लहराकर बिल में घुसेगा तो उसका सारा शरीर छिल जायेगा। कपटी और कुटिल लोगों की भी ऐसी ही दुर्गति होती है। इसलिए उन्हें दुर्गुण छोड़कर अपनाना चाहिए। ये अन्योक्ति अलंकार का उदाहरण है।

सिकार की बेराँ कुतिया हगासी।

ऐन मौके पर सहायकों का धोखा देना बहुत ही कष्टकारक होता है। जिस प्रकार शिकार के अवसर पर कुतिया का इधर–उधर हो जाना अच्छा नहीं लगता है।

हगा लड़इया छींट कौ बागौ।

यह एक व्यंग्योक्ति उन लोगों पर है, जो देखने में बहादुरी की पोशाक धारण किए रहते हैं, किन्तु होते हैं वास्तव में डरपोक। जैसे कोई डरपोक स्यार बहादुरी का बाना पहने हुए है। छींट का बागौ दूल्हा या सैनिकों की पोशाक होती है।

हगू कुतिया ग्यारस उपासी।

निम्न कर्मा व्यक्तियों के धार्मिक आडम्बरों पर यह एक करारा व्यंग्य है। गंदी और अशुद्ध कुतिया एकादशी का व्रत रखे। यह एक मिथ्या प्रदर्शन करने वालों पर चुटीला व्यंग्य है।

हंस बरन बैठक भई, सुआ बरन किलकोट।
सिंघ बरन गर्जन भई, गदा बरन भई लोट।।

यह शराबियों की मण्डली पर एक व्यंग्योक्ति है। प्रारंभ में नशाखोरों की मण्डली शिष्ट लोगों की तरह शांत चित्त होकर बैठती है। फिर तोतों की तरह किलकोट और

हँसी मजाक होता है। नशा चढ़ जाने पर वे सब आपस में चिल्ला–चिल्ला कर गाली गलौज करने लगते हैं। फिर नशे की बेहोशी में चाहे जहाँ गधों की तरह लोट जाते हैं।

हाँके सें टट्टू निगै, सूँगें अतर बसाय।
पूँछें बेटा जानिए, तीनऊँ देय बहाय।।

हाँकने से जो घोड़ा चलता हो, सूंघने पर जो इत्र सुगंध देता हो और पूछने पर जिस बेटे के पिता का पता लगे। वे तीनों नदी में बहा देने योग्य हैं। वही घोड़ा सच्चा घोड़ा है जो सवार होते ही दौड़ जाये। वही अच्छा इत्र है जो दूर से सुगन्ध फैलाता रहे। वही अपने बाप का सच्चा बेटा है, जिसे देखते ही पिता का पता चल जाये।

हाँत भर लड़इया, नौ गज पूँछ।

सामर्थ्य से अधिक कार्यकलापों का विस्तार। स्यार की लम्बाई केवल एक हाथ की है और उसकी पूँछ नौ गज की। क्षमता से अधिक व्यक्ति के कार्यों का विस्तार आश्चर्यजनक होता है।

हाँती अपनी गैल चलो जात, उर कुत्ता भोंकत जात।

सामर्थ्यवान व्यक्ति अपने कार्यों में जुटे रहते हैं, उन्हें आलोचकों की चिन्ता नहीं रहती। हाथी का काम अपनी मस्त चाल में चलना है। कुत्तों के भौंकने से उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। कहाँ हाथी और कहाँ कुत्ते। प्रायः शक्तिशाली व्यक्ति गंभीर और शांत होते हैं, किन्तु ओछे लोग ज्यादा उछल कूद करते हैं।

हाँती कड़ गओ पूँछ रै गई।

अधिकांश कार्य पूर्ण हो गया। थोड़ा सा कार्य शेष रह जाता है। हाथी निकलने के बाद पूँछ अटक कर रह जाती है।

हाँती की झूल गदा पै नई लादी जात।

बड़े लोगों के कार्य छोटे लोगों की सामर्थ्य के बाहर होते हैं। हाथियों की साज–सज्जा गधों को सुशोभित नहीं होती। जिसका जो स्थान होता है, वह उसी जगह पर अच्छा लगता है।

हाँती के पाँव में सबके पाँव सभात।

बड़े लोगों के कारोबार में कई छोटे बड़ों का भरण–पोषण हो जाता है। जिस प्रकार हाथी के मोटे पाँव में अनेक पाँव अपने आप समा जाते हैं।

जा की जात के जौन हैं, ताकी पाँत के तौन।
बाघ बाज के चैनुआं, मार सिखाबै कौंन।।

जो जिस जाति के होते हैं। उनमें जातीय गुण अपने आप आ जाते हैं। सिंह और बाज के बच्चों को मारने की शिक्षा देने की आवश्यकता नहीं है। बड़े होने पर उनमें हिंसक गुण अपने आप आ जाते हैं।

जा धर सारे की चलैं, उर तिरिया की सीख।
सावन में हरबैल बिनु, तीनऊँ माँगें भीख।।

जिस घर में साले का बोलबाला हो और पत्नी की बात को महत्व दिया जाये और सावन के महीने में हाल–बैल न हो। इन तीनों को भीख माँगने के लिए विवश होना पड़ेगा।

पंडित केरी पोंथयाँ, ज्यों तीतुर कौ ज्ञान।
औरन सगुन बतात हैं, अपनौ फंद न जान।।

पंडित की पोथियाँ तीतुर के ज्ञान की तरह हैं, जो दूसरों को शकुन बताते हैं और स्वयं उसका उपयोग नहीं करते हैं।

डोर पकैया मोरे हात, बच्छा कूदैं नौ–नौ हात।

जब अनुशासन की डोर हाथ में रहती है, तब उपद्रव अपने आप शांत हो जाते हैं। जब बछड़े की डोर मालिक के हाथ में रहती है, तब बछड़े के कूदनें–फाँदने से कुछ नहीं होता है।

बड़े आदमी की एक बात।
बड़े घोडा की एक लात।।

महान व्यक्ति जो कह देते हैं, उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं वे सदैव वचनों पर आरूढ़ रहते हैं। एक बड़े घोड़े की लात आदमी को गिराने के लिए बहुत है।

बामुन पड़ा बरा उर दार।
जे भींजें सुख पाबैं चार।।

ब्राह्मण, भैंसा, बरा और दार को भिगोने में ही सुख प्राप्त होता है। जैसे–जैसे इनको भिगोया जाता है, ये फूलते ही जाते हैं।

बिन बैलन खेती करें, बिन भईयँन के रार।
बिना दुलइया घर करैं, चौदह साख लवार।।

बिना बैलों के खेती करने वाला, बिना भाइयों के लड़ाई ठानने वाला और बिना पत्नी के घर बसाने वाला चौदह पीढ़ियों तक मूर्ख रहता है।

बैपारी अरू पाहुनो, तिरिया और तुरंग।
अपनें हाथ संवारिये, लाख लोग होय संग।।

व्यापारी, मेहमान, स्त्री और घोड़े को अपने हाथ से ही संभालना चाहिए, चाहे लाखों लोग आपके साथ हों।

बैल चमकना जोत में, उर चमकीली नार।
जे बैरी हैं जान के, लाज रखैं करतार।।

उछल–कूद करने वाला बैल और चंचल, वाचाल स्त्री प्राणों के दुश्मन होते हैं। इनसे तो भगवान ही रक्षा कर सकता है।

भैंस जो जनमें पड़वा, बहू जो जनमें देह।
समय कुलच्छन जानिए, कातिक बरसे मेह।।

भैंस के पड़ा उत्पन्न होना, पुत्र–वधू के पुत्री का जन्म होना और कार्तिक महीने में पानी बरसना, अपशकुन सूचक माना जाता है। ये बुरे लक्षणों के प्रतीक हैं।

रत्ती–रत्ती साधै तौ द्वारैं हाँती बाँदैं।
रत्ती–रत्ती खोबै तौ द्वार बैठ कैं रोबैं।।

जो थोड़ी–थोड़ी बचत करते जाते हैं, वे धीरे–धीरे समृद्धशाली हो जाते हैं और उनकी शान–शौकत अलग दिखाई देने लगती है। जो थोड़ा–थोड़ा खोते जाते हैं। वे अपना सर्वनाश करके भिखारी बन जाते हैं।

राँड कौ साँड, कसाई कौ कुत्ता।
रधुआ भैंस चरै अलबत्ता।।

विधवा का पुत्र, कसाई का छूटा हुआ कुत्ता, छुटाई हुई भैंस ये किसी काम के नहीं होते और इन्हें व्यर्थ में ही खिलाना–पिलाना पड़ता है।

साजौ उधार दोऊ अशुभ, घर अँधियारी लाय।
ज्यों धोबी कौ कूकरा, घाट बाट घर जाय।।

साझेदारी का व्यापार और उधार लेना–देना दोनों ही अशुभ होते हैं। और ये घर में अंधकार ला देते हैं। जैसे धोबी का कुत्ता घर और घाट कहीं का नहीं रहता है।

साँपिन शूकर कूकरा, इनकी गति है एक।
कोटि जतन परबोधिए, तऊ न छोड़त टेक।।

सर्पिणी, सुअर और कुत्ता इनका एक जैसा स्वभाव होता है। इनको बार–बार समझाने पर भी अपनी आदत नहीं छोड़ते हैं।

साहब की अँगाई, घोड़ा की पिंछाई।
छिनरा की छाँयरी, सबरें बचाई।।

साहब के आगे से, घोड़े के पीछे से और व्यभिचारी की छाया से सदैव बचना चाहिए।

सिंहिन एक सपूत जन, सोवत पाँव पसार।
दसक पूत जन गद्दहिं, लादत धोबी भार।।

एक पुत्र पैदा करना गौरव का प्रतीक है। सिंहनी एक पुत्र पैदा करके शांतिपूर्वक सोती है। किन्तु गदही दस पुत्रों को पैदा करके धोबी के भार को ढोती रहती है।

सिंह पूँछ सर्पा मनी, पति बिरता की देह।
सूर कटारी विप्रधन, सिर कट्टहि सो लेय।।

सिंह की पूँछ, सर्प की मणि, पतिव्रता का शरीर, शूरवीर की कटार और ब्राह्मण का धन सिर काटने पर ही प्राप्त हो सकता है।

सीक ओइखौ दीजिए, जाखौं सीख सुहाय।
सीक न दीजै बाँदरैं, जरा मूँढ़ सौं जाय।।

शिक्षा उसी को देना चाहिए, जिसको शिक्षा अच्छी लगे। शिक्षा उस बंदर को नहीं देना चाहिए, जो क्रोध में आकर दूसरों की हानि कर बैठे।

सुआ पढ़ाऔ पींजड़ा, पढ़ गओ चारउ वेद।
जब सुद आई कुटंम की, रहा टेड़ कौ टेड़।।

पिंजड़े में बंद तोते को भले ही चारों वेद पढ़ा दिए जाएँ किन्तु जब उसे अपनी जाति का स्मरण हो आता है तो वह सब कुछ भूलकर अपनी ही बोली बोलने लगता है।

जार खौं जेरी, गँवार खौं लठा।
कोदन की रोटी खौं, भैंस कौ मठा।।

कँटीली झाड़ियों को जेरी जरूरी है। गँवार पर लाठी से ही नियंत्रण हो सकता है। कोदों की रोटी पचाने के लिए भैंस का मट्ठा जरूरी है।

जो जैसी करनी करें, सो तैसों फल पाय।
बेटी पौंची राजघर, बाबै बँदरा खाय।।

जो जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है। एक लोककथा में बताया गया है कि बेटी रनिवास में पहुँच गई और कुकर्मी बाबा को बंदर ने काट खाया।

चलिए फिरिए बैठ न रइये, करिये गोड़ा पाई।
दूद दही नित खाय बिलइया, कब–कब भैंस बिसाई।

आदमी को हरदम चल– फिरकर काम करते रहना चाहिए। बिल्ली तो भैंस के खरीदे बिना ही मनचाहा दूध–दही खाती रहती है।

मोर कबूतर पड़कुली, राजहंस तम चूर।
इनकी गति नारी निरख, कफ जानो भरपूर।

जब शरीर में कफ की मात्रा प्रबल होती है, तो उस व्यक्ति की नाड़ी मोर, कबूतर और हंस की चाल चलती है। नाड़ी की इस प्रकार की स्थिति देखकर कफ का प्रकोप समझना चाहिए।

हर्र बहेरौ आँवरौं, घी सक्कर सौं खाय।
हाँती दाबैं काँख में, सात कोस लै जाय।।

हर्र, बहेरा, आँवला के चूर्ण को घी शक्कर के साथ खाने से आदमी इतना शक्तिशाली हो जाता है कि हाथी को काँख में दबाकर सात कोस तक ले जा सकता है।

दाँत गिरे उर खुर घिसे, पीठ बोझ नहिं लेय।
ऐसे बूढ़े बैल खौं, कौंन बाँध भुस देय।।

जिसके दाँत गिर चुके हों और खुर घिस चुके हों, ऐसा बैल बोझ ढोने में असमर्थ रहता है। ऐसे बूढ़े बैल को बाँधकर कौन भूसा खिलाता रहेगा?

नाटा खोटा बैंचकैं, चार धुरन्धर लेब।
अपनों काम निकार कैं, औरें माँगे देब।।

छोटे और हल्के बैल को बेंचकर चार अच्छे बैल खरीद लेना चाहिए, जिनसे आपकी खेती हो जाएगी और दूसरों का भी काम चलाया जा सकता है।

बैल मुसरया जो कोउ लेबै, राजभंग पल में कर देबैं।
तिरिया बालक सब छुट जाय, भीख माँग कैं घर–घर खाय।।

जो किसी उद्दण्ड बैल को खरीदकर खेती करते हैं, उनका राज–पाट पल भर में नष्ट हो जाता है। पत्नी, घर–परिवार सब छूट जाता है और घर–घर भिक्षा माँगकर पेट भरना पड़ता है।

रात रतेबा न मिलें, छै मइना नों नौंन।
पूँछत चील गमार सों, ऐसों बैला कौंन।।

जिस बैल को चरने के लिए रात में घास न मिले और छह महीने तक जिसे नमक न दिया जाये, वह जल्दी ही मरकर चीलों का भोजन बन जायेगा। चीलें ऐसे बैलों का पता लगाती रहती हैं।

मरखा बैल और टिमकुल जनीं।
इनके मारैं रोबैं धनीं।।

मारने वाला बैल और तड़क–भड़क से रहने वाली औरत अपने स्वामी को कष्ट देती रहती हैं। कुछ लोग इसी कहावत को इस प्रकार भी कहने लगते हैं –

बैल लरखना, चमकुल जोय।
वा घर उरहन नित्तई होय।।

मारने और लड़ने वाला बैल और चंचल स्त्री जिस घर में होती है, उस घर में रोज उलाहने आते रहते हैं।

मेदिनी मेघा भैंस किसान, मोर पपीहा घोड़ा धान।
बाढ़यो मच्छ लता लपटानीं, दसों सुखी जब बरसें पानीं।।

पृथ्वी, बादल, भैंस, किसान, मोर, पपीहा, घोड़ा और धान की फसल, मच्छर तथा लताएँ पानी बरसने पर हरे–भरे हो जाते हैं।

सींग मुड़े माथौ उठो, मौं कौ होबे गोल।
रोम नरम चंचल करन, तेज बैल अनमोल।।

जिसके सींग मुड़े हुए हों, माथा उठा हुआ हो, मुँह कुछ गोल हो, जिसके रोम मुलायम और कान चंचल हों। ऐसा बैल बहुत तेज और मूल्यवान होता है।

नीति आधारित

अपने अनुभव और पूर्व ज्ञान के आधार पर समाज के वयोवृद्ध व्यक्तियों ने लोक कल्याण के लिए चिंतन करते हुए लोक नीति निर्धारित की है, जो कहावतों के रूप में लोक मुख में सुरक्षित हैं। जो आज भी सारे समाज का मार्ग–दर्शन कर रही हैं। यदि इन्हें लिपिबद्ध नहीं किया गया तो यह मूल्यवान सामग्री धीरे–धीरे विलुप्त हो जायेगी। लोक–नीति पर आधारित कुछ कहावतों के उदाहरण प्रस्तुत हैं –

अँदरा की लुगाई, जी चाय में रमाई।

जो व्यक्ति आँखों से अंधे या घर–गृहस्थी से उदास रहते हैं। उनकी घर–गृहस्थी

और पत्नी का दुरुपयोग होता रहता है। यहाँ तक कि उसकी पत्नी के साथ कोई भी रमण करता रहता है।

अकेलो पूत, चूले में मूत।

अकेला पुत्र अधिक लाड़–प्यार के कारण बिगड़ जाता है। वह आये दिन उपद्रव करके माता–पिता को कष्ट देता रहता है। उसके अनुचित कार्यों के कारण घर में रोज उलाहने आते रहते हैं।

अक्कल बिन पूत लठेंगर से।
गुन बिन बिटिया डेंगुर सी।।

बुद्धिहीन पुत्र लट्ठ के समान निरर्थक और गुणों के बिना लड़की डेंगुर के समान बाधाकारक होती है। इधर–उधर भागने वाले मवेशियों के गले में एक लम्बा लकड़ी का टुकड़ा बाँध दिया जाता है, जिसके कारण वे जल्दी चल फिर नहीं पातीं, जिन्हें डेंगुर कहा जाता है।

अदकुचलों सबसे बुरओ, दोई दीन सैं जाय।

जो व्यक्ति किसी विषय का थोड़ा सा ज्ञान रखता है, वह किसी काम का नहीं होता है। वह किसी कार्य में पूर्ण सफल नहीं हो पाता है और न ही उसे समाज में समुचित आदर–सत्कार प्राप्त होता है।

अँधाधुंध दरबार में, गदा पँजीरी खाँय।।

जिस शासन में भले–बुरे और उचित–अनुचित का कोई भेद नहीं होता, वहाँ मूर्ख और कुपात्र लोगों को आनंद प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हो जाता है।

अधिक सियानों, जाय ठगानों।

जो अपने आपको बहुत चतुर और समझदार समझता है। वह एक न एक दिन बुरी तरह से ठग लिया जाता है। यह एक तरह की व्यंग्योक्ति है।

अनी चूकें हजार बर्स की उम्मर होत।

यदि सिर पर आया हुआ खतरा टल जाता है तो फिर आयु की वृद्धि अपने आप हो जाती है। यदि तलवार की धार से बच गये, तो फिर उसे मारने वाला कोई नहीं है।

अपन पाँड़े अन्याई, दूसरन खौं ग्यान बताई।

पंडित जी स्वयं तो अन्याय में लीन रहा करते हैं और दूसरों को ज्ञानोपदेश दिया करते हैं। कुछ इसी तरह की एक और कहावत बुंदेलखण्ड में प्रचलित है–

पंडित वैद मसालची, इनकी उल्टी रीत।
औरें गैल बताय कैं, अपुन नाकबैं भीत।।

बाबा तुलसी भी यही बात मानस में कह गए हैं–

पर उपदेश कुसल बहुतेरे, ते आचरहिं नर न धनेरे।
अपनी अटकी पै गदा सें कक्का कनें परत।।

अपनी स्वार्थ सिद्धि करने के लिए छोटों का भी अधिक सम्मान करना पड़ता है। स्वार्थ सिद्धि के बाद फिर लोग उनसे संबंध विच्छेद कर देते हैं।

अपनी अपनी दार, न्यारी–न्यारी टार।

अपनी–अपनी दाल अलग अलग पकाना चाहिए। अपना उत्तरदायित्व आदमी को स्वयं संभालना चाहिए। पराश्रित रहना उचित नहीं है।

अपनें अटकें, सौत के मायकें जानें परत।

अपना काम संभालने के लिए कभी सौत के मायके में जाना पड़ता है। कार्य सिद्ध करने के लिए कभी–कभी विपरीत परिस्थितियों से समझौता करना पड़ता है। अवसर के अनुसार अपने आपको बदलते रहना चाहिए।

अपनों–अपनों सबै दिखात।

सबसे पहले लोग अपना काम करते हैं। इसके बाद वे दूसरों की ओर देखते हैं। ये तो मानव स्वभाव है।

अपनों खता खुदई नईं फोरो जात।

लोग अपने कष्ट का निवारण स्वयं नहीं कर पाते हैं। अपनी विपत्तियों को दूर करने के लिए दूसरों का सहयोग अपेक्षित है।

अपनों भात पराए मड़वा तरें नईं परसो जात।

ऐसा कभी नहीं होता कि लोग अपने घर पर भात तैयार करके दूसरे के मण्डप के नीचे खाने जाये। आपनी सामग्री का उपयोग अपने ही घर पर करना उचित है। कुछ लोग पराए धन का उपयोग अपने दरवाजे पर करके झूठी वाहवाही लूट लेते हैं।

अपनौ दाम खोटौ, तौ परखइया खौं का दोस।

यदि अपनी कोई वस्तु खराब है, तो इसमें परखने वाले को दोषी ठहराना न्याय संगत नहीं है। सबसे पहले अपनी वस्तु के दोषों को दूर करते रहना चाहिए। यदि अपना सोना अशुद्ध है, तो कसौटी उसे शुद्ध नहीं बना सकती है।

अपनों पानी लैकैं मुरार खोदन नईं जाव जात।

अपना पानी लेकर कोई मुरार खोदने के लिए नहीं जाता। मुरार के आस–पास तो पानी ही पानी भरा रहता है। ऐसे लोग प्रायः मूर्ख ही कहे जाते हैं, जो उपलब्ध साधनों को छोड़कर अन्य साधन जुटाते फिरते हैं।

अमियाँ निमुआ बानियाँ, मसकें सें रस देत।

जिस प्रकार आम और नींबू को मसकने से रस निकलता है, उसी प्रकार बनिया को दबाव डालने पर ही पिघलता है, अन्यथा उसका व्यवहार सदैव रूक्ष बना रहता है।

आँखन देखत माछी नईं खाई जात।

कोई अपनी आँखों से देखते हुए मक्खी नहीं निगलता। कोई आदमी जान बूझकर गलत काम नहीं करता। लोग प्रायः कुकर्म से दूर रहने का प्रयास करते हैं।

आग लगन्ते झोपड़ा, जो निकसें सो सार।।

सर्वनाश होने पर जो कुछ बचे सो उसी में संतोष करना उचित है।

आँदरन में कानें राजा।

मूर्खों की मण्डली में थोड़े से जानकार लोग नेतृत्व किया करते हैं।

आस बिरानी जो करें वे होतन मर जाँय।

दूसरों के भरोसे पर जीने वाले लोगों का तो मर जाना ही अच्छा है। स्वाभिमान से जीते हुए अपने पौरुष पर ही भरोसा रखना चाहिए। पराश्रित जीवन तो निरर्थक है।

आलसी निगइया असगुन की बाठ हेरैं।

चलने वाला यदि आलसी हो तो वह न चलने के लिए कोई न कोई बहाना खोजता है। वह सोचने लगता है कि यदि कोई अपशकुन हो जाता तो हमें चलना नहीं पड़ता।

उकतानें काम नसानें, धीरज धरें सियाँनें।

प्रायः चतुर लोग धैर्य धारण किया करते हैं क्योंकि, अधीरता से प्रायः काम बिगड़ता है।

उखरी में मूँढ़ दई तौ मूसरन कौ का डर।

जब ओखली में सिर डाल दिया तो फिर मूसलों से क्या डरना है? जानबूझकर आदमी जब खतरनाक स्थान पर पहुँच जाता है तो फिर आघातों से भयभीत नहीं होता है।

उगरिया पकर कैं कोंचा पकरो जात।

अंगुली पकड़ने के बाद कलाई पकड़ी जाती है। किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए क्रमशः प्रगति की ओर अग्रसर होना उचित है।

उठी हाट आठये रोजैं लगत।

उठी हुई हाट आठवें दिन फिर लग पाती हैं। समय निकल जाने के बाद पुनः अवसर बड़ी कठिनाई से प्राप्त होता है।

उदार वारौ पासंग नईं देखत।

बनिया से उधार सौदा लेने वाले लोग बनिया की तौल पर ध्यान नहीं दे पाते। उन्हें इसी में संतोष रहता है कि कम से कम सौदा उधार तो मिल गईं।

ऊँगते खौं सब पालागन करत।

उगते हुए सूर्य को सब प्रणाम करते हैं। प्रगति की ओर अग्रसर होने वाले व्यक्ति का सभी लोग सम्मान करते हैं।

एक सादैं सब सदैं, सब सादैं सब जाय।।

यदि समर्पण भाव से एक की साधना की जाये तो सब अपने आप सध जाते हैं। सारे लोगों को एक साथ साधने से सब कुछ चला जाता है।

ऐई मौं सें पान मिलत, ऐई मौ सें पनइयाँ।।

मधुर वाणी के प्रभाव से मनुष्य को मान–सम्मान प्राप्त होता है। इसी वाणी की कटुता के कारण आदमी को जूते पड़ते हैं। अतः वाणी पर सदैव नियंत्रण रखना चाहिए। कुछ इसी तरह की शिक्षा संत कबीर भी दे गए हैं –

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करें आपहिं शीतल होय।।

अम्बा फलें तौ नव चलें, अण्ड फलें इतराय।
अति कौ फूलौ सहजनौं, जरा मूँढ़ सों जाय।।

आम वृक्ष फल आने पर झुकता है और अरण्ड का वृक्ष फल आने पर इतराता है, किन्तु अधिक फूलने वाले उस सहजने को जड़–पेड़ से नष्ट कर दिया जाता है। अति कहीं भी अच्छी नहीं होती। कहा भी कि 'अति सर्वत्र वर्जयेत्।'

अधिक सिदाई परहरों, सूदे टका बिकाय।
टेड़े लागे पालकी, बिकै पचीसन जाय।।

अधिक सीधापन अच्छा नहीं होता। लोग सरल व्यक्ति को हेय समझकर कोई महत्त्व नहीं देते हैं। किन्तु टेढ़ा बाँस पालकी में लगकर मूल्यवान हो जाता है। अतः अधिक सीधापन त्याग देना ही उचित है। कविवर बिहारी के दोहे में भी इस कथन की पुष्टि की गई है –

बसें बुराई जासु तन, ताही कौ सम्मान।
भलों–भलों कह छोड़िए, छोटे ग्रह जपुदान।।

बाबा तुलसी भी मानस में कह गए हैं –

टेड़ जान संका सब काहू, वक्र चंद्रमहिं ग्रसै न राहू।

आठ गाँव के साव हैं, बीस गाँव के राव।
अपनों काम जो न सरैं, तो ऐसी तैसी में जाव।।

चाहे कोई कितना ही बड़ा आदमी क्यों न हो। चाहे कोई आठ गाँव का साहूकार और बीस गाँव का राजा ही क्यों न हो। जो अपने काम न आये, उससे हमें क्या प्रयोजन। उसके बड़प्पन से हमें क्या लेना देना है।

आवत–आवत सब भले, आवत भले न चार।
विपत बुढ़ापौ आपदा, और अचीती धार।

आते–आते हर वस्तु अच्छी लगती है, किन्तु चार वस्तुओं का आना अच्छा नहीं लगता है। और वे चार हैं– विपत्ति, बुढ़ापा, आपदा और अनायास संकट।

आशा मान महत्व उर, बालापन कौ नेहु।
जे तीनऊँ सबरे गये, जबहिं कहौ कछु देहु।।

आशा, मान, सम्मान और बचपन से चला आ रहा प्रेम व्यवहार आदि तीनों तभी चले जाते है, जब कुछ देने की बात कही जाती है या कोई चीज मँगाई जाती है। इसी तरह की बात कविवर रहीम ने भी एक दोहे में कही है –

आव गई आदर गया, नैनन गया सनेह।
जे तीनों तबहीं गये, जबई कहा कछु देह।।

आँख की तिरिया, गाँठी के दाम।
बेई बखत पै आबैं काम।।

आँखों के सामने रहने वाली पत्नी और गाँठ में रहने वाले रुपये ही समय पर काम आते हैं। इनका ही समय पर सदुपयोग हो पाता है।

उजरों उजरों सब भलों, उजरे भले न बार।
नीकी कारी कामरी, कारी भली न नार।।

उजली और श्वेत वस्तुएँ सब अच्छी लगने लगती हैं, किन्तु सफेद बाल अच्छे नहीं लगते। काली कामरी अच्छी लगती है, किन्तु काली औरत अच्छी नहीं लगती है। कविवर केशव ने अपने सफेद बाल देखकर कहा था कि मेरे सफेद बाल देखकर सुंदरियाँ मुझे बाबा कहने लगीं हैं। उनका यह सम्बोधन मुझे कष्टप्रद प्रतीत हो रहा है–

केशव केसन असकरी, जस अरिहू न कराहिं।
चंद्रवदनि मृगलोचनी, बाबा कहि–कहि जाहिं।।

ऊँग न देखै खड़री खाट, प्यास न देखे धोबी घाट।
प्रेम न देखैं जात कुजात, भूक न देखैं जूठौ भात।।

नींद आने पर लोग बिना बिस्तर की ही खटिया पर लेट जाते हैं। प्यास लगने पर लोगों को धोबी घाट का भी ध्यान नहीं रहता। प्रेम करते समय युवकों को जाति–कुजाति का ध्यान नहीं होता और भूख लगने पर लोग जूठे भात को भी प्रेम–पूर्वक खा लेते हैं। ये सब आवेश और अनिवार्यता की स्थिति है। उस समय उन्हें भले–बुरे का कोई ध्यान नहीं रहता है। संतुष्टि आवश्यक है।

ऊँचौ पानी न टिकैं, नीचे ही ठहराय।
नीचौ होय सो भर पियै, ऊँचौ प्यासौ जाय।।

प्रायः पानी ऊँचाई पर नहीं रुक पाता है। पानी ऊपर से नीचे की ओर प्रवाहित होकर नीचे ही रुकता है। जो नीचे रहता है, वह जीभर पीकर संतुष्ट हो जाता है। इससे ऊपर वाले को तो प्यासा ही जाना पड़ता है।

इस्क मुस्क खाँसी खुसी, सेवन मदिरा पान।
जे नौ दाबें ना दबें, पाप–पुन्य अरु स्यान।।

प्रेम, कस्तूरी की गंध, खाँसी, प्रसन्नता, मदिरा सेवन की गंध, पान, पाप–पुण्य और चतुरता ये नौ चीजें किसी भी तरह छिपाये नहीं छिपती। ये तुरन्त ही उजागर हो जाती हैं।

यही बात कविवर रहीम भी अपने एक दोहे में कह चुके हैं –

खैर खून खाँसी खुशी, बैर–प्रीति मदपान।
रहिमन दाबें ना दबें, जानत सकल जहान।।

कुछ विद्वानों ने गायत्री मंत्र को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करते हुए कहा है –

एक तरफ चार वेद, एक तरफ चातुरी।
एक तरफ सब मंतर, एक तरफ गात्तरी।।

ओछौ मंत्री राज बिनासै, ताल बिनासै काई।
खान साहिबी फूट बिनासै, घघ्घा पैर बिमाँई।।

संकीर्ण विचार वाले मंत्री की सलाह के कारण राज्य नष्ट हो जाता है। अधिक काई बढ़ जाने के कारण तालाब नष्ट हो जाता है। पारस्परिक फूट के कारण परिवार का यश और सम्मान नष्ट हो जाता है। बिंवाई के कारण पैरों की स्थिति बिगड़ जाती है।

औरबे में बानियाँ, पैरबे में पठान।
खाबे में बामन, रोबे में किसान।।

धन संग्रह करने में वणिक, तड़कीले–भड़कीले कपड़े पहिनने में पठान, सुस्वाद भोजन करने में ब्राह्मण और विपदाए। सहन करने में किसान परिपक्व होता है। बुंदेलखण्ड में इसी के जोड़ की एक कहावत और प्रचलित है –

लाँच घौंच सें लाला मानें, बामुन पूड़ी खबाये सैं।
आव भाव सें ठाकुर मानें, और जात पनयाये सैं।।

कथा भागवत सुनकैं, भौत भई खुसी।
हृदय ग्यान लागा नहीं, चिंता राँड़ घुसी।।

जिस व्यक्ति के अंदर चिंता घर कर जाती है, उसे कथा भागवत सुनकर रंचमात्र भी ज्ञान प्राप्त नहीं होता। उसका मन चिंता में ही लगा रहता है।

करैं बुराई सुख चहै, कैसें पाबैं कोय।
बोबैं बीज बबूर कौ, आम कहाँ से होय।।

ये प्रकृति का नियम है। जो जैसी करनी करेगा, उसे वैसा ही फल प्राप्त होगा। बुराई करने पर यदि कोई सुख चाहे तो यह संभव नहीं है। भला सोचिए कि बबूल का बीज बोने पर आम कहाँ से पैदा हो सकता है?

कुछ इसी तरह की बात संत कबीर भी एक दोहे में कह गए हैं–

जो जैसी करनी करैं, सो तैसों फलु पाय।
बोया पेड़ बबूल का, आम कहाँ ते खाय।।

कुछ विद्वानों ने कहा है कि घर में विवाह योग्य सयानी पुत्री रखना उचित नहीं है। उसे देखकर लोग गालियाँ दिया करते हैं। यदि कोई अभद्र घटना घटित होती है तो माता–पिता को ही दोषी माना जायेगा –

कह न सकै समझें नहीं, देत देख सब गार।
स्यानी सुता न राखिए, सुरजन कही विचार।।

कागद केला पान अरु दासी दुर्जन दाम।
जे नौं दाबे ही भले, रहुआ महुआ आम।।

कागज, केला, पान, दासी, दुष्ट व्यक्ति, धन, नौकर, महुआ और आम इन नौ को दबाकर रखना ही उचित है।

किलौकोट मंदिर महल, द्विज क्षत्री गज बाज।
जे नौ ऊँचे चाहिए, वैद बराई नाज।।

किला के परकोटा, मंदिर महल, ब्राह्मण, क्षत्री, हाथी, घोड़ा, वैद्य, गन्ना और अनाज ये नौ हमेशा ऊँचे होना चाहिए।

कुलिस कतरनी कुटिल जन, तीन करें गढ़फोर।
सूज सुहागा सुधर नर, तीन करें इक ठोर।।

फरसा, कैंची तथा कुटिल जन ये तीनों काटने का काम करते हैं। जबकि सूजा, सुहागा और चतुर व्यक्ति ये तीन जोड़ने का काम करते हैं।

कैं धन मिलै धाय–धायकैं, धन मिलैं बिरानौ पाय।
कै धन मिलैं गऊ के कुच्छ, कै धन मिलै नदी के कच्छ।।

धन प्राप्त करने के चार साधन हैं। प्रथम तो कठिन परिश्रम अथवा भाग्यवश पराया धन, गो–पालन और उपजाऊ भूमि पर कृषि करना। इसी तरह की एक कहावत और प्रचलित है –

कै धन मिलें धाये–धाये, कै धन मिलैं पराया पाये।
कै धन मिलें नदी के कच्छन, कै धन मिलैं बहू के लच्छन।।

ऊमर फोरो न पखा उड़ाव।

गुप्त और अनैतिक कार्यों का उजागर करना लोक निंदा का कारण बन सकता है। अतः उस गुप्त भेद को गुप्त रखना ही उचित है।

कम खानें और गम खानें,
न हकीम कैं जानें न हाकिम कैं जानें।

कम भोजन करने वाले और दूसरों की दो भली–बुरी सहन करने वालों को न चिकित्सक के यहाँ उपचार कराना पड़ेगा और न अधिकारियों के कार्यालयों के चक्कर काटने पड़ेंगे। ऐसे लोग सुखी और स्वस्थ जीवन व्यतीत करते रहते हैं।

कलारी में हुन दूद पियौ, लोग तो दारूअईं जानें।।

यदि कोई मदिरालय में दूध पियेगा तो देखने वाले लोग तो उसे दारू ही समझेंगे। अतः स्थान के अनुरूप कार्य करना उचित है। अन्यथा कभी–कभी अर्थ का अनर्थ हो जाने की संभावना होती है।

काया राखें धरम, और पूँजीं राखैं बंज होत।।

जब मनुष्य का शरीर स्वस्थ होता है, तभी धर्म का विधिवत् निर्वाह हो पाता है। पूँजी सुरक्षित रखने पर ही व्यापार किया जा सकता है। बिना पूँजी के व्यापार कैसे किया जा सकता है।

कुआँरी के भाग्गन, ब्यावता मर जात।।

भाग्य प्रबल होता है। कभी–कभी किसी भाग्यवान कन्या के कारण विवाहिता पत्नी मर जाती है। इस ईश्वरीय विधान को कोई टाल नहीं सकता।

खाँय खसम कौ गीत गाँय यार के।

कुछ महिलाएँ ऐसे नीच स्वभाव की होती हैं कि भोजन तो पति की कमाई का करती हैं और प्रशंसा अपने यार की किया करती हैं। यह कृतघ्नता नहीं तो और क्या है।

खीर खौं सौंज, महेरी खौं न्यारे।

कुछ लोग भले भले के साथी होते हैं और दुर्दिन आने पर साथ छोड़ देते हैं। इसी कारण से यह कहावत प्रचलित हुई है। कुछ लोग मीठी–मीठी खीर खाने के लिए एक साथ मिल–जुल जाते हैं और खट्टी महेरी मिलते ही अलग हो जाते हैं।

गाँठी बंधन वे करें, जिनकें राम न होंय।।

जिनको भगवान पर विश्वास नहीं होता, वही लोग अपने भविष्य की चिंता करते हुए थोड़ा–थोड़ा बचाकर रखते जाते हैं। किन्तु आस्थावान व्यक्ति भविष्य की कोई चिन्ता नहीं करता और सोचता है कि जो कुछ भगवान करेगा, सो अच्छा ही करेगा। किसी कवि ने सत्य ही कहा है –

देने वाला और है, देता जो दिन रैंन।
लोग भरम हम पर करें, तासें नीचे नैंन।।

गाँव जानिये बसें, सोनो जानिए कसें।

किसी गाँव में निवास करने पर ही उसकी सामाजिक व्यवस्था, उसके वैभव और समृद्धि का पता लगाया जा सकता है। जिस प्रकार सोने को कसौटी पर कसने के बाद ही उसके खरेपन का पता लगाया जा सकता है।

गुर न देओ तो गुरीरी बातें तौ करौ।

यदि हम किसी को मीठा गुड़ खाने को नहीं दे सकते तो मुँह से कम से कम गुड़ के समान मीठे वचन तो बोल ही सकते है। जिन्हें सुनकर दूसरों को सुख मिलता रहे। यह शिक्षा उत्तम लोक व्यवहार की प्रतीक है। संस्कृत में भी कहा गया है– वचने किं दरिद्रता।

घरई के कुरवा सें आँख फूटत।

कभी–कभी अपने घर के छप्पर में लगे हुए कुरवा से भी आँख फूट जाती है। कभी–कभी घर का सदस्य भी घातक हो जाता है और अपने ही आदमी की भारी हानि कर बैठता है। इसी भाव से मिलती जुलती एक कहावत और प्रचलित है–

घर कौ भेदी लंका ढाबै।

गज गेंड़ा लेंड़ा पुरुष, एकई बार गिरन्त।
क्षत्रिय सूर सपूत नर, गिर–गिर उठत अनंत।।

हाथी, गेंडा तथा कायर व्यक्ति एक ही बार गिरकर समाप्त हो जाते हैं, किन्तु क्षत्रिय, शूरवीर और सपूत गिर–गिर कर उठ–उठ पड़ते हैं।

गुरु सें कपट, मित्र सें चोरी।
कै होय निरधन, कै होय कोढ़ी।।

जो व्यक्ति गुरु के साथ कपट व्यवहार और अपने प्रिय मित्र के साथ दुराव रखते हैं, वे निर्धन अथवा कोढ़ी हो जाते हैं।

घर में कबहुँ ना मिलैं, नाम मान नौं निद्धि।
जब ही जाय बिदेस नर, पाय मान अरु सिद्धि।।

प्रायः अपने घर– गाँव में रहकर आदमी को मान–सम्मान और समृद्धि प्राप्त नहीं होती है। जब आदमी अपना घर छोड़कर परदेश चला जाता है, तब उसे वहाँ पर्याप्त मान–सम्मान और सफलता प्राप्त हो जाती है।

इसी के समानान्तर एक कहावत और प्रचलित है –

गाँव को जोगी जोगड़ा, आन गाँव कौ सिद्ध।

घर बिगारै सारौ, भीत बिगारै आरौ।
रोग लियाबैं खाँसी, रार करावैं हाँसी।।

प्रायः घर में साले का निवास दुखदायक होता है। आले के कारण दीवाल कमजोर हो जाती है। खाँसी रोग की जड़ है और हँसी मजाक से विवाद उत्पन्न हो जाते हैं।

चंदन तरु की बासते, सब चंदन हो जात।
तैसई एक सपूत तें, सबरौ कुटम अघात।।

चंदन के वृक्ष की सुगंध के कारण सारा वातावरण सुगंधित हो जाता है। जिस प्रकार एक सपूत के कारण सारा परिवार कीर्तिमान और उज्ज्वल हो जाता है।

चातुर खौं चिंता घनी, नहिं मूरख खौं लाज।
सर औसर जानें नहीं, पेट भरें सैं काज।।

चतुर व्यक्ति को अपने कर्त्तव्य निर्वहन और लोक व्यवहार की विशेष चिंता रहती है। किन्तु मूर्ख व्यक्ति को तो लोक लाज का कोई ध्यान नहीं रहता। उसकी दृष्टि तो केवल उदर–पोषण की ओर रहती है।

चाव घटै नित घर के जाँय, भाव घटै कछु मुख सैं चाँय।
रोग घटैं कछु औसध खाँय, ज्ञान घटै कुसंगत पाँय।।

किसी के यहाँ बार–बार घर जाने से आदर–सत्कार में अंतर आ जाता है। मुँह से कुछ माँगने पर प्रेम और व्यवहार में कमी आ जाती है। समुचित औषधि का उपयोग करने से रोग दूर हो जाता है। कुसंगति प्राप्त होने पर ज्ञान और बुद्धि नष्ट हो जाती है।

चिंता ऐसी डाकिनी, काट करें जौ खाय।
वैद बिचारौ का करें, काँ तक दवा लगाय।।

चिंता ऐसी डाकिनी है, जो कलेजे को काट–काटकर खाती रहती है। यह एक ऐसा रोग है, जिसका कोई उपचार नहीं है। महाकवि जयशंकर प्रसाद ने भी 'कामायनी' महाकाव्य के चिंता सर्ग में कहा है –

ओ चिंता की पहली रेखा, अरी विश्व बन की व्याली।
ज्वालामुखी स्फोट सी भीषण, प्रथम कंप सी मतवाली।।

चुप रैबे में चैंन है, ऐन मोय दिखराय।
रे मन अधिक न बोलिए, अत बोलैं पत जाय।।

चुप रहना सर्वाधिक सुखदायक होता है। किसी को अपराध करते हुए भले ही आँखों से देख लिया जाये, फिर भी चुप रहना उचित है। अधिक बोलने से मान–मर्यादा नष्ट हो जाती है।

छाजे की बैठक बुरी, परछाँही की छाँह।
नियरे कौ रसिया बुरौ, रोज पकरबै बाँह।।

छत के ऊपर की बैठक अच्छी नहीं होती। परछाई की छाया पर विश्वास नहीं होता, जो समय–समय पर घटती–बढ़ती रहती है। अपने समीप रहने वाला रसिया (प्रेमी) ठीक नहीं होता, जो रोज–रोज बाँह पकड़ने का प्रयास करता है। इन कृत्यों से लोक निन्दा का भय रहता है। ये मूल्यवान शिक्षा मानव–जीवन के लिए उपयोगी है।

छिनरा चोर जुँआरी,
इनसें गंगा हारी।

व्यभिचारी, चोर और जुआ खेलने वाले घोर पापी होते हैं। इनमें सुधार होना कठिन है। इनको तो गंगा भी पवित्र नहीं कर सकती।

छोड़िया न जुबान, खैंचिये न कमान।
खेलिये न जुआ, फाँदिये न कुआँ।।

मनुष्य को दिया हुआ वचन नहीं छोड़ना चाहिए। बात–बात पर आक्रोशित होकर कमान नहीं खींचना चाहिए। जुआ खेलना और कुआँ का फाँदना भी उचित नहीं है। मानस में भी कहा गया है –

रघुकुल रीत सदा चलि आई, प्राण जाय पर वचन न जाईं।

जब बिगरें तब सुधर नर, का बिगरेंगे क्रूर।
मठा बिचारौ का बिगरै, जब बिगरैं तब दूद।।

प्रायः अच्छे घरों के लोग ही बिगड़ जाते हैं। क्रूर और कुटिल लोग क्या बिगड़ेंगे। बिगड़ेगा तो दूध, भला मठा का क्या बिगड़ सकता है।

जल में दोष, करम में कींरा।
जाँ देखौ जाँ हीरई हीरा।।

कुछ लोगों में तो केवल दोषों को ही देखने की आदत होती है। उनकी दृष्टि में संसार में कोई भली वस्तु है ही नहीं। वे तो जल में दोष और कर्म में कीड़े खोजने लगते

हैं। सच पूछा जाये तो जहाँ देखिए, वहाँ हीरे ही हीरे भरे पड़े हैं। ये लोगों का दृष्टि दोष ही मानना चाहिए।

जाके पाँव न फटी विमाई।
वो का जानें पीर पराई।।

जिसको दुख और दर्द का अनुभव नहीं है, वो भला दूसरों के दुख–दर्द को कैसे समझ सकता है। ये तो भुक्त–भोगी का ही काम है।

जीके जैसे बाप मताई, ऊके ऊसई लरका।
जाँके जैसे नदिया नारे, उनके ऊसई भरका।

जिसके जैसे माता–पिता होते हैं, उनकी वैसी ही संतान होती है। जिधर के जैसे नदी नाले होते हैं, उनके वैसे ही गड्ढे और खाइयाँ होती हैं।

जीकौं जौन सुभाव, जाय न जीसैं।
नीम न मीठे होय, खाव गुर घीसैं।।

जिसका जो जैसा स्वभाव होता है। उसमें परिवर्तन करना कठिन होता है। जिस प्रकार नीम को गुड़ और घी के साथ खाने पर उसका कड़वापन समाप्त नहीं होता।

जुर जाचक उर पाँहुनौ, चौथों मांगन हार।
लाँघन तीन कराय दें, फेंर न आबैं द्वार।।

ज्वर, याचक, अतिथि और उधार माँगने वाले को यदि तीन बार लौटा दिया जाये, तो फिर ये आपके दरवाजे पर लौटकर नहीं आयेंगे।

जैसें फूल गुलाब कौ, सूखों तऊ बसाय।
तैसी प्रीति सुशील की, दिन पर दिन अधिकाय।

जिस प्रकार गुलाब का फू, सूख जाने पर भी सुगंधित बना रहता है। उसी प्रकार सुशील व्यक्ति का प्रेम दिन पर दिन बढ़ता ही जाता है। घटने का तो प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता।

जैसों अन जल खाइये, तैसों ही मन होय।
जैसों पानी पीजिए, तैसी बानी होय।।

जैसा आप अन्न खायेंगे, तैसी ही आपकी बुद्धि और मन बन जायेगा। जैसा आप पानी पियेंगे, वैसी ही आपकी वाणी में परिवर्तन हो जाएगा।

जो सुख चाहौ देह खौं, बातें त्यागौ चार।
चोरी चुगली जामनी और पराई नार।

यदि आप अपने शरीर को सुख देना चाहते हो तो इन चार का परित्याग कर देना चाहिए और वे चार हैं– चोरी, चुगली, जमानत और पराई स्त्री।

जो न मानें बड़न की सीख,
लैं खपरिया माँगें भीख।

जो अपने बड़े बूढ़ों और बुजुर्गों की शिक्षा पर ध्यान नहीं देते, उनकी स्थिति सोचनीय हो जाती है, और उन्हें उदर पोषण के लिए भिक्षावृत्ति का आश्रय लेना पड़ता है।

जो धन जुरें अधर्म सें, बरस दसक ठहराय।
बरस ग्यारवीं लगत ही, जरा मूँढ़ सें जाय।।

अधर्म से अर्जित किया हुआ धन, केवल दस वर्ष तक ही रुक पाता है। ग्यारवाँ वर्ष लगते ही वह समूल नष्ट हो जाता है। अतः अधर्म की कमाई से बचने का प्रयास करना चाहिए।

लोभी कौ धन लाबर खाय,
और बचें सरकारें जाय।

लोभी के धन के उपयोग झूठे और पाखण्डी लोग किया करते हैं। इसके बाद भी जो बचता है, उस पर शासन का अधिकार हो जाता है।

तिरिया तोमें तीन गुन, औगुन हैं लख चार।
मंगल गाबै सत रचैं, कोखन उपजै लाल।।

हे स्त्री! तुममें चार लाख अर्थात् अनेक अवगुण भरे पड़े हैं। केवल तुम में तीन गुण विशेष महत्त्वपूर्ण हैं जिनके कारण तुम्हारी पूजा होती है। और वे हैं कि तुम मंगलदायिनी हो, ममतामयी हो और तुम्हारी कोख से रत्न उत्पन्न होते हैं।

तिरपट खटिया, बत कट जोय।
ऐसी राम करें, बैरी के न होय।।

टेढ़ी–मेढ़ी चारपाई और पति की बात काटने वाली पत्नी अच्छी नहीं होती, बल्कि दुखदायक होती है। ऐसी पत्नी और ऐसी चारपाई भगवान करे शत्रु को भी प्राप्त न हो।

दान दीन को दीजिए, मिटै दरद की पीर।
ओखद वाको दीजिए, जाके रोग सरीर।।

दान यदि देना है तो दीन को ही देना चाहिए जिससे उसका दुख और दरिद्रता

दूर हो सके। औषधि उसी को देना उचित है, जिसके शरीर में रोग हो। निरोगी को औषधि देने में क्या लाभ है?

पड़े रहों दरबार में ढका धनी के खाव।
इक दिन ऐसा आयगा, स्वयं धनी हो जाव।

यदि हम सदैव साधन सम्पन्न व्यक्तियों अथवा भगवान के दरबार में पड़े रहेंगे और उनके धक्के खाते रहेंगे, तो एक समय ऐसा आयेगा कि तुम स्वयं धनी हो जाओगे।

दुष्ट नारि अरु मित्र सठ, परै जानिए जाय।
बसैं सर्प घर माँझ ही, जानें कब उठ खाय।।

जिस घर में दुष्ट स्त्री और क्रूर मित्र विद्यमान हो, उस घर का सर्वनाश ही समझिए। मानों उनके घर में सर्प बसा हुआ है। वह न जाने कब खा जाय। आये दिन इस प्रकार की अभद्र घटनाएँ घटित होती रहती हैं कि अमुक स्त्री ने अपने पति की हत्या करवा दी। अमुक मित्र ने अपने मित्र के साथ विश्वास–घात किया है। संस्कृत में भी इसी तरह की बात कही गई हैं, जो विचार करने योग्य है–

दुष्टाभार्या शठं मित्रं, भृत्य श्चोन्तर दायकः।
ससर्प व वृक्षे वासां, मृत्युरेव न संशयः।।

नारि, पटौहा, कूप जल, उर बरगद की छाँह।
गरमी में सीतल रहें, सर्दी में गरमाय।।

नारी, लकड़ी के पाटे गए कच्चे मकान, कुएँ का पानी और बरगद की छाया, गर्मी में शीतल और जाड़े में गर्माती है। इसका अर्थ यह हुआ कि उपर्युक्त वस्तुएँ गर्मी और जाड़े की ऋतु में सुखदायक होती हैं।

पंडित सूर सुजानवर, रूपवती तिय जान।
जितै जितै जे पग धरें, उतै–उतै सम्मान।।

पंडित, शूरवीर–सज्जन, श्रेष्ठ व्यक्ति और रूपवती नारी जहाँ–जहाँ ये जाते हैं, वहीं उनका आदर–सत्कार होता है।

पाग पिछौरा परदनी, खोर गदेला खाट।
जे नौ लम्बे चाहिए, हाट सगाई, घाट।।

पगड़ी, चादर, धोती, ओढ़ने का मोटा चादर, गद्दा चारपाई, बाजार सगाई और घाट इन नौ वस्तुओं को लम्बा होना आवश्यक है। लम्बाई के कारण इन सबका भलीभाँति उपयोग हो सकेगा।

पावक बैरी, रोग रिन सपनेहुँ रखिए नाँहि।
जे थोड़े हूँ बढ़त पुनि, बड़े जतन सों जाँहि।।

अग्नि, शत्रु, रोग और ऋण को स्वप्न में भी नहीं रखना चाहिए। ये थोड़े ही समय में बढ़ते चले जाते हैं और ये यत्न पूर्वक बड़ी कठिनाई से समाप्त हो पाते हैं।

पाँच पंच मिल कीजे काजा।
हारैं जीतैं आय न लाजा।।

पाँच पंच मिलकर जब कोई काम करते हैं तो हारने और जीतने में जरा भी लज्जा का अनुभव नहीं होता।

पूत न मानें आपन डाट भाई लड़ै कहैं नित बाँट।
तिरिया करकस कलही होय, नियरौं बसैं दुहुट सब कोय।
मालिक नाहिन करें विचार, सबै कहैं जे विपत अपार।

जब अपना पुत्र अपनी डांट–फटकार का ध्यान न दे और अपनी आज्ञा का पालन न करे। भाई रात–दिन हिस्सा बाँट के लिए लड़ता रहे। पत्नी कर्कश स्वभाव वाली और रोज कलह करने वाली हो। दुष्ट पड़ोसी नजदीक निवास करता हो। मालिक अपनी विनय पर विचार न करे। ये सारी बातें महान विपत्ति का कारण बन जाती हैं।

प्रीत जोर तोरें नहीं, टोर जोरिए नाँह।
जोरें तोरें तें बहुर, गाँठ परत मन माँह।।

प्रेम स्वाभाविक होता है। उसे जोड़ तोड़ने की आवश्यकता नहीं है। यदि एक बार किसी कारणवश प्रीत टूट जाती है तो उसे पुनः जोड़ने का प्रयास नहीं करना चाहिए। प्रीति को तोड़कर जोड़ने से मन में गाँठ बनकर रह जाती है, जो जीवन भर बनी रहती है। कविवर रहीम का भी कुछ इसी तरह का भाव है –

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़हु चटकाय।
टूटे ते फिर न जुरें, जुरें गाँठ पर जाय।।

अतः इस तरह की प्रीति लाभकारी नहीं है।

प्रीत सीखिए ऊखसों, पोर–पोर रसवान।
जहाँ गाँठ तहाँ रस नहीं, जेइ प्रीति की बान।।

यदि प्रीति के वास्तविक स्वरूप को समझना है तो उसका उत्तम उदाहरण ईख है, जिसकी पोर–पोर में रस भरा रहता है। जहाँ गाँठ होती है, वहाँ रस नहीं होता। यही प्रीति की सच्ची पहचान है। यदि किसी के मन में किसी के प्रति गाँठ पड़ जाती है तो प्रेम को फिर कोई स्थान नहीं होता।

पुन्न पुरानौ घृत नयौ, उर कुलवंती नार।
जे तीनों तबहीं मिलैं, जब प्रसन्न करतार।।

पुराना पुण्य, ताजा घी और कुलवंती चरित्रवती स्त्री। ये तीनों मनुष्य को तभी प्राप्त होती हैं, जब उन पर ईश्वर की कृपा होती है। कुछ इसी तरह का भाव बाबा तुलसी का भी है –

माँगें मिलें न चार, पूरब पूरे पुण्य बिनु।
इक विद्या इक नार, संपति नेह सरीर सुख।।

फागुन कौ मेह बुरौ, बैरी कौ नेह बुरौ।
सारौ घर माँझ बुरौ, बिगरौ भानेज बुरौ।।

फागुन के माह में बरसने वाला पानी फसल के लिए हानिकारक होता है। यदि शत्रु प्रेम करने लगे तो विश्वासघात की आशंका होती है। घर के बीच रहने वाला साला कभी–कभी पति–पत्नी में अनबन करा देता है। बिगड़ा हुआ भानजा दोनों कुलों को कलंकित कर देता है।

लाँच ब्याज दच्छना, पाछें माँगें कुच्छना।

उधार दिए गए रुपयों का ब्याज, रिश्वत में दिया गया रुपया और भिखारी को दी गई दक्षिणा। जो पहले मिल जाय सो ठीक है। बाद में प्राप्त होने की कोई आशा नहीं रहती।

बसड़ विरानें जो रहें, मानें तिरिया सीख।
तीनऊँ ऐसे चले जे, पाछें बोयें ईख।।

पराश्रित जीवन यापन करने वाले, पत्नी की शिक्षा पर चलने वाले और ईख को पीछे बोने वाले कभी सफल नहीं हो पाते हैं।

बालापन खेले फिरे, ज्वानी रहौ न ठौर।
चारइ पन ऐसे गये, परत पराई पौर।

जिनका बचपन खेल–कूद में बीत जाता है। युवाकाल में कोई स्थाई आश्रय नहीं बना पाते। ऐसे लोगों के चारों पन पराश्रित रहकर व्यतीत हो जाते हैं। भला सोचिए ऐसे लोगों के जीवन का क्या अस्तित्व है?

बात–बात में भाँत है, और भाँत की बात।
बातन हाँती पाइए, बाँतन हाँती लात।।

बात–बात में बहुत अंतर होता है। बातों से ही विभिन्न प्रकार के परिणाम सामने आते हैं। कहो तो किसी को बातों से ही हाथी सा पुरस्कार प्राप्त हो जाये और किसी को बातों के ही कारण हाथी के पाँवों से कुचलवा दिया जाता है। यह बात सत्य है कि बातों से ही कोई सिंहासन पर बैठ जाता और बातों से ही कुछ लोग धूल में मिल जाते हैं। संत कबीर कह गए हैं –

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करें, आपहिं सीतल होय।।

हरी खेती गाभिन गाय, तब जानों जब मौं में आय।।

हरी–भरी खेती और गाभिन गाय को देखकर निश्चिन्त नहीं हो जाना चाहिए। 'फसल कटकर जब अनाज घर में आ जाये और गाय ब्याकर जब दूध देने लगे, तभी अपने कार्य को पूर्ण समझिए। कहा भी गया है कि 'बादर देखकैं पोतला नईं फोरौ जात।'

विद्या लै मरजाय पर, मूरख को नहिं देय।
गुन सबरौ जबसै चुकैं ,अंत बैर कर लेय।।

विद्या का दान पात्र को ही देना चाहिए अपात्र और मूर्ख को नहीं। भले ही कोई विद्वान अपना गुण और विद्या को लेकर मर जाये किन्तु किसी मूर्ख को अपनी विद्या प्रदान न करे। मूर्ख सारी विद्या प्राप्त करने के पश्चात् अंत में शत्रुता कर लेता है, जिससे बदला न चुकाना पड़े। वह अपने गुरु से दूर रहने का प्रयास करता रहता है।

विद्या तिरिया बेल जे, नईं जानें कुल जात।
जो जाकें ढिंग में रहें, ताही सें लिपटात।।

विद्या तिरिया और बेलि को कुल और जाति का कोई ध्यान नहीं रहता। जो जिसके समीप रहता है वह उसी से लिपट जाती है।

बिना नौंन की राँदें साग, बिना पेंच की बाँदें पाग।
बिना कंठ के गाबैं राग, न साग न पाग न राग।।

बिना नमक की सब्जी तैयार करना, बिना पेंच (लपेट) के पाग बाँधना और बिना कंठ के राग अलापना निरर्थक है।

भूक गये भोजन मिलें, जाड़ौ गये रजाई।
जीवन गये तिरिया मिली, कौन काम की भाई।।

भूख समाप्त हो पर भोजन का मिलना, जाड़ा निकल जाने के बाद रजाई का मिलना और जीवन निकल जाने के बाद पत्नी का प्राप्त होना निरर्थक है। बाबा तुलसी भी कह गए हैं –

का बरसा जब कृषी सुखानें, समय चूक पुनि का पछतानें।

राजा मारै गाँव कौ, कहन कौन सों जाय।
बाड़ लगाई खेत खौं, बाड़ खेत खौं खाय।।

यदि ग्राम प्रमुख ही जनता के साथ अन्याय करने लगे तो लोग किसके पास शिकायत करने जायेंगे? खेत की रक्षा के लिए बारी लगाई जाती है। यदि बारी ही खेत को खाने लगे तो क्या किया जाये?

सज्जन जन की मित्रता, उर कमलन की डोर।
टोर–टोर टूंका करों, तऊ न निकसत छोर।।

सज्जन की मित्रता और कमल–डंडियों के रेशे की स्थिति एक सी ही है। चाहे उसे तोड़कर टुकड़े–टुकड़े कर दिए जायें, फिर भी उसके अंत का पता नहीं लगता है।

सत्त कभउँ ना छोड़िये, सत छोड़ें पत जाय।
सत्य की बाँदी लच्छमी, लौट–लौट घर आय।।

सत्य को कभी छोड़ना नहीं चाहिए। सत्य छोड़ने से प्रतिष्ठा और मान–मर्यादा नष्ट हो जाती है। लक्ष्मी सदा सत्य से बँधी रहती हैं। सत्य के आने पर गई हुई लक्ष्मी लौटकर घर आ जाती हैं। इस प्रकार के उदाहरण पौराणिक कथाओं में भरे पड़े हैं।

सदा न काहू की रही, तिरियँन की गल बाँह।
ढुरतन–ढुरतन ढुर गई, ज्यों तरुवर की छाँह।।

नारियों का प्रेम और उनकी वासनिक इच्छाएँ किसी एक जगह स्थिर होकर नहीं रहतीं। वे ढुरते–ढुरते किसी दूसरी ओर ढुर जाती हैं। जिस प्रकार तरुवर की छाया घट–बढ़कर बदलती रहती हैं।

संपत्ति और बिपत्ति खौं, दोनों सम कर राख।
चार दिना की चाँदनीं, फिर अंधियारी रात।।

संपत्ति और विपत्ति में सदैव एक से बने रहना चाहिए, क्योंकि सुख और दुख का क्रम तो प्राकृतिक है। कुछ दिन के लिए चाँदनी रहती है और फिर अँधियारी रात आ जाती है। इसलिए सुख और दुख को बराबर महत्त्व देना उचित है। कविवर बिहारी ने भी अपने एक दोहे में कहा है –

दीरघ साँस न लेय दुख, सुख साँईं न भूल।
दई–दई क्यों करत हैं, दई–दई सो कबूल।।

सूकौ भोजन कुल रिनी, और कुलच्छिन नार।
पाँय पनैयें है नहीं, नरकन के फल चार।।

सूखा भोजन, ऋणी–परिवार, कुलक्षणी स्त्री और पाँव में जूतों का न होना ये चार नरक भोगने के समान हैं।

सूम की माया, कनेर कौ गटा।
हिजड़ा कौ ब्याव, बसोर कौ मठा।।

लोभी की माया, कनेर की गुठली, हिजडे का विवाह और बसोर का मठा किसी के काम नहीं आते हैं और ये सब निरर्थक रहते हैं।

हाँत पाँव के कायली, मौमें मूँछें जाय।
आस बिरानीं जे करें, होतन ही मर जाय।।

जो हाथ–पाँव से शिथिल होते हैं, उनकी मूंछे मुँह में चली जायें तो उन्हें कोई चिन्ता नहीं हैं। जो दूसरों के सहारे पर जीवित रहते हैं, उनका जीवन निरर्थक है।

अकेलों चना भाड़ नईं फोरत।
मिल जुलकर ही सारे कार्य पूर्ण हो पाते हैं।

अकेलों पूत मों में मूत।
प्राण–प्रिय होने से उसके उपद्रवों को सहन करना पड़ता है।

अपने बैलों खौं कोऊ मूसरों सें नाथत।
अपनें प्रिय को कोई कष्ट नहीं देना चाहता।

अपनों खाओ परोसी सें डराओ।
किसी के वैभव को देखकर लोग ईर्ष्या करते हैं।

अड़ा के पड़ा बिदोना।
चक्कर में डाल देना अथवा षड्यंत्र रचना।

अंधरा बगला, कीचड़ खाये।
अयोग्य को भले–बुरे की पहचान नहीं होती।

अबा कौ अबा बिगर गओ।
सम्पूर्ण समाज का भ्रष्ट होना।

अन्न कौ कुन्न करबौ।
अच्छी वस्तु को बर्बाद कर देना।

आदे में अजगर, आदे में सब घर।
अपनी संपत्ति का अधिक से अधिक उपयोग करना।

आदमी की गत का कइयें, जिन्नों खौं बुला लेत।
कुछ लोग इतने शैतान होते हैं कि भूतों को भी मात कर देते हैं।

आप डुबन्ते पांडे, लै डूबे जजमान।
अपने साथ दूसरों को हानि पहुँचाना।

आग जानें लुहार जानें, धोंकन हारे की बलाय जानें।
कुछ लोग स्वार्थ–सिद्धि तक ही सीमित रहते हैं।

आँख कौ काजर चुराबों।
बड़ी ही सफाई से कोई काम करना।

आँदरे सैं गैल पूंछबों।
अयोग्य से योग्यता की जानकारी लेना।

आँख पै चरबी चढ़बो।
बेशर्मी लाद लेना।

औसर चूके बेड़नी, गाये राग मल्हार।
समय चूकने पर अच्छी बातें करना व्यर्थ हैं।

आंधरे की लकड़िया।
निर्बल का सहारा।

आई है तो जैहैं कहाँ।
यदि भाग्य में उपलब्धि है तो कभी न कभी प्राप्त होकर रहेगी।

आस बिरानी जे करें, वे होतई मर जायें।
स्वावलंबन से बढ़कर कुछ नहीं हैं।

आये एकई देश सें, उतरे एकई घाट।
जिनसें करनीं न बनीं, सो हो गये बाराबाट।
जन्म से नहीं कर्म से फल की प्राप्ति होती है।

इतै बामुन की बछिया की चिनार नइयाँ
यहाँ योग्य और अयोग्य को एक ही तराजू पर तौला जाता है।

इत्ते से लाल मियां, इत्ती लंबी पूंछ।
जितै जांय लाल मिया, उतई जाय पूंछ।।
नकली और झूठे बड़प्पन का प्रदर्शन।

उधार कौ खाबों, फूस कौ तापबौ।
कर्ज लेकर जीवन–यापन करना कठिन है।

उनकें दूध न गड्डम–गड्डा, उनकें भैंस न डिड़कैं पड्डा।
कुछ लोग साधन हीन होते हुए भी अपनी युक्तियों से भरे–पूरे रहते हैं।

उठाई जीभ तरुआ सें मारी।
बिना सोचे–समझे बोल उठना।

उल्टे उस्तरां सें मूंढ़बों।
मूर्ख बनाकर लाभ प्राप्त करना।

ऐंचन छोड़, कड़ोरन में फंस गये।
छोटे संकट से बचकर बड़ी समस्या में उलझ जाना।

एकई खूंटा सें बँधे।
एक ही सिद्धांत पर अडिग रहना।

कछू न मछू, घर में घुसे लछू।
प्राप्ति की आशा में प्रयत्न करना।

कनक न कंडा, कोरे गुंडा।
विपन्न होते हुए भी सम्पन्नता का प्रदर्शन करना।

करमू चले बरात, करम गत संगै जैहैं।
लचकन परसे भात, लचक मन संगै जैहैं।।
कर्म के अनुसार फल प्राप्त होना।

काड–मूंस कैं तीजा करी, महालच्छमी आड़े परी।
एक समस्या सुलझते ही दूसरी समस्या उत्पन्न हो जाना।

कौरा डारकैं लड़ाबौ।
प्रलोभन देकर झगड़ा करवाना।

खसम मोरौ आँदरौ, हम काये पै सिंगार करें।
अनावश्यक प्रदर्शन करना।

खाल खींचबों।
जबरन सजा देना।

गधों को मौर बाँधबों।
अयोग्य को पुरस्कृत करना।

गधो खबाओं खेत पाप न पुन्न।
अपात्र को दान देना निरर्थक है।

गरब तौ रावन कौ नईं रओ।
घमण्ड तो एक न एक दिन चूर होता ही है।

गर्रानी सो अर्रानी।
घमण्ड का पतन निश्चित है।

गरे में प्रान अटके।
जीवन का अंतिम समय आ जाना।

गरें बैंधना।
जबरन साथ करना।

ग्यान गरे में फंस जात, जब घर कौ नाज बढ़ात।
भूख में सारा ज्ञान नष्ट हो जाता है। संस्कृत में भी कहा गया है– *'सर्वे गुणाः कांचनंआश्रयंते।'*

गली में डेरा।
बेघरबार (जिसे रहने को घर भी न हो।)

गाँव दमन्दा मूसरचंदा, दोर दमन्दा आदौ।
घर दमन्दा गधा बिरोबर, जो चाहो सो लादौ।

गाँव में रहने वाला दामाद महामूर्ख माना जाता है। ससुराल के सामने रहने वाला दामाद अधमूर्ख होता है, किन्तु घर जमाई गधे के समान होता है। वह कुछ भी मान–अपमान सहन करता रहता है।

गिह–गिह पिरथवी भारी है।

ये भूमि वीरों से रहित नहीं है।

गुबरारी की रानी भई और रानी की गुबरारी।

ये समय का चक्र है। राजा से रंक और कभी रंक से राजा।

गुर गोबर हो गओ।

भली वस्तु का सत्यानाश होना।

गेवड़े आई बारात, कतन लगी बौड़ार।

ऐन मौके पर तैयारी करना।

घर में घरघूला खेलबो।

आपस में बेईमानी करना।

घर में अँदयारो घुरसार में दिया।

समुचित कार्य में रूचि न लेना।

घर कयें मोय बनाकैं देख, ब्याव कयें मोय करकें देख।

घर बनाना और शादी करना दोनों ही कठिन कार्य हैं।

घर की घर में रहन दो।

अपनी इज्जत हाथ में है। चाहे बनाओ और चाहे मिटाओ।

घर की चीज चाखरें खायें, बाहर की घात लगायें।

अपने दोष न देखते हुए औरों पर निगाह रखना।

घर बिन बहू, सार बिन गइया।
जे मिल जाये तौ बन जायें भइया।

यदि किसी घर को सुलक्षणी वधू और किसी गौशाला को दुधारू गाय मिल जाये तो इससे बढ़कर कुछ नहीं है।

घर–दोर तुमाओ, कुठिया में हात न लगइयो।
झूठी सान्त्वना देना और लाभ से वंचित रखना।

घी–गुर नौंनों कै बहू के हाँत नौंने।
वस्तु से अधिक, मन का भाव महत्त्वपूर्ण होता है।

घोड़ा कौ चढ़ैया चूक जात, राजा कौ सिपैया चूक जात।
धन कौ धरैया चूक जात, चूकत नइया चुगला चुगलखोरी सौं।
चाहे कोई कितना ही चूकता रहे, किन्तु चुगलखोर चुगली करने से नहीं चूकता है।

चतुर के चार कान नईं होत।
बौद्धिक प्रखरता और शारीरिक गठन का कोई सम्बंध नहीं होता।

चतुरायन चूलें गईं, भगत–भार में जाय।

ज्ञान तरी में घुस गयो, घर कौ नाँज बढ़ाय।
विपन्नता में कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

चनकट की का उधारी।
मना करने में देर कैसी?

चप्पों मर गईं, जौ दुख धर गईं।
चूलों फूँकत, मूछैं बर गईं।
पत्नी की मृत्यु के बाद अनेक कष्ट झेलने पड़ते हैं।

चार लठा के चौधरी, पाँच लठा के पंच।
जिनके घर में छह लठा, सो अंच गिने न पंच।
शारीरिक शक्ति के सामने सब झुक जाते हैं।

चील कौ मूत माँगबौ।
दुर्लभ वस्तु की इच्छा करना।

छड़ी चले छम–छम, विद्या आये धम–धम।
गुरूजी की पिटाई से ही विद्या आती है।

छाती ठोंककर कहना।
हिम्मत के साथ बात करना।

जब होते करमन के फेर, मकर जाल में फंस गओ शेर।
कर्म फल के कारण शक्तिशाली लोगों को भी कष्ट भोगना पड़ता है।

जर है तो नर, नईंतर पूरौ खर।
धन से ही मनुष्य की कीमत होती है।

जाके घर में सौ–सौ गाय, बौका छाँछ पराई खाय।
साधन–संपन्न व्यक्ति किसी के सामने हाथ नहीं फैलाता है।

जादाँ गुरयाई में कीरा परत।
अधिक मधुर शब्दों से खटाई आ जाती है।

जान न पहचान, बड़े मियाँ सलाम।
पूर्व परिचित के बिना सम्बंध बढ़ाना।

जियत खाल खींचना।
बहुत अधिक कष्ट देना।

जी में जी आना।
विपत्ति टल जाना।

जी जुड़ाना।
आत्मिक शांति प्राप्त करना।

जे खाये चना, वो रहें बना।
चने का उपयोग करने वाले स्वस्थ रहते हैं।

जोलों सांस, तोलों आस।
अंतिम समय तक आशा करना।

झरे में खेलना।
सब कुछ नष्ट करके बैठ जाना।

टापते रह जाना।
वंचित रह जाना।

टें बोल गये।
जीवन–लीला समाप्त होना।

ठाकुर खौं का चाइये, पखा पान औ पौर।
भीतर घुसकैं देखिये, दयें मुस्का कौ कौर।
बाहर से बड़प्पन और भीतर से खोखलापन।

ढोर न मोर, बाबा जू चुपर–चुपर खाबैं।
मुफ्त का माल खाने की इच्छा।

तिरिया चरित जानें न कोई।
खसम मारकैं सत्ती होई।
स्त्रियाँ गुणों और अवगुणों की खान होती हैं।

थूक कर चाटना।
कहकर पलट जाना।

थू–थू होना।
चारों ओर निन्दा होना।

दमड़ी की हंडी ठोक बजाकैं लई जात।
छोटी सी छोटी वस्तु देख–परखकर लेना।

दम में दम होना।
हिम्मत बँध जाना।

दाई सें पेट नईं छिपत।
जानकार से भेद नहीं छिपता है।

दाम देव गन्नेंटी खाव टूटी पलकिया सरगैं जाव।
बिना लोभ लालच के किसी के काम आना और तो और प्राण तक खो बैठना।

दिन को मड़वा रात को तेल, जे देखो नत्थू के खेल।
किसी कार्य को शीघ्रता से पूरा करना।

दिन में तरइया दिखाना।
किसी भोले व्यक्ति को मूर्ख बनाना।

दिन भर इतै–उतै, रात को जांय कितै।
जिसको कोई काम नहीं रहता।

दूद करूला करबो।
श्री सम्पन्नता का सूचक।

धजी को साँप।
छोटी सी बात को बढ़ा–चढ़ा कर प्रस्तुत करना।

नचनारी को घूँघट की का ओट?
नाचने वाली को पर्दे की आवश्यकता नहीं होती है।

ननद झूला में हुन चिराऊत।
ननद–भाभी की नोंक–झोंक स्वाभाविक है।

नांव लखनदे, मौं कुतिया सौं।
नाम के अनुरूप सूरत–शक्ल न होना।

पके आम होना।
मुत्यु का समय समीप होना।

पटवारिन के मरें पूरों गाँव जाय।
पटवारी के मरें कोऊ न जाय।
मुँह देखी की प्रीत होती है।

पतरों सों पेट, बहू मार गई जेठ।
शरीर देखकर शक्ति का अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

पनपना कप जाना।
पूरी तरह से भयभीत हो जाना।

परुआ मुंश खब्बल जोय।
तिन घर कबहुँ न बरकत होय।
सदा सोता रहने वाला पति और सदा खाती रहने वाली पत्नी के घर में कभी बचत नहीं होती है।

पनइयाँ घिस गईं।
बहुत भाग–दौड़ होना।

परसी थारी में लात मारबों।
घर आई लक्ष्मी को ठुकराना।

पानी में देखबों।
सदैव कुदृष्टि रखना।

पानी उतर जाना।
आव–इज्जत चली जाना।

पेट में गुढ़ी होना।
मन में कपट–भाव रखना।

पेटों टूटना।
भूखों मरते रहना।

फटे में पाँव देना।
बिना मांगे सलाह देना।

बनी न बिगारी तो बुंदेला काहे के।
किसी की बनी हुई बात को बिगाड़ने में बहादुरी समझना।

ब्याये ना बरातें गये।
पूरी तरह से अनुभव हीनता की स्थिति।

बाल न बच्चे, नाथूराम अच्छे।
जिन पर कोई जिम्मेदारी नहीं होती।

बुढ़ापे की लकरिया।
वृद्धावस्था का सहारा।

बिन पेंदी के लोटा।
सिंद्धान्त हीनता।

व्यवहार आधारित

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज के बीच में रहकर मनुष्य विकास करता है। समाज के बीच में रहने के लिए लोक व्यवहारों का ज्ञान और अभ्यास आवश्यक है। आचार–विचार, रहन–सहन, खान–पान और उत्तम आदतों के ज्ञान से ही लोकप्रियता और सम्मान प्राप्त होता है। पारिवारिक संबंधों के निर्वाह के अतिरिक्त

सामाजिक परिवेश के साथ समन्वय और तालमेल आवश्यक है। इसका पूर्ण ज्ञान और शिक्षा बचपन से ही दी जानी चाहिए। वयोवृद्ध और अनुभवी व्यक्तियों ने लोक कहावतों के माध्यम से समाज को लोक व्यवहार की उत्तम शिक्षा प्रदान की है, जो आज के परिवेश में विशेष उपयोगी और महत्त्वपूर्ण है। इस प्रकार की कुछ कहावतों के उदाहरण प्रस्तुत हैं –

एक पूत जिन जनमों माँय,
घर सूनौं जो बाहर जाय।

माता जी, केवल एक ही पुत्र को जन्म मत देना। कम से कम घर में दो पुत्र होना आवश्यक है। एक पुत्र होने की स्थिति में यदि वह बाहर चला जाये तो घर सूना हो जाता है।

अरे बिजूका खेत के, काहे अपजस लेत।
आप न खेतैं खात है, औरें खान न देत।।

खेतों में खड़ी हुई फसल की रक्षा के लिए किसान बीच खेत में एक पुरुषाकृति बनाकर खड़ी कर देते हैं, जिसे खेत का बिजूका कहा जाता है। उसे खेत का रखवाला समझकर पशु–पक्षी खेत में प्रवेश नहीं कर पाते हैं। वह बिजूका उस फसल को न खाता है और न दूसरों को खाने देता है। वह व्यंग्योक्ति ऐसे लोगों का उपहास करती है, जो किसी वस्तु का उपयोग न स्वयं करते और न दूसरों को करने देते हैं।

कन्या जिनके अति धनी, पच्छिम जिनके द्वार।
साँईं इनें न मारिये, जे मारें करतार।।

जिनके घर में अनेक कन्याएँ हों। जिनके घरों के दरवाजे पश्चिम की ओर हों। ऐसे लोगों को सताने की आवश्यकता नहीं है। उनको तो विधाता ने पहले ही सताने की सारी व्यवस्था कर दी है।

पहरिये खदा, निभइये सदा।

जो व्यक्ति खद्दर या सादे कपड़े पहिनते हैं, उनका भलीभाँति निर्वाह होता रहता है।

कपड़ा पैरें जग भाता।
खाना खइये मन भाता।।

कपड़े सदैव ऐसे पहिनना चाहिए जो सभी लोगों को अच्छे लगें। भोजन अपनी रुचि के अनुरूप ही करना चाहिए।

ना बात बिरानी कइये, ना ऐंचातानीं सइये।
ऊँट बिलइया लै गई सो हाँ जू हाँ जू कइये।।

शांतिपूर्वक जीवन यापन करने के लिए यह एक मूल मंत्र है। न किसी से भली–बुरी बात करना चाहिए और न विवाद में पड़ना चाहिए। यदि कोई समर्थ व्यक्ति किसी असत्य को सत्य बनाने तुल जाये, तो हाँ कहकर चुप रहना उचित है।

साँसी बात सटोले कयें।
सबके मन सें उतरे रयें।

सत्य और कड़वी बात कहने वाला व्यक्ति लोगों को अच्छा नहीं लगता। लोगों को तो चाटुकार और झूठी हाँ में हाँ मिलाने वाले लोग ही अच्छे लगते हैं।

मूरख सैं दुख रोव, रोटा सैं घी खोव।

मूर्ख को अपनी व्यथा कथा सुनाना निरर्थक है। उसी प्रकार मोटी रोटी पर घी लगाना निरर्थक है।

मम्मा के आँगें ममयावरे की बातें।।

एक भुक्त–भोगी के समक्ष अपना ज्ञान बघारना निरर्थक है।

नओ नओ मुल्ला, जादौं प्याज खान लगत।

कुछ लोग कोई नवीन पद पाकर आत्म प्रदर्शन करते हुए पद की गरिमा प्रदर्शित करने लगते हैं।

एक तौ कानी होय, दूसरें लरका न होय।
तीसरें कुल सें हीन, एक खुंस में खुंसें तीन।

एक तो पत्नी कानी, दूसरे उसके लड़का उत्पन्न न हो और तीसरे कुल से हीन हो। एक ही स्त्री में ये तीन–तीन अवगुण कैसे सहन हो सकते हैं।

कानें सैं कनवा कहों, तुरतईं आबैं टूट।
बिदी–बिदी सैं पूछलो, कैसें गईती फूट।

यदि किसी काने से कनुवा कह दिया जाये। तो वह नाराज होकर आप पर टूट पड़ेगा। यदि आप उससे प्रेमपूर्वक पूछेंगे तो वह अपनी आँख के फूटने का कारण अपने आप बता देगा। प्रस्तुति और बातचीत का ढंग यदि समुचित हो तो उलझी हुईं गुत्थियाँ सहज ही में सुलझ सकती हैं। प्रेमपूर्वक पूछने पर कनवा कहता है –

एक बरातें हम गये, दारू चली अटूट।
हिंगोटा फट कैं लगो, तासैं गईती फूट।।

हम एक बारात में गए हुए थे। बारात में भारी आगौंनी चल रही थी। एक गोला फूटने पर एक चिन्गारी मेरी आँख में चली गई, जिसके कारण मेरी ये आँख फूट गई है।

दै पपरिया, सो लै पपरिया।।

वस्तुओं के आदान–प्रदान से ही व्यवहारों का विधिवत निर्वाह हो पाता है। यदि आप किसी को कोई वस्तु प्रदान करेंगे, तो वह भी समय पर बदला चुका देगा। उभय पक्ष से ही पारस्परिक व्यवहारों का परिपालन हो पाता है।

गरीब की लुगाई, सबरे गाँव की भौजाई।

सीधे और सरल व्यक्ति को हर कोई दबाकर उसका दुरुपयोग करना चाहता है। बुरे लोगों से लोग हमेशा दूर रहते हैं। बाबा तुलसी ने भी मानस में कहा था– 'टेड़ जान संका सब काहू, वक्र चंद्रमहि ग्रसै न राहू।'

ग्याँन गरें फस जात, जब घर में नाँज बड़ात।

चाहे कोई कितना ही बड़ा ज्ञानी और विज्ञानी क्यों न हो। विपन्नता की स्थिति में सारी विद्वता और बुद्धिमत्ता नष्ट हो जाती है। घर में यदि खाने के लिए अन्न नहीं तो सारी कलाएँ भूल जाती हैं। इसी प्रकार की एक कहावत और बुंदेलखण्ड में प्रचलित है –

भूल गए राग रंग, भूल गए चौकड़ी।
तीन चीज याद रहीं, नौंन तेल लकड़ी।

घर कौ भेदी लंका ढाबैं।

रावण के भाई विभीषण ने भेद बताकर रावण की लंका को नष्ट करवा दिया था। परिवार की फूट का लाभ शत्रुओं को मिल जाता है। इसी तरह की एक कहावत और कही जाती है– 'घरई के कुरवा सैं आँख फूटत।'

घर घर मटया चूले।

हर घर में मिट्टी के चूले बने हुए हैं। हर घर की पारिवारिक स्थिति एक सी है। सबको पारिवारिक संकटों और विपत्तियों से जूझना पड़ता है। कुछ लोग ये भी कहा करते हैं– 'सबके घरैं दो दो गाड़ी पथरा डरे हैं।'

घर में नइयाँ चून चनन कौ, ठाकुर बरी करावैं।
मों दुखनी खौं लाँगा नइयाँ, कुत्तें झूल सुमावैं।।

कुछ साधन सम्पन्न और प्रतिष्ठावान व्यक्ति विपन्न होने पर भी अपनी सम्पन्नता का प्रदर्शन करते हैं। ठाकुर साहब के घर में चने का चून तो है नहीं और दूसरों को दिखाने के लिए बड़ियां बनवाकर खाते हैं। उनकी पत्नी को पहिनने को बढ़िया धोती तो है नहीं और कुत्ते को ओढ़ने के लिए झूल सिलवाते हैं। लोग दूसरों के सामने नीचा नहीं देखना चाहते हैं।

धोकिया धोकतई रओ, उर अत्फरया व्या ल्याव।

कुछ लोग किसी काम को करने की सोचते ही रहते हैं, किन्तु बीच वाले लोग तत्परता से उस काम को पूरा कर लेते हैं। अतः अच्छे काम को तुरन्त पूरा कर लेना चाहिए।

घूँटौ अपनें पेटई खौं नऊत है।

घुटना यदि झुकता है तो वह अपने पेट की ओर ही झुकता है। प्रायः अपने लोगों का झुकाव अपने आत्मीय जनों की ओर ही होता है।

कुआ पनघट बैठकैं, गोड़े लय लटकाय।
पींठ भिड़ाबैं सोत सें, जेइ मरबे के औटपाय।।

कुआँ के मझघट पर बैठकर कुएँ में पाँव लटकाना और अपनी सौत से पीठ मलवाना उचित नहीं है। ये जान–बूझ कर मरने के उपाय हैं।

चूल्लू में उल्लू करें, गाँठ कमाई खाय।
मनस जनावर बन चलैं, दारू बुरी बलाय।

मद्यपान करना एक बहुत बड़ी व्याधि है। चुल्लू भर पी लेने पर आदमी पागल बन जाता है। वह गाँठ की पूँजी को नष्ट कर देती है और मनुष्य पशुओं की तरह झूमता घूमता फिरता है।

जहाँ देखौ तवा परात, ताँही गाऔ सारी रात।

जहाँ खाने–पीनें की सामग्री दिखाई देती है, वहीं लोग सारी रात गाते बजाते रहते हैं। एक कहावत और प्रचलित है– 'चुन पै बुल बुल नचत।'

कुछ लोग कहते हैं – *जितै मिलीं दो उतै रये सो।*

जामें जित्ती बुद्धि उत्ती दैय बताय।
बाकौ बुरओ न मानिए, और कहाँ से ल्आय।।

जिसमें जितनी बुद्धि होती है, वह उसी के अनुरूप परामर्श देता है। इसलिए इसका बुरा न मानना चाहिए। वह अतिरिक्त बुद्धि कहाँ से लाये?

जैसे खौं तैसो मिलें, मिलैं कुलरियें वेंट।
कानी खौं कनवाँ मिलैं, धरें आँख पै टेंट।।

जो जिस प्रकार का होता है, उसे वैसी ही संगति प्राप्त हो जाती है। जैसे कानी को कनवाँ और कुल्हाड़ी को बेंट उसके अनुरूप अपने आप प्राप्त हो जाता है।

जोबौ गुर नइयाँ, जियै चिन्टा खा खा जाय।
जौलों गाड़ी ढलकैं, तौलौं तौ ढड़काँय।।

यह वह गुड़ नहीं है, जिसे साधारण सी चीटियाँ खा–खा कर नष्ट कर दें। जब तक यह जीवन–रूपी गाड़ी चलेगी, तब तक हम इसे चलाते रहेंगे।

जो आपको ना चाय, बाकें बाप कों ना चाँय।
जो आप को चाय, बाके गुलाम को चाँय।।

जो आपको न चाहे उसके पिता को सम्मान देने की क्या आवश्यकता है। जो आपको पहिचाने और मान–सम्मान दे, उनके सेवकों से भी प्यार करना चाहिए।

जो कोऊ हमें देख कैं जरें बरै।
ऊकी आँखन में राई नौंन परै।

जो कोई हमें देख–देखकर जरता–बरता हो। भगवान करें कि उसकी आँखों में राई–नौंन पड़े, जिससे उसके देखने की क्षमता नष्ट हो जायें।

जो जामें जाने नहीं, सो करन काय खौं जाय।
चौंच गपे में फंस गई, ऊपर पंख दिखाय।।

जिसको जिस किसी कार्य का ज्ञान नहीं है, उस कार्य को करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। अनजाने में जब कौवे की चोंच कीचड़ में फंस जाती है तो वह अपने पंख फड़फड़ाता रहता है।

ढीले हाथ कुलरिया मारी, हँसकैं माँगे दाम।
ओ जू कै–कै तिरिया टेरैं, तीनउँ काम निकाम।।

ढीले हाथ से कुल्हाड़ी मारना, ग्राहक से हँसकर पैसे माँगना, नारी का पर पुरूष को ओजी कहकर पुकारना, ये तीनों क्रियाएँ निष्फल हो जाती हैं। इनमें कठोरता आवश्यक है।

दाँत घिसें सें काम, नकरिया काहू की हो।
पेट भरे सें काम, गकरिया काहू की हो।।

कुछ व्यक्ति बहुत ही सहज, सीधे और संतोषी वृत्ति के होते हैं। वे सहजता से अपना काम चला लेते हैं। दाँत घिसने के लिए किसी भी लकड़ी का उपयोग और पेट भरने के लिए किसी भी रोटी का उपयोग कर लेते हैं।

दाँत–दाँत तुम बत्तीस, हमरी तुमरी कौन रीस।
हम कमाबैं तुम बैठे–बैठे खाव, मरती बेराँ संग न जाव।।

कहावतकार ने दाँतों के माध्यम से व्यंग्योक्ति कही है। हे दाँत! तुम बत्तीस हो। हमारी तुम्हारी क्या बुराई है? अकेले हम कमाते हैं और तुम सब मिलकर खाते हो। फिर भी मरते समय साथ नहीं जाते हो। कुछ लोगों के साथ कितना ही उपकार क्यों न किया जाये, किन्तु वे असली समय पर काम नहीं आते हैं।

दूर जमाई फूल बिरोबर, गाँव जमाई आदौ।
घर जमाई खर की नाँई, चाय जितै कऊ लादौ।।

जब ससुराल दूर होती है तो खूब मान–सम्मान मिलता है। यदि ससुराल गाँव में ही हो तो सम्मान आधा हो जाता है और यदि दामाद घर जमाई बनकर रहता है तो उसकी स्थिति गधे की तरह होती है। कहा भी गया है– 'ससुरार कौ रैबो उर गदा पै चढ़वौ बिरोबर होत'।

इसी भाव पर आधारित एक कहावत और कही जाती है –

दूर नतैती दूध बिरोबर, नीरौ नातौ आदौ।
गाँव नतैती गधा बिरोबर, जित्तौ चाहौ लादौ।।

देवी माँगैं धुजा नारियल, भैंरों माँगैं रोट।
साह मदार मलींदा माँगैं, है पइसा पै चोट।।

चाहे कोई किसी संप्रदाय के हों। सभी देवी–देवताओं की दृष्टि पैसे की ओर है। देवी जी ध्वजा नारियल से प्रसन्न होती हैं और भैरव बाबा को रोट चढ़ाकर प्रसन्न किया जाता है और साह मदार मलीदा माँगते हैं। ये सभी वस्तुएँ पैसे से ही क्रय की जाती हैं।

धनवन्तैं काँटौ लगो, दौर परो संसार।
निर्धन गिरे करार सैं, कोउ न पूछनहार।।

संसार में सारा खेल पैसे का ही है। पैसे से ही मनुष्य को मान– सम्मान प्राप्त होता है। निर्धन के दुख और दर्द की खबर लेने वाला कोई नहीं है। यदि किसी धनवान को काँटा लग जाये तो सारा संसार निकालने के लिए दौड़ पड़ता है और निर्धन नदी की कगार से गिर कर घायल हो जाये तो उसे पूछने वाला कोई नहीं है। संस्कृत में भी कहा गया है।– 'सर्वे गुणाः कांचनं आश्रयन्ते।'

धेला की नथनी कौ इतनौ गुमान।
सोनें की होती तों चलती उतान।।

एक सस्ती नथनी का इतना ज्यादा घमण्ड है। यदि ये सोने की होती तो अपना सिर ऊपर उठाकर चलती।

निर्धन निर्बल पर सबई, करत घात प्रतिघात।
ज्यों टूटी बिरवाई पै, धरत जात सब लात।।

गरीब और कमजोर आदमी को सभी सताया करते हैं, जिस प्रकार टूटी हुई बारी को सब लोग पाँवों से कुचलते चले जाते हैं।

पत्ता टूटे डार सें, कौपइयाँ मुसकन्त।
हम ही से तुम होवगे, आबै फेर बसंत।।

ये सब परिवर्तन का क्रम है। पत्ते डालों से टूट–टूट कर गिरने लगते हैं, तब कोपलें मुस्कराने लगती हैं। वे उन पत्तों से कहती हैं कि बसंत आने पर तुम भी हमारी तरह हो जाओगे। ये आवागमन का नियम तो चला ही आया है।

पैलों सुक्ख निरोगी काया, दूजौ सुख घर में हो माया,
तीजौ सुख कुलवंती नारी, चौथौ सुख सुत आज्ञाकारी।
पाँचव सुक्ख राज सम्माना, छठवाँ सुक्ख कुटुम्बी नाना,
साँतव सुक्ख धरम रति होई, ताहित स्वर्ग धरनिपर रहोई।

पहला सुख निरोगी शरीर, दूसरा सुख घर में पर्याप्त धन सम्पत्ति हो, तीसरा सुख कुलवती पत्नी और चौथा सुख पुत्र का आज्ञाकारी होना है। पाँचवाँ सुख शासन में मान–सम्मान और छठवाँ सुख परिवार भरा–पूरा हो, साँतवाँ सुख धर्म के प्रति विशेष अभिरुचि हो, जिससे इस पृथ्वी पर स्वर्गिक आनंद प्राप्त होने लगे। इसी भाव की पुष्टि चाणक्य–नीति में भी की गई है –

यस्य पुत्राः वशीभूताः, भार्या दंदानुगामिनी।
विभावे यस्य संतुष्टा तस्यं स्वर्ग इहैवहि।।

पग पवित्र तीरथ करें, कर पवित्र किये दान।
मन पवित्र हरि भजन सों, कान सुनें श्रुतिमान।।

तीर्थ यात्रा करने से मनुष्य के चरण पवित्र हो जाते हैं। दान करने से हाथ पवित्र हो जाते हैं। हरि का भजन करने से मनुष्य का मन पवित्र हो जाता है। वेद और सद्ग्रंथों के सुनने से कान पवित्र हो जाते हैं।

पाँत कचैरी रेल में, सबसें पैलाँ जाय।
जो ना मानें बात जा, सो पाछैं पछताय।।

पंगत (प्रीतिभोज), कचहरी और रेल में बैठने के लिए निर्धारित समय से पूर्व जाना चाहिए। जो व्यक्ति इस बात पर विचार नहीं करता, उसे बाद में पछताना पड़ता है।

पियैं चौंच भर पाँन चिरिया, आगे कौं का करनें।
सूखी रोटी कौरा खाकैं, अपनी कथरी में जा परनें।।

चिड़िया चोंच भर पानी पीकर शांति से अपने घोंसले में सो जाती है। उसे भविष्य की कोई चिन्ता नहीं रहती है। उसी प्रकार बेचारे दीन व्यक्ति रूखी–सूखी रोटी के टुकड़े खाकर, फटी पुरानी कथरी ओढ़कर सो जाते हैं। उन्हें कल की कोई चिन्ता नहीं रहती है। इसी भाव को लेकर यहाँ एक कहावत और कही जाती है–

रूखा सूखा खाय कैं, ठण्डा पानी पीव।
देख पराई चूपड़ी, मत ललचाबैं जीव।।

कविवर रहीम के एक दोहे में भी इसी विचार की पुष्टि की गई है–

रहिमन धनि के घटि बढ़ैं, जात धनिन की बात।
घटैं बढ़ै उनको कहा, घास बेंचि जो खात।।

पितरन खौं पानीं, बामन खौं दान।
आये दरवाजें खौं, सदा रक्खें मान।।

पितृ पक्ष में पितरों का तर्पण करना, ब्राह्मणों को दान देना दरवाजे पर आए हुए भिक्षुक का मान रखना, ये भले लोगों की पहिचान है। संत कबीर भी अपनी एक साखी में कह गए हैं –

साँईं इतना दीजिए, जा में कुटम समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय।।

पैले दिन कौ पाँवनों, दूसरे दिन कौ पई।
तीसरे दिन रओ सो बेसरम कई।।

ससुराल में पहले दिन तो खूब आदर–सत्कार होता है। पाँहुने को हाथों हाथ लिए फिरते हैं। दूसरे दिन उन्हें एक मुसाफिर मानकर थोड़ा बहुत खातिरदारी होती है। तीसरे दिन उन्हें बेशरम मानकर उपेक्षा होने लगती है। इसी जोड़ की एक कहावत और कही जाती है–

ससुरार सुख की सार, जब रहैं दिना दो चार।
जो रहै मास पखवार, सिर पर गठरी बगल में फार।।

बाढ़ई की बगल, लुहार कौं आँगौ।
देख चलौ नईं होबै खाँगौ।।

बढ़ई की बगल और लुहार के आगे से बचना चाहिए। यदि आप सतर्क नहीं रहे तो एक न एक दिन चोटिल होने का भय है।

बेटा तें बेटी भली, जो कुलवंती होय।
नाव मताई बाप कौ, सबयैं बड़ाई होय।।

पुत्र की अपेक्षा पुत्री बहुत अच्छी होती है। जो कुलवती बनकर अपने माता–पिता के नाम को उजागर कर देती है।

भइया पइसा पास कौ, सबसें नीकौ होय।
गाँठ बँधे के भाई बहिन, विपत परें नईं कोय।।

पास में पइसा सबसे अच्छा होता है। जब तक आपकी गाँठ में पैसा है, तब तक भाई–बहिन साथ देते हैं। विपत्ति में कोई किसी के काम नहीं आता है।

भइया जा संसार में, दोई सुक्ख महान।
सुत के सिर मौर हो, समदिन मुख कौ गान।।

भाइयों! इस संसार में दो ही महान सुख हैं। पुत्र के सिर पर मौर बँधा हो अर्थात् पुत्र का विवाह हो रहा है और समधिन के मुख से मीठे–मीठे वैवाहिक गीत सुनने को मिल रहे हैं।

माता जनमें दो जनें, कै दाता कै सूर।
नाँतर तौ बाँझहि भली, बृथा गमाबैं नूर।।

जो माता दाता या शूरवीर दो प्रकार के पुत्रों को जन्म देती है, उसका जीवन धन्य और सार्थक है। अन्यथा उसका बाँझ रहना ही अच्छा है। वह अपने सौंदर्य को व्यर्थ में ही नष्ट कर देती है।

यारी करें सो बाबरौ, करकैं छोड़ें क्रूर।
कै तौ और निबाहिए, कै फिर रइयें दूर।।

प्रेम करने वाले प्रायः बावले होते हैं। जो प्रेम करके कुछ समय बाद संबंध विच्छेद कर देते हैं। वे क्रूर होते हैं। प्रेम करके उसे जीवन भर निभाना चाहिए, नहीं तो उससे दूर रहना ही अच्छा है। इसकी पुष्टि संत कबीर ने अपने एक दोहे में की है –

नेह निबाहे ही बनें, साँचे बनें न आन।
तन दे मन दे सीस दे, नेह न दीजे जान।।

राँड़ साँड़ अरू, अरना भैंसा।
जे बिचलें तो होबैं कैसा।।

विधवा, साँड़ और जंगली भैंसा यदि ये बिगड़कर विचलित हो जाते हैं तो स्थिति बहुत भयावह हो जाती है।

राज दुआरें साधु जन, तीन वस्तु खौं जाय।
कै मीठौ कै मान खौं, कै माया की चाय।।

राज–दरबार में साधु लोग तीन वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए जाया करते हैं। मीठा–मीठा सुस्वाद भोजन, समुचित मान–सम्मान अर्थात् धन प्राप्त करना चाहते हैं।

चीकनों घाट बैठकैं उतरनें आऊत।

फिसलन वाले नदी के घाट पर सँभल–सँभल कर उतरना पड़ता है। खतरनाक और भयावह स्थल पर सतर्कता से चलने में लाभ है।

बसत न राखैं आपनी, चोरें गारीं देत।

अपनी वस्तुओं को संभालकर नहीं रखते और चोरों को गालियाँ दिया करते हैं। लापरवाही के कारण ही चोरों को अवसर प्राप्त होता है।

चीलरन के डर सें कथरी नईं छोड़ी जात।

चीलरों के डर से कथरी का छोड़ना उचित नहीं है। बाधाओं के डर से अपना काम नहीं छोड़ना चाहिए, बल्कि बाधाओं के निवारण करने का प्रयास करना चाहिए।

चौंखरन की दौर मगरे नों।

चूहों की दौड़ मगरे तक ही होती है। छोटे लोगों की पहुँच बहुत सीमित होती है। वे अपनी सामर्थ्य से बाहर कोई काम नहीं कर सकते हैं। वे एक संकीर्ण दायरे में ही भटकते रहते हैं।

छींकतन छिनारे नईं लगावने आऊत।

किसी की स्वाभाविक छींक को दोष लगाना ठीक नहीं है। किसी निरपराधी को अपराधी सिद्ध करना न्यायोचित नहीं है।

छोड़े गाँव कौ नाँव का लैंनें।

किसी गाँव अथवा वस्तु को छोड़ देने के बाद बार–बार उसका नाम लेने की कोई आवश्यकता नहीं है। छोड़ी हुई वस्तु का स्मरण करने से मानसिक पीड़ा होती है। अतः उसकी चर्चा करना व्यर्थ है।

जागैं सो पाबैं, सोबैं सो खोबैं।

जो जाग्रत और सचेत रहकर अपने कार्य में संलग्न रहता है, उसे सफलता की प्राप्ति होती है। जो सो सोकर समय व्यतीत करता है, उसके हाथ कुछ नहीं लगता। कहा भी गया है– 'अब पछतायें होत का, चिड़िया चुग गईं खेत।'

जीकी बंदरिया ओई सैं नचत।

जिसका जो पालतू पशु होता है, वह उसी के इशारे पर चलता है। जिसके हाथ का जो वाहन अथवा मशीन होती है, वह उसी के हाथ से संचालित होती है। दूसरा उसमें असफल हो जाता है।

जी पातर में खानें, ओई में छेद करनें।

कुछ लोग इतने कृतघ्न और नीच होते हैं कि जिस पत्तल में खाते हैं, उसी में छेद करते हैं। जिसके आश्रय में रहकर विविध सुखों का उपयोग करते हैं, फिर उसी का छिद्रान्वेषण करने लगते हैं। इससे बड़ी नीचता और क्या हो सकती है! अपने साथ रहने वाली पत्नी अच्छी होती है। पुत्र के साथ भोजन करना अच्छा लगता है। और दूसरे संग तो केवल होली में जाने योग्य है, अर्थात् निरर्थक है।

समदी माँगें दान दायजौ, लरका माँगैं जोय।
सबई बराती जो चहें, अच्छी पंगत होय।।

विवाह में समधी अर्थात् लड़के के पिता को बहुत अच्छे दान–दहेज को चाहने की इच्छा होती है। लड़का अपने लिए सुंदर दुल्हन प्राप्त करना चाहता है। बाराती प्रीतिभोज में सुस्वादु व्यंजन खाना चाहते हैं।

सुत ऐसे घर ब्याहिए, जो समता में होय।
खान–पान बेहार में, मिलता–जुलता होय।।

पुत्र का विवाह ऐसे घर में करना चाहिए जो अपनी बराबरी का हो। खान–पान और व्यवहार एक दूसरे से मिलते–जुलते हों। कहा भी गया है– 'समता हू सों कीजिए, ब्याह बैर अरु प्रीत।'

होरी बीचैं आठ दिन, व्याह बीच दिन चार।
सठ साधू वेश्या वधू, सबई भये इक सार।।

होली के आठ दिन बीच और विवाह के चार दिन बीच सज्जन, असज्जन, वेश्या और वधू सब एक से हो जाते हैं।

ज्ञानी सें ज्ञानी मिलैं, करें ज्ञान की बात।
गदहा सैं गदहा मिलैं, मारैं दो–दो लात।।

हर प्राणी अपनी जाति के अनुरूप क्रिया–कलाप प्रदर्शित करता है। जब कोई ज्ञानवान व्यक्ति किसी ज्ञानी से मिलता है तो आपस में ज्ञान की चर्चा किया करते हैं और जब एक गधा दूसरे गधे से मिलता है तो एक दूसरे को दो–दो लातें फटकार कर स्वागत करते हैं। सभी अपने स्वभाव का परिचय दे देते हैं।

तुरत दान महा कल्यान।

जब मन में दान करने की भावना जाग्रत हो तो तुरन्त ही दान करना चाहिए जो, विशेष कल्याणकारी होता है। मनोभावना को टालना उचित नहीं हैं।

अपनें–अपनें धरम की, सब काहू खौं चीन।

मनुष्य अपने स्वार्थ के अनुरूप काम करता है।

अपनी कयें जा रये।

अपनी–अपनी हाँकते रहना।

अड़ा के पड़ा बिदोना।

नित्य नये षड्यंत्र रचना।

अपनों खाव, परोसी खौं डराब।

किसी कार्य को पूरा करते समय दूसरों की चिन्ता करना।

आटे दार कौ पता चलहै।

जिम्मेदारी आने पर सब समझ में आ जाता है।

आँख का काजर चुराबो।

बड़ी सफाई से अपना काम बना लेना।

एक के हगें बिटा नईं लगत।
मिल–जुल कर ही कार्य पूर्ण किया जा सकता है।

कडुआ–कडुआ थू, मीठों–मीठों गप्प।
केवल भले–भले के साथी।

कबरा के चित कबरा।
जैसे को तैसा मिलना।

कर जाए दाढ़ी वारों, पकरो जाए मूँछन वारो।
प्रायः अपराधी बच जाते हैं और निरपराधी दण्डित होते हैं।

काम सटो, दुख बिसरो।
कार्य पूर्ण होने पर सहयोगी को भूल जाना।

कान ठाँढ़े हो गए।
चौकन्ना हो जाना।

कानी पंचायत।
न्याय–संगत न होना।

कानों कान फैल गइ।
धीरे–धीरे सर्वत्र फैल जाना।

कान नईं दये जा रये।
सुनने में कष्ट हो रहा है।

काम के न काज के दुश्मन अनाज के।
काम से जी चुराना और खाने के लिए आगे रहना।

कै बार बिरोबर बारीकी, कै मूसर सो मोटौं भर्रो।
कभी–कभी छोटी सी छोटी वस्तु पर ध्यान दिया जाता है। और कभी बड़ी से बड़ी हानि पर गौर नहीं कर पाते हैं।

खसम करो सुख सोबे खौं, लग गये खपरा ढोबे खौं।
सुख–सुविधा के लिए व्यवस्था की थी, किन्तु कुछ काम नहीं आया।

गांठ कौ दाम, जब चाय आये काम।
घर में रखा पैसा कभी न कभी काम आता है।

गिरदोंना सा रंग बदलना।
अवसरवादी होना।

घर की घर में रैंन दो।
घर के गोपनीय कार्य बाहर उजागर नहीं हों।

घुटना पेटई खौं मुड़त है।
अपना आदमी कभी अपने लिए काम आता है।

चिरई चौकें ना बाघ भौंके ना।
सन्नाटा छा जाना।

छाती पै होरा भूंजना।
अनाचार करते रहना।

छाती ठोक कर कहना।
पूर्ण विश्वास और हिम्मत के साथ अभिव्यक्ति।

जमराज से पट्टा लिखा लाना।
अनेक वर्ष तक जीवित रहना।

जर है तो नर नईं तो पूरौ खर।
यदि घर में धन सम्पत्ति है तो मनुष्य की कीमत है, अन्यथा वह गधे के समान निरर्थक।

जस न थराई, हरामजादी कहाई।
किये हुए को भूल जाना, कृतघ्नता प्रदर्शित करना।

जादां गुरयाई में कीरा परत।
घनिष्ठ सम्बन्धों में प्रायः दरार पड़ जाती है।

जी जुड़ाना।
पूर्ण शान्ति प्राप्त करना।

जी गाँव खौं जानें नइयाँ, ऊकी गैल का पूंछनें।
अनावश्यक वार्तालाप करना।

जी में जी आना।
धीरज की साँस लेना।

जेई को आय नो–बांयनो, ओइयें खड़ा बांयनों।
जिसका सब कुछ है, वही अभाव ग्रस्त रहता है। यह एक आश्चर्य जनक घटना है।

झार पोंछकैं बैठबों।
सब कुछ गवाँ बैठना।

ठकुर सुहाती।
अधिक खुशामद करना।

ढोल गरें पर गओ, बजाओ चाय नईं बजाओ।
उत्तरदायित्व का निर्वहन करना अपने हाथ में है।

ढोंग–धतूरे दिखाना।
पाखण्ड प्रदर्शित करना।

ताल के घोलना।
इशारे पर नाचने वाले।

तीन के तेरा होना।
बुरी तरह से बर्बाद होना।

तेली कौ तेल जरें, मसालची कों मँढ़ जरें।
देने वाले तो देते ही हैं, किन्तु देखने वालों को कष्ट होता है।

तैं रानी मैं रानी कौन भरे कुआँ कौ पानीं।
समान वर्ग वालों में काम की स्पर्द्धा।

धुतिया पैरें जुल्फें रखायें, भैया फिर रयें परों कौ खायें।
फैशन और साज–सज्जा के चक्कर में आदमी भूखा बना रहता है।

धोओ सौ–सौ बार काजर सेत न होत।
किसी की प्रकृति को परिवर्तित करना कठिन है।

नरबदा की सब बटइयाँ शंकर नईं होतीं।
हर पत्थर भगवान नहीं हो सकता है।

नंगे सपरें निचोबै का?
विपन्न क्या प्रदर्शन कर सकता है।

नाऊ–नाऊ कित्ते बार, बोलें हजूर आंगे आये जात।
किसी कार्य का परिणाम देर अबेर सामने आता ही है।

पंचों के लरका भूकों मरत हैं।
बड़े लोगों की संतान प्रायः निकम्मी निकलती है।

पडा की नातेदारी।
अनमेल और झूठा संबंध।

पराई मूंढ़ पथरा सी।
दूसरे की वस्तु का दुरूपयोग करना।

पनमेसुर के पूरे।
बहुत ही बुरी प्रकृति का व्यक्ति।

पानी में हुन हेरबो।
सदैव कुदृष्टि रखना।

पाप चढ़ो मगरे पै कूकैं।
पाप कभी छिपता नहीं है।

पैलें चराऊत ते ढोर, अब काटत हैं कान।
कभी–कभी भोला–भाला आदमी बहुत चतुर बन जाता है।

पैसा न धेला, बऊ चलीं मेला।
साधनहीन होते हुए भी आत्म प्रदर्शन।

बजा न पाबैं पाई, लयें फिरत मिरढंग की सांई।
क्षमता हीन होते हुए भी डीगें हांकना।

बदरिया ऊनीहै तौ बरसहै जरूर।
लक्षण दिखाई देने लगे तो कार्य पूर्ण होगा ही।

आबर मोय मौं में पर।
आलसी व्यक्ति, श्रम किए बिना लाभ चाहते हैं।

बसोर कौ मठा।
जो किसी काम का नहीं होता।

बाप जिन्द और बेटा भूत।
पिता–पुत्र के कार्यों में समानता।

बारी खेतें खाय।
कभी–कभी रक्षक, भक्षक बन जाते हैं।

बारे–बूढ़े एक बिरोबर।
वृद्धों और बच्चों का आचरण समान होता है।

बारा बरस में घूरे के दिन फिरत।
समय परिवर्तनशील है। छोटे से छोटा आदमी कभी बहुत बड़ा बन जाता है।

बासी बचे न कुत्ते खाँय।
कोई सामग्री इतनी तैयार की जाय, जिसका पूरा–पूरा उपयोग हो जाय।

बूढ़ी घोड़ी लाल लगाम।
केवल मिथ्या प्रदर्शन।

बुरये से दई डरात।
बुरे लोगों से देवता भी भयभीत होते हैं। बाबा तुलसी भी मानस में कह गये हैं–
वक्र चंद्रमहिं ग्रसें न राहू।

बेपेंदी कौ लोटा।
सिद्धांतहीनता। अस्थिरता।

हवा घाँई उड़बौ।
तीव्र गति।

भगवान तरे की कैबों।
सत्य कथन और सत्य आचरण।

भर भांवरन में कन्या हगासी।
असली समय पर चूक जाना।

भरे तला में घोंघा प्यासौ।
सुखों के सागर में दुखी। या कबीर के शब्दों में– *पानी में मीन प्यासी, मोहि तक तक आवत हाँसी।*

भाई कौ भाई बाहर बैठ जाई,
जोरू कौ भाई चौका लों जाई।
सगे भाई की अपेक्षा साले का घर में विशेष महत्त्व।

भार झोंकना।
अनावश्यक परिश्रम करते रहना।

भूतों के बराई और रडुवों कैं लुगाई नईं होत।
निस्सार से कुछ प्राप्ति की आशा करना व्यर्थ है।

मरघटा कूका दै रओं।
मृत्यु का समय समीप आना।

महाभारत मचा दओ।
लड़ाई–झगड़ा करना।

मांगे कौ मठा मोल बिरोबर।
मुफ्त की वस्तु खरीद के समान प्रतीत होना।

मांगे कौ बैल, मसक्कत से जोतो।
किसी वस्तु के पीछे पड़ना।

मूँढ़ जेवरिया बाँधे।
किसी कार्य को प्रारंभ करते ही बाधा उत्पन्न होना।

मिलें न सूखी चुपर कैं मांगे।
योग्यता से अधिक प्राप्ति की इच्छा।

मूत कौ दिया जर गओ।
अधिक अनाचार करना।

मूसर नई बल्दावनें।
किसी तरह का व्यवहार न रखना।

मौवा से टपक रये।
एक–एक कर उपस्थित होना।

मौ पै पारों रखना।
चुप बने रहना।

मौं घालत फिर रये।
चाहे जिधर खाते–पीते रहना।

मोरों पेट हाऊ, मैं न दैहों काऊ।
घोर स्वार्थ में डूबा रहना।

यारी कीजे जानकैं, पानी पीजे छान कैं।
सोच समझकर मित्रता और पानी को छानकर पीना उचित है।

रकत चूस रये।
अधिक शोषण करना।

रन्त भोंर पर जैहें।
घोर उत्पात करना।

राई कौ पहार।
छोटी सी वस्तु को बड़ा प्रदर्शित करना।

राख पत सो रखापत।
सम्मान करने से ही सम्मान मिलता है।

राख लगा दई।
जान–बूझकर हानि पहुँचाना।

राजा कैं आई सो रानी कहाई।
किसी बड़े के सम्पर्क में आने से अपने आप बड़प्पन आ जाता है।

राजा कयें सो न्याय।
जो कुछ मालिक के मुख से निकले वही सत्य है।

राँड कौ साँड।
अनियंत्रित विधवा की चरित्रहीन सन्तान।

राँड कौ राज।
किसी स्वेच्छाचारिणी विधवा का प्रशासन।

रात भर पीसो, पारे में उठाओ।
कठोर परिश्रम का अति सूक्ष्म फल प्राप्त होना।

रिपट परे की हर गंगा।
अनायास लाभ प्राप्त होना।

रेवता में नाव खेबों।
निरर्थक प्रयास करना।

रोटी तोड़ते रहना।
मुफ्त का खाते रहना।

अपने रोम पर विश्वास नईं।
किसी पर भी भरोसा करना उचित नहीं है।

लम्पा घाँई ऐड़बों।
अनावश्यक अकड़ दिखाना।

लंगोटी–धोना।
सेवा–खुशामद करते रहना।

सड़ी गधैया, मखमल की झूल।
खराब वस्तु को ढंकने का प्रयास।

समय करोंटा लै गओ।
शुभ समय व्यतीत हो जाना।

सरग नसैनी लगाबो।
असंभव को संभव करने का प्रयास ।

साँची कतन चिनूना काटें।
सत्य हमेशा कडुवा होता है।

दर्शन (धर्म, जीवन–दर्शन, भाग्य) आधारित

इन कहावतों के अन्तर्गत धर्म, जीवन–दर्शन और भाग्यवाद को प्रमुख स्थान दिया गया है। भारतीय विद्वानों ने धर्म, जीवन दर्शन और भाग्यवाद के विषय में अपने अनुभव, अध्ययन के अनुसार क्या सोचा–समझा और विचार किया है, वह गूढ़ ज्ञान तत्व इन कहावतों में सुरक्षित है जो आज कुछ वयोवृद्ध व्यक्तियों के मुख से सुनने के लिए मिलती रहती हैं। इनको सुनकर हमें प्राचीन धर्म और दर्शन ग्रंथों को पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। उनका सार–तत्व हमें इन कहावतों में प्राप्त हो जाता है। किन्तु इस वैज्ञानिक चकाचौंध में आज के इस युवा वर्ग के ज्ञान–वर्द्धन हेतु कुछ महत्त्वपूर्ण कहावतों के उदाहरण प्रस्तुत हैं।

गाँठी बंधन वे करें, जिनकें देव न होय।
आँगे पीछें हरि खड़े, जो माँगौं सो देय।।

गठरी बाँधकर या धन संग्रह वही व्यक्ति करते हैं, जिनके मन में ईश्वर के प्रति आस्था और विश्वास नहीं होता है। आस्थावान् व्यक्ति के आगे–पीछे तो भगवान खड़े ही रहते हैं। भक्त भगवान से जो याचना करता है वे उसे तुरन्त प्रदान कर देते हैं।

दाता के घर लच्छमी, ठाँढ़ी रहत हजूर।
जैसें गारा राज खौं, भर–भर देत मजूर।।

दानी के घर में धन की कोई कमी नहीं होती। उसके सामने सदैव लक्ष्मी खड़ी रहती है। जिस प्रकार मकान बनाने वाले कारीगर के सामने गारे भरे तसला लिए हुए मजदूर खड़े ही रहते हैं। उसे गारे की कोई कमी नहीं हो पाती है। कविवर तुलसी ने अपने एक दोहे में इस मत की पुष्टि करते हुए कहा है –

तुलसी पक्षिन के पियें, घटैं न सरिता नीर।
धरम किए धन ना घटें, जो सहाय रघुवीर।।

ज्यों केरा के पात में, पात–पात में पात।
त्यों ज्ञानी की बात में, बात–बात में बात।।

जिस प्रकार केले के पत्ते में पत्ते के अंदर पत्ते निकलते हैं उसी प्रकार ज्ञानी की एक बात से अनेक बातें अपने आप निकल पड़ती हैं।

आभूषन न गढ़ाइये, पुँजी पराई पाय।
गहनों जिन गानें धरों, बूड़ ब्याज में जाय।।

दूसरों से ब्याज पर रुपया उधार लेकर आभूषण नहीं बनवाना चाहिए। कर्ज लेने के लिए गहनों को गिरवी रखना ठीक नहीं है। प्रायः गहने ब्याज में ही डूब जाते हैं।

एकई जड़ से आयते, उतरे एकई हाट।
अपनें–अपनें कर्म सें, हो गये बाराबाट।।

सबका मूल उद्‌गम एक ही है। सबके क्रय–विक्रय के लिए बाजार एक ही है, किन्तु लोग अपने–अपने कर्मों से स्वयं ही नष्ट हो जाते हैं। बाबा तुलसी भी कह गए हैं–*'जो जस करहिं सो तस फल चाखा।'*

गोहूँ अरू गोपाल को, कोठी कंठ न टार।
काल कलेस न व्याप है, मतौ विचार–विचार।।

गेहूँ की कुठिया को घर से नहीं टालना चाहिए और न गोविन्द को कंठ से निकालना चाहिए, जिससे काल का कष्ट नहीं व्याप सकता है।

जब किस्मत मारैं जोर,
तों कोदों नीदैं चोर।।

जब मनुष्य का भाग्य प्रबल होता है, तो चोर तक कोदों की फसल नींदने को मिल जाते हैं। ये सब मनुष्य के भाग्य की प्रबलता है। कहा भी गया है –*जब भगवान देता है तो छप्पर फार कर देता है।*

नर चेती नहिं होत है, हरि चेती ततकाल।
बलि चाहौ आकास खौं, हरि पठ्‌यो पाताल।।

मनुष्य की इच्छा से कुछ नहीं होता। हरि इच्छा से सारे कार्य पूर्ण हो जाते हैं। राजा बलि तो आकाश में रहना चाहते थे, किन्तु वामन भगवान ने उन्हें पाताल में भेज दिया था। इसी तरह की एक कहावत यहाँ कही जाती है–

मोरी चाही और है, प्रभु चाही कछु और।
मोरी ठाटी न ठटें, प्रभु ठाटी सो ठौर।।

बाबा तुलसी ने भी मानस में कहा है–

जो इच्छा करिहहु मन माहीं, राम कृपा कछु दुरलभ नाहीं।

भुगत मान भुगतैं बनें, ज्ञानी मूरख दोय।
ज्ञानी भुगतें ज्ञान सों, मूरख भुगतें रोय।।

जो मनुष्य का भाग्य है उसे ज्ञानी और मूर्ख दोनों को भोगना ही पड़ता है। ज्ञानी तो ज्ञान से विचारते हुए उसे भोगते रहते हैं, किन्तु मूर्ख रो–रोकर उस भाग्य–लेख को भोगते रहते हैं। दोनों के भुगतने की स्थिति पूरी तरह से अलग–अलग है।

भूँकें भजन न होय गुपाला।
लैलों अपनी कंटी माला।।

भूखे रहकर किसी काम में मन नहीं लगता है। भक्त कहता है कि– हे भगवान! भूखे रहकर आपके भजन में हमारा मन नहीं लगता है, इसलिए यह कंठी माला अब आप ही संभालिएगा।

मनुस बली नईं होत है, समय होत बलवान।
भीलन लूटी गोपिका, बेई अर्जुन बेई वान।।

मनुष्य बलवान नहीं होता, समय ही बलवान होता है। एक समय ऐसा था कि वीर अर्जुन के समक्ष कोई भी बड़ा से बड़ा धनुर्धर नहीं टिक पाता था। अब समय ऐसा आया है कि भीलों ने गोपियों को लूट लिया और वही धनुर्धर अर्जुन चुपचाप देखते रहे।

लाख जतन कोऊ करें, कोटिक करे न कोय।
हौनी तौ होकैं रबैं, अनहोनी ना होय।।

चाहे कोई लाखों और करोड़ों प्रयत्न ही क्यों न करे, किन्तु होनी होकर ही रहती है। जो नहीं होना है, वह नहीं होगा।

सकल भूमि गोपाल की, या में अटक कहा।
जो या में अटक रहा, सोई अटक रहा।।

यह सारी भूमि और सारा संसार भगवान का है। इसमें जरा भी संदेह नहीं है। जो इसमें अटक जाते है, वे फिर अटके ही रह जाते हैं।

सरसुति के भण्डार की, बड़ी अपूरब बात।
ज्यों–ज्यों खरचौ त्यों बढ़ें, बिनु खरचैं घटि जात।।

सरस्वती के भण्डार की बड़ी विचित्र स्थिति है। जैसे–जैसे हम उसे खर्च करते हैं, वह बढ़ता ही जाता है। यदि हम खर्च करना बंद कर दें तो वह अपने आप घटता चला जायेगा।

साधु सती और सूरता, ज्ञानी औ गुनवंत।
ऐते जनैं ना लौटही, जो जुम जाय अनंत।।

साधु, सती, शूरमा, ज्ञानवान और गुणवान अपने मूल सिद्धांतों से नहीं पलट सकते हैं, चाहे अनंत युग ही क्यों न बीत जाये इन्हें मुक्ति प्राप्त हो जाती है और वे इस संसार में लौटकर नहीं आते हैं।

आज हमाई सगाई, भोर हमाओ ब्याव।
टूट गई टैंगड़ी रैगओ ब्याव।।

कभी–कभी असामयिक घटना घटित होने के कारण मंगल कार्यों में अवरोध उत्पन्न हो जाता है और सारी आशाओं पर पानी फिर जाता है। आज सगाई होती है और कल विवाह होना है, किन्तु टाँग टूट जाने के कारण विवाह नहीं हो पाया और सारी कल्पनाएँ धरी रह गईं।

हर ने कहौ बैन नें लिखो, छटी रैन के अंक।
राई घटैं न तिल बढ़ें, रह जियरा निस्संक।।

भगवान शंकर के कहने पर ब्रह्मा मनुष्य के मस्तक पर जो भाग्य लेख लिख देता है, उसमें से न राई भर घट सकता और न तिल भर बढ़ सकता है। अतः निश्चिन्त होकर जीवन व्यतीत करना चाहिए। किन्तु कुछ विचारक भाग्यवाद का खण्डन करते हुए कर्म को प्रधानता देते हैं। उनकी दृष्टि से कर्म और पौरुष से ही मनुष्य के भाग्य का निर्माण होता है। भाग्यवाद तो कोरी कल्पना है। दूसरों को धोखा देने का एक बहाना है। महाकवि दिनकर जी ने 'कुरूक्षेत्र' महाकाव्य में लिखा है –

भाग्यवाद आवरण पाप का, और शस्त्र शोषण का।
जिससे रखता दबा एक जन, भाग्य दूसरे जन का।।

भाग्यवाद की दुहाई तो केवल अकर्मण्य और आलसी लोग ही दिया करते हैं।

हाथ सुमरनी घर सुआ, द्वारें तपत अतीत।
ताकौ जमला का करें, साहब के परतीत।।

जो हाथ में सुमरिनी लेकर राम नाम का जाप किया करता है। घर के दरवाजे पर पिंजड़े का तोता सीताराम रटता रहता है। जिसके घर पर कभी यमदूत नहीं पहुँच पाते हैं। उस पर भगवान की पूर्ण कृपा रहती है। इस क्षेत्र में कुछ लोग ये भी कहते हैं *–संकर सहाय तो भयंकर का करें।*

वैद धनी राजा नदी, अरु पंडित नहिं होय।
जितै पाँच जे ना हुएँ, उतै बसौ जनि कोय।।

जिस स्थल पर वैद्य, धनी लोग, राजा, नदी और पंडित ये पाँच न हों, वहाँ कभी निवास नहीं करना चाहिए।

मन मोती अरु दूध कौ, इनकौ एक सुभाव।
जे फाटे सैं न जुरें, कोटिक करों उपाव।।

मन, मोती और दूध का स्वभाव एक समान होता है। ये तीनों फटने के बाद जुड़ नहीं पाते हैं। चाहे करोड़ों उपाय ही क्यों न किए जायें।

मिल चलिए रहिए मिले, तजिए क्रोध कुवाद।
हँसी भली न मसकरी, बहुत वचन संवाद।।

सदैव मिल–जुलकर रहना चाहिए। क्रोध और कटुवचन बोलना ठीक नहीं है। किसी से हँसी–मसखरी करना और अधिक बोलना अच्छा नहीं होता है।

समय–समय खौं देखिए, समय–समय की बात।
काहु समय में दिन बड़ौ, काहु समय में रात।।

सदैव समय को देखकर समयानुकूल कार्य करना उचित है। समय तो परिवर्तनशील होता है। कभी गाड़ी नाव पर कभी नाव गाड़ी पर। ये तो समय का चक्र है। किसी समय दिन बड़े और कभी रातें बड़ी होती है।

ज्ञानीं मारैं ज्ञान सैं, रोम–रोम भिद जाय।
मूरख मारैं डेंड़का, टूट कनपटी जाय।।

ज्ञानी व्यक्ति ज्ञान की बातें कह–कह कर लोगों को लज्जित कर देता है, जिसका प्रभाव मनुष्य के रोम–रोम पर दिखाई देता है किन्तु मूर्ख डण्डा मारकर लोगों को चोटिल कर देता है।

दाता सें सूम भलों, जो तुरतईं ऊतर देत।

दाता से तो लोभी ही अच्छा है, जो भिखारी को तुरंत ही जवाब दे देता है, जिससे उस बेचारे को दरवाजे पर आशा बाँधे खड़ा नहीं रहना पड़ता है। वह दूसरे घर जाकर अपनी पूर्ति कर लेता है।

हो गओ व्याब रजउ की बउ कौ।
अब नईं हुइयें काम खुदउ कौ।

बीज खराब होने पर पेड़ नहीं उगता ।

हैं करनी के हीन, खुद खौं साधु बतावैं।
अपन गोटा खायें, और खौं ज्ञान लखावै।

अनुभवहीन कभी–कभी बड़े अनुभवों की बात करते हैं। डीगें हाँकने लगते हैं।

हाँत नइयाँ कौंड़ी, नाक छिदाबैं दौड़ी।

अभावग्रस्त होते हुए भी शौक करना।

हाँके सें टट्टू चलें, सूंघे अतर बसाय।
बेटा पूँछें जानिये, जै तीनई काम नसांय।

घोड़े को हाँकना पड़े, इत्र का सूंघने से पता लगे। बेटा से पूँछने पर पिता का पता लगे। यह लज्जाजनक है।

हर्र बहेरों आँवरों, जो मैंपर से खाय।
काँख चाँप गजराज को पाँच कोस लै जाय।

जो लोग हर्र, बहेरा और आंवला के चूर्ण को शहद के साथ खाते हैं। वे इतने शक्तिशाली हो जाते हैं कि हाथी को भी उठा सकते हैं।

हटा के भटा, उमरिया के पान।
सागर की बेड़िनी, जबलपुर के ज्वान।

हटा नगर के भाटा, उमरिया के पान, सागर की नर्तकियाँ और जबलपुर के जवान बहुत प्रसिद्ध हैं।

सात खाँई बासी–कुसी, सात खाँई सद्द।
सास के नाँसे साग लियाईं, सात खाँई जब्ब।

इतना अधिक खाने वाले की भूख समाप्त हो ही जायेगी, उपचार के लिए वैद्य बुलाना पड़ेगा।

समय परे के गजराजा, मेंटन हारों कौन।
मों बाघन की माँद में, लड़ई टिका गओ टौन।

समय पड़ने पर समर्थ भी असमर्थ हो जाता है।

बंज–सौंज तिरिया भली, भोजन सुत के संग।
और संग सब जान दे, होरी जू के संग।

व्यापार में पत्नी का सहयोग और भोजन करते समय पुत्र का साथ आनंददायक होता है और सब साथ व्यर्थ हैं।

कुदई परस कैं मठा खौं गये।

पूर्व योजना के बिना भोजन की तैयारी।

कोऊ खौं भटा बायरे और कोउयें पथ्य बिरोबर।

किसी–किसी को कोई वस्तु लाभकारी और किसी को वही वस्तु हानिकारक होती है।

कोंदो में घी खोब, मूरख सें दुख रोव।

अपात्र के समक्ष पात्रता की बात करना व्यर्थ है।

खाओ न पियों, जुग–जुग जियों।

बिना खाये–पिये व्यक्ति कैसे स्वस्थ रह सकता है?

खाकैं मौं पोंछ लओ।

चोरी–चोरी मुफ्त का खा लेना।

खायेंते बेर मुँह में लगायेंते चांवर।

केवल ऊपरी दिखावा।

खाव–खाव मम्मा, तुमारऊ तों आय।

कुछ लोग मुफ्त का खाने के चक्कर में रहते हैं।

खँाय खँाय पहार बिला जात।

खाते–खाते भण्डार नष्ट हो जाते हैं।

खीर खौं सौंज, महेरी खौं न्यारे।

केवल भले–भले के साथी। कुसमय में दूर रहना।

खुद तो बिसायें न, दूसरों को टोर–टोर खायें।

पराया माल खाने में आगे रहना।

गुर खायें गुलगुलन सें परहेज।

छिपकर कुकर्म करने वाले लोग पावनता का प्रदर्शन करते हैं।

घर कौ परसैया, अँधयारी रात।

परिचय का अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करना।

घी कां गओ खिचरी में खिचरी कां गई घी में।

पारस्परिक प्रेम–भाव और आदान–प्रदान की स्थिति।

रहिमन रहिला ही भली, जो परसत मन लाय।
जो परसत मन मैला करें, वा मैंदा जर जाय।।
प्रेम भाव से कराये गये भोजन से संतुष्टि प्राप्त होती है।

घी और गुर के घेंघुर से, दही मठा के ठेंगुर से।
लाड़–प्यार सें पाला गया, कमजोर व्यक्ति भी स्वस्थ हो जाता है। उसकी दृष्टि में दही मठा का कोई मूल्य नहीं है।

घूँट भर अमृत पियो, चिराओ और चले गये।
दूसरों को अपमानित करने वाले खुद अपमानित हो जाते हैं।

चित्त लागो भोजनों में कवित्त को कैबैं।
भूखे व्यक्ति को कुछ भी अच्छा नहीं लगता है।

भूकौ बामुन नार–बिरोबर।
भूखा ब्राह्मण सिंह के समान आक्रामक हो जाता है।

चिरईंयँन सें पेट नईं भरत।
छोटी और अवैध उपलब्धि से संतुष्टि प्राप्त नहीं होती।

जब दाँत हते सो चना नईं और जब चना है सो दाँत नईं।
सुख उपभोग में कोई न कोई बाधा उत्पन्न होना।

जितै मिली दो, उतै रये सो।
उदर पोषण हेतु सब कुछ करने को तैयार।

जात खाये कैं जाँतौ।
सदैव स्वार्थ में डूबे रहना।

जीजा हमाये इत्ते सीधे, एक परसों दो छोड़त हैं।
सीधेपन का मिथ्या प्रदर्शन।

जे घर हींग न हरदा, ते घर जेबैं बिरदा।
जिस घर में हींग और हल्दी का उपयोग नहीं होता, उस घर के लोग अस्वस्थ रहा करते हैं।

जे घर में सुरती नहीं, नहीं पान सें हेत।
वे नर ऐसे जायेंगे, ज्यों मूली कौ खेत।

जिस घर में पान–तंबाखू का उपयोग नहीं होता, उस घर के लोगों का जीवन निरर्थक ही निकल जाता है। बुन्देलखण्ड में तम्बाखू की महत्ता पर एक दोहा प्रचलित है–

कृष्ण चले बैकुण्ठ खौं, राधा पकरी बाँह।
यहाँ तमाखू खाय लो, वहाँ तमाखू नाँह।

जीने न पीई गाँजे की कली, वौ लरका सैं लरकी भली।
इस कहावत में गाँजे को पूरूषत्व का मूल बताया गया है।

जो खाये चना, वौ रहे सदा बना।
जो लोग भोजन में चने का सर्वाधिक उपयोग करते हैं, वे सदैव स्वस्थ और सानंद रहते हैं।

ठंडों नहाबैं, तातौ खाबैं।
ऊघर बैद कभऊँ नईं जाबैं।
ठण्डे जल से स्नान करने वाले और ताजा भोजन करने वाले लोग कभी अस्वस्थ्य नहीं होते हैं।

थूंकन सतुआ सानबौ।
घोर कृपणता प्रदर्शित करना।

दूदों भरों, पूतों फरो।
सुख–समुद्धि और संतान से भरे–पूरे होना।

बूद करूला करना।
सुखमय जीवन व्यतीत करना।

सुद्ध दूध माय कौ और दूध गाय को।
सबसे शुद्ध और पौष्टिक दूध माँ का होता है और फिर इसके बाद गाय का।

दूद ब्यारी जे करे, सूखी हर्र चबायें।
बासै मौ पानीं पिये, तिन घर वैद न जायें।
दूध की ब्यालू करने वाले, सूखी हर्र चबाने वाले और सुबह पानी पीने वाले सदैव स्वस्थ रहते हैं। उन्हें उपचार की आवश्यकता नहीं होती।

नौ खाँय तेरा के भूक।
मनुष्य की तृष्णा कभी शान्त नहीं होती।

नीम दतौन जो करें, सूखी हर्र चबायें
निन्नें पानी जो पियें, उन घर वैद न जायें।
इस कहावत में नीम की दतौन को मान्यता दी गई है।

पाँचईं घी में मूँढ़ करैया में।
चारों तरफ से लाभ प्राप्त होना।

पानी के लचका में पनमेसुर की का थराई।
सहज कार्य में किसी के सहयोग की आवश्यकता नहीं होती।

पानी पी–पी कैं कोसबों।
मन से किसी का अकल्याण चाहना।

पेट में कुदई चुरना।
पेट में कुपच की आग लगना।

बंदर का जानें अधरक कौ स्वाद।
पारखी ही किसी वस्तु के गुणों को समझ सकता है।

आ बर मोय मौं में पर।
एक आलसी और निकम्मे की स्थिति।

बई बात खोटी, लरका माँगे रोटी।
अभावग्रस्त से किसी वस्तु की आशा करना।

जेई कौ आयनों–बायनों ओइयें खड़ा खायनों।
जिसका सबकुछ है उसी को खाने के लाले पड़े हैं।

बिना गरे के लीलबौ।
सामर्थ्य से बाहर कार्य करना।

मारन चाहों काउ खौं, बिना छुरी बिन घाव।
कै दो भैया नियम सें, घुइयाँ–पूड़ी खाव।
घुइयाँ–पूड़ी शरीर के लिए हानिकारक भोजन हैं।

भटा भर्त न खाये तों दुनियां में काहे को आये।
इस कहावत में भटा के भर्ते की प्रशंसा की गई है।

भूल गये राग–रंग, भूल गये चौकड़ी।
तीन चीज याद रहीं, नौन तेल लकड़ी।

विपन्नता में सारी कलाएं मंद पड़ जाती हैं।

भूखें बेर अघानें गन्ना।

भूख में बेर और भरे पेट में गन्ना चूसना हानिकारक है।

भीमसेंनी एकादशी, तीजा और शिवरात।
इन तीनों से कठिन है, लाला की बारात।
लाला की बारात में बरातियों को भूखा–प्यासा मरना पड़ता है।

मनाये–मनायें गौड़ बतेशा नई खात।
मनाने से कोई काम पूरा नहीं होता।

माता न परसें भरे न पेट, मघा न बरसें भरे न खेत।
मघा नक्षत्र की वर्षा से खेत भरते हैं, उसी प्रकार माँ के परोसने से पुत्र को तृप्ति होती है।

माँस खायें माँस बढ़े, घी खायें खोपड़ी।
दूद पिये तो चल परें, असी बरस की डोकड़ी।
कहावत का अर्थ स्पष्ट है। कहावतकार ने आयुर्वेदीय पद्धति के अनुसार कहावत की संरचना की है।

मिलें न सूकीं चुपर कैं माँगे।
योग्यता से अधिक प्राप्त करने की इच्छा।

मिलन लगे दूद भात, बिसर गये माई बाप।
सुख–सुविधाएँ मिलते ही अपनो को भूल जाना।

मुफ्त कौ चंदन घिस मोरे नंदन।
मुफ्त की वस्तु का दुरूपयोग करना।

मूरख खौं दओ पान, वौ लगो रोटी संग खान।

वस्तु के उपयोग का समुचित ज्ञान न होना। कविवर बिहारी ने ऐसे मूर्खों पर एक दोहे की रचना की थी –

कर फुलेल कौ आचमन, मीठौ कहत सराह।
चुप रह रे गंधी चतुर, अतर दिखावत काह।।

मौं घालत फिर रये।

अपने मान–सम्मान का ध्यान न रखना।

राम की चिरैया, राम कौ खेत।
खाव री चिरैया, भर–भर पेट।

भगवान की वस्तु पर सबका समान अधिकार।

लपकी गाय गुलेदे खाय, बेर–बेर महुआ तरें जाय।

लालच के कारण कभी–कभी भारी हानि हो जाती है।

सड़ घुन जाय, कुटुम न खाय।

कुछ लोगों की ऐसी ओछी मानसिकता होती है कि चाहे घर में रखा अनाज सड़ जाय, किन्तु परिवार के लोग न खा पायें।

सड़ी हींग, बदीले कोदों हम जानें बनिया ठगो।
बनिया जानें ठगो गँभार।

ठग लोग कभी–कभी ठगों को भी ठग लेते हैं।

सतुआ बाँध कैं निकरबों।

पूरी तैयारी के साथ घर से बाहर निकलना।

साँप खौं दूध पियाबों।

कुकर्मी को प्रोत्साहित करना।

स्वास्थ्य और आहार आधारित

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है। रोगी और दुर्बल व्यक्तियों की चिंतन शक्ति क्षीण हो जाती है। हमारे पूर्वज स्वस्थ, निरोग और दीर्घायु हुआ करते थे। उनका खान–पान, रहन–सहन पर पूर्ण नियंत्रण था। वे संयम, नियम पर पूर्ण ध्यान

दिया करते थे। जड़ी–बूटियों और जंगली औषधियों के सेवन से निरोग रहा करते थे। संयमित जीवन, संतुलित भोजन ही उनके दीर्घायु होने का राज है। वे भुक्त भोगी थे। उन्होंने कहावतों के माध्यम से ऐसे–ऐसे नुस्खे बताए हैं जो जन–जीवन के लिए आज भी आवश्यक हैं। यदि आज की पीढ़ी उन नियमों और नुस्खों के अनुसार अपने जीवन को ढाल ले तो आज का आदमी स्वस्थ और सानंद रहकर दीर्घायु प्राप्त कर सकता है। लोक कहावतों में वह मूल्यवान सामग्री भरी पड़ी है। ऐसी कुछ जीवनोपयोगी लोक कहावतों के उदाहरण प्रस्तुत है।

अति तातौ जल पय पियैं, भोजन तातौ खाय।
बाकी बत्तीसी सबई, ज्वाँनी में झर जाय।।

जो लोग अत्यंत गर्म पानी और दूध पीते हैं और हमेशा गर्म–गर्म भोजन करते हैं। ऐसे लोगों के सारे दाँत जवानी में ही गिर जाते हैं। ऐसे लोग युवा काल में ही बूढ़े दिखाई देने लगते हैं।

सावन व्यारी जब कब करिए, भादौं बाकौ नाँव न लिइए।
क्वाँर मास के दो पखवारे, जतन–जतन सें जे निनवारे।
आदे कातिक परें दिवारी, भर–भर पेटां करो ब्यारी।।

कहावतकार ने मनुष्य के स्वास्थ्य को दृष्टि पथ में रखते हुए व्यालू (रात्रि के भोजन) का समय निर्धारित किया है। प्रायः पावस काल में मंदाग्नि होने के कारण पाचनशक्ति निर्बल हो जाती है। इसलिए रात्रि के भोजन पर नियंत्रण आवश्यक है। अनुभवी कहावतकार ने जन सामान्य को सलाह दी है। सावन के महीने में ब्यालू जब कभी करना चाहिए। भाद्रपद के पूरे माह ब्यालू का नाम नहीं लेना चाहिए। इसी तरह धीरे–धीरे क्वार मास के दोनों पखवाड़ों को व्यतीत कर देना चाहिए। फिर आधे कार्तिक में दीपावली के आते ही भर पेट ब्यालू करना विशेष लाभकारी है। कुछ कहावतकारों ने ब्यालू की उपयोगिता पर अधिक जोर देते हुए कहा है –

ब्यारी कबहुँ न छोड़िए, बिन ब्यारी बल जाय।
जो ब्यारी औगुन करें, दुपरैं थोरौ खाय।।

ब्यालू को कभी छोड़ना नहीं चाहिए। ब्यालू के बिना शक्ति क्षीण हो जाती है। यदि किसी कारणवश ब्यालू हानिकारक प्रतीत हो तो दोपहर को कम भोजन करना चाहिए। किन्तु ब्यालू को छोड़ना उचित नहीं है।

निन्नें पानी जो पियें, हर्र भूंज कैं खाय।
दूद ब्यारू जो करें, तिन घर वैद न जाय।।

जो प्रातः काल बिना कुछ खाए रोज पानी पीते हैं और रोज हर्र भूंज कर खाते हैं। जो ब्यालू में सर्वाधिक दूध का उपयोग करते हैं। वे कभी बीमार नहीं होते। फिर उनके घर वैद्य के जाने की क्या आवश्यकता है?

चैतें गुड़ वैशाखे तेल, जेठें लटा अषाढ़ें बेल।
सावनें निब्बू भादों दई, क्वाँर करेला कातक मई।
अगनें जीरे पूषें धना, माव में मिसरी फागुन चना।
जो जे चीजें बंदकैं खाय, बिना बुलाव सरग खौं जाय।।

चैत्र के महीने भर गुड़, वैशाख में तेल, ज्येष्ठ में महुवा के लटा, आषाढ़ में बेल, सावन में नींबू, भादों में दही, क्वांर में करेला और कार्तिक में मट्ठा, अगहन में जीरे, पूष में धना, माघ में मिसरी और फाल्गुन में चना। जो लोग इन महीनों में इन वस्तुओं को बंधकर नियमित रूप से खाते रहते हैं, वे बीमार हो जाते हैं और उनकी अकाल मृत्यु हो जाती है। अतः इन सबका उपयोग कम से कम करना चाहिए। ये वस्तुएँ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।

कन्या मरन रिन चुकन, प्रातकाल असनान।
पैलाँ तौ दुख होत है, पाछैं सुक्ख महान।।

कन्या की मृत्यु, ऋण चुकाने और प्रातःकाल स्नान करने में पहले तो बहुत कष्ट होता है, किन्तु बाद में स्वयं अच्छा लगने लगता है।

प्रात काल करें असनाना।
रोग दोस एकऊ नहिं आना।।

जो रोज प्रातःकाल स्नान करते हैं, उन्हें रोग और दोष का जरा भी अनुभव नहीं हो पाता।

खाकैं पर रइए, उर मारकैं भग जइए।

भोजन करने के पश्चात् विश्राम करना चाहिए और किसी को पीटकर भाग जाना चाहिए। नहीं तो लोग बदला ले सकते हैं।

अर्क सुदर्सन पात को, गर्म कान में डाल।
जो कानन के दर्द खौं, मेटत है तत्काल।।

यदि किसी के कान में दर्द होता है तो सुदर्सन के पत्ते के अर्क को गर्म करके कान में डाल दीजिए तो तुरंत ही कान का दर्द ठीक हो जाता है।

आँखन अंजन दाँतन नौंन, भूँखौं राखैं चौथों कौंन।
ताजो खाबैं बाँयौ सोय, ताको रोग कबहुँ नईं होय।।

आँखों में अंजन, दाँतों में नमक का चूर्ण, भोजन केवल तीन चौथाई पेट भर, ताजा भोजन करके, बाँयें करवट सोने वाले को कभी कोई रोग नहीं हो सकता है। वह सदैव स्वस्थ और सानंद रहेगा। इसी कहावत को अनुभवी लोग कुछ इस प्रकार भी कहा करते हैं–

आँखिन त्रिफला दाँतन नौंन,
पेट में भरिए, तीनों कौंन।
सीत बचाय सदा जो सोबैं,
ताके वैद पिछारी रोबैं।।

आँखें त्रिफला के पानी से धोने से, दाँतों में नमक का मंजन लगाने से, पेट के केवल तीन कोनें ही भरने से और शीत से बचाव करते हुए सोने से व्यक्ति सदा स्वस्थ रहता है। उनके पीछे–पीछे वैद्य रोते फिरते हैं। उन्हें उपचार का अवसर नहीं मिल पाता है।

आँतरे रोजें कसरत करें,
राम न मारें आपई मरें।

जो लोग अनियमित व्यायाम किया करते हैं, वे बीमार हो जाते हैं और असामयिक मृत्यु हो जाती है। नियमित व्यायाम ही लाभकारी होता है।

उठें अचानक सोयकैं, दायें सुर की चाल।
तुरतईं सीतल जल पियें, होय जुकाम ततकाल।।

अचानक सोकर उठकर, दायें स्वर के चलते समय जो तुरन्त ठंडा पानी पी लेता है, उसे तुरंत जुकाम हो जाता है। ऐसे समय पर शीतल जल नहीं पीना चाहिए।

खाय कैं मूतैं मूत के परैं।
बाकौ रोग कभउँ नईं भरैं।।

जो भोजन करके पेशाब करते हैं और पेशाब करने के बाद सोते हैं वे कभी रोग ग्रसित नहीं होते।

खिचरी तेरे चार यार।
दई पापर घी अचार।

खिचड़ी खाने का आनंद दही, पापड़, घी और अचार के साथ प्राप्त होता है। खिचड़ी सुपाच्य और पौष्टिक भोजन है।

क्वाँर करेला, चैत गुर, भादों मूली खाय।
पैसा जाबैं गाँठ कौ, रोग ग्रस्त हो जाय।।

क्वांर में करेला चैत्र में गुड़ और भादों में मूली खाने से बीमारियाँ घेर लेती हैं और गाँठ के पैसे बरबाद होने लगते हैं।

कातिक दूद अघन में आलू, पूस पातऔ माव रतालू।
फागुन में सक्कर जो खाये, चैत आँवला कच्चा चबाये।
वैशाख में खाय करेला, जेठें दाख असाढ़ें केला।
सावन निसि में जब तब खाये, भादौं ब्याईं कभउँ ना भाये।
क्वाँर कामना देय बचाय, सौ–सौ बरस आयु हो जाय।।

कार्तिक में दूध, अगहन में आलू, पौष मास में हरी साग– सब्जियाँ और माघ में रतालू, फाल्गुन में शक्कर और चैत्र में कच्चा आँवला चबाना, वैशाख में करेला खाना, ज्येष्ठ मास में दाखें और आषाढ़ में केला खाना, सावन में रात को जब कब खाना, भादों में ब्यालू का पूर्ण परित्याग करना और क्वार में विषय वासना को परित्याग करने से मनुष्य शतायु हो जाता है।

काली मिर्च कुलंजन, सक्कर तीनों पीसैं भाग बिरोबर।
आदौ तोला फक्की मारैं, मानौं कोकिल राग उचारैं।।

काली मिर्च, कुलंजन और शक्कर इन तीनों को बराबर पीसकर रोज आधा तोला चूर्ण की फक्की मारने से कंठ कोकिल की तरह सुरीला हो जाता है।

गुन घटि गये गाजर खायेंते।
बल बढ़ि गओ बाल चबायेंते।।

गाजर खाने से प्रायः गुणों का ह्रास होता है और गेहूँ की कच्ची बालें चबाने से शारीरिक बल की वृद्धि होती है। ऐसी लोक मान्यता है।

कुछ वयोवृद्ध लोगों ने कुछ महीनों में वर्जित वस्तुओं की ओर संकेत किया है। जो जीवनोपयोगी है।

चैतें गुड़ वैशाखे तेल, जेठें पंथ अषाढ़ें बेल।
सावनें सतुआ भादों मई, क्वाँर करेला कातक दई।
अगहनें जीरे, पूसें धना, माघैं मिसरी फागुन चना।
जो ये बारह देय बचाय, तौ घर बैद कभऊँ ना जाय।।

चैत्र के महीने में जो गुड़, वैशाख में तेल, ज्येष्ठ में तीर्थ यात्रा आषाढ़ में बेल,

सावन जो सतुआ, भादों में मट्ठा, क्वांर में करेला और कार्तिक में दही, अगहन में जीरे, पूस में धना, माघ में मिसरी और फाल्गुन में चना छोड़ देगा उनके घर उपचार करने के लिए कभी वैद्य नहीं जायेगा, अर्थात् वे सदैव स्वस्थ और सानंद रहेंगे।

चैत मीठी चीमरी, वैशाख मीठौ मठा।
जेठ मीठी डोबरी, अषाढ़ मीठौ लटा।
सावन मीठी खीर खाँड़, भादों भुजे चना।
क्वाँर मीठी काकरी, ल्याबै मीठी टोरकैं।
कातिक मीठी कुदई, दहिया डारों मोर कैं।
अगहन खाव जूनरी, भुर्रा नीबू निचोर कैं।
पूस मीठी खीचरी, कछु गुर डारौं फोर कैं।
माघ मीठे बोंड़ा, फागुन होरा बालें।
समय–समय की मीठी चीजें सुधर खवैया खाबैं।

कहावतकार ने हर महीने में स्वादिष्ट लगने वाली वस्तु का माहवार नामोल्लेख करते हुए कहा है– चैत्र मास में चीमरी मीठी लगती है और वैशाख में मट्ठा स्वादिष्ट लगता है। जेठ मास में महुओं की डुबरी और आषाढ़ में महुओं के लटा अच्छे लगते हैं। सावन में खीर और भादों में भुजे हुए चने खाने में अच्छे लगते हैं। क्वाँर में ककड़ी को तोड़कर खाना अच्छा लगता है। कार्तिक में कुदई में दही डालकर खाना अच्छा लगता है। अगहन में ज्वाँर, भाजी का भुर्रा में नींबू निचोड़ कर खाने में आनंद आता है। पूस में खिचड़ी गुड़ डालकर खाने में अच्छी लगती है। माघ में बोड़ा– बेर और फाल्गुन में गेहूँ की बालों का होरा अच्छा लगता है।

जबहिं अन्न पचै नहीं, कब्ज रहें कछु काल।
खाँसी सहित जुकाम हो, तन कौ करें बिहाल।।

जब पाचन क्रिया ठीक न हो और कुछ देर कब्ज बना रहे, तो खाँसी उठने लगती है और आदमी व्याकुल हो जाता है।

मारन चाहौ काउ खौं, बिना छुरी बिन घाव।
तौ फिर रोजऊँ प्रेंम सैं, घुइयाँ पूरी खाव।।

आप यदि किसी को बिना हथियार और चोट मारे बिना मारना चाहते हो तो उससे कहिए कि भइया आप रोज घुइयाँ पूड़ी खाइयेगा। घुइयाँ और पूड़ी बहुत गरिष्ठ होती हैं, जिनके नियमित खाने से पाचन क्रिया बिगड़ जाती है और लोग बीमार होकर मर जाते हैं।

जायँ कैं ना जाँय, तौ जाँय चइये।
खाँय कैं न खाँय, तौ न खाँय चइये।।

जब कहीं जाने के लिए द्विविधा की स्थिति निर्मित होती है तो चले ही जाना चाहिए। यदि किसी खाद्य पदार्थ को खाते समय मन में द्विविधा हो जाये तो फिर खाना नहीं चाहिए, अन्यथा वह खाद्य पदार्थ शरीर के लिए हानिकारक सिद्ध होगा।

तीस बेर नारी फरक, फिर नारी रह जाय।
तब वह निश्चें जानिए, रोगी नईं ठैराय।।

तीस बार नाड़ी फड़कने के बाद और जब नाड़ी नहीं मिलती तो यह निश्चित है कि अब रोगी बच नहीं पायेगा। ये नाड़ी विज्ञान का मूल सिद्धांत है।

नमक महीन मिलाइए, औ सरसौं कौ तेल।
देह मलें टीसन मिटै, छूट जाय सब मैल।।

नमक को बारीक पीसकर सरसों के तेल में मिलाकर सारे शरीर में मालिश करने से शरीर की पीड़ा दूर हो जाती है और सारा मैल छूट जाता है।

देवदार और चंदन टोरा, खस कौ अतर मिलाबैं।
करें उपटनौं देह लगाकैं, गरमी में सुख पाबैं।।

देवदार के बुरादा में खस का इत्र मिलाकर चंदन के टुकड़े को घिसकर लेप तैयार किया जाये और उसका सारे शरीर पर मालिश किया जाए तो सारे शरीर की गर्मी शांत हो जाती है।

दोऊ जोर जो घूमें, तीनऊँ जोरैं खाय।
सदा निरोगी वौ रहें, रोज सबेरे न्हाय।।

जो लोग दोनों जोर अर्थात् सुबह और शाम रोज घूमने जाया करते हैं और तीनों बार मन से भोजन करते हैं और रोज सबेरे स्नान करते हैं। वे सदैव निरोगी रहते हैं।

धूनी दीजे भाँग की, बवासीर नईं होय।
जल में घोरै फिटकरी, सौच समय नित धोय।।

जल में फिटकरी घोलकर शौच करने और भाँग की धूनी देने से कभी बवासीर रोग नहीं हो पाता है।

पीले पात मदार के, घी को देय लगाय।
तात–तात रस डालिए, करन सूल मिट जाय।।

मदार के पीले पत्ते पर घी चुपड़कर उसे गर्म करके उसके गर्म–गर्म रस को कान में डालने से कान का दर्द ठीक हो जाता है।

पैले पारैं सब कोउ जागैं, दूजे पारैं भोगी।
तीजे पारैं रोगी जागैं, चौथे पारैं योगी।।

रात्रि के प्रथम प्रहर तक सभी लोग जागते रहते हैं, दूसरी प्रहर में कामी और विलासी लोग जाग पड़ते हैं। तीसरे प्रहर में बीमार लोग जागते हैं और चौथे प्रहर में योगी अपने आप जाग जाते हैं।

बँधौ बछेरा जाय कठाय,
बैठो ज्वान जाय तुँदयाय।

बँधा हुआ बछड़ा किसी काम का नहीं रहता, अर्थात् बेकार हो जाता है। बैठा–बैठा जवान काफी बड़ी तौंद का हो जाता है, जिससे उसके शरीर की ऊर्जा और स्फूर्ति समाप्त हो जाती है।

बासौ भात, तिवासौ मठा, औ ककरी की बतिया।
आधी रात जुड़ावन आबैं, मुँइ लै बाकौ खटिया।।

बासा भात, तीन दिन के बासे मठ्ठा और ककड़ी के साथ खाने पर आधी रात को बुखार चढ़ आता है और खटिया पर ही व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है।

बाबैं दासी चोरैं खाँसी, प्रीत बिनासैं हाँसी।
घघ्घा उनकी अकल बिनासैं, जो खायें रोटी बासी।।

कहावतकार घाघ अपने अनुभव के अनुसार कहते हैं कि साधु को दासी, चोर को खांसी और प्रेम को हँसी–मजाक दुखदायक होता है। रोज बासी खाने वाले की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

भाँग धतूरा उर निरगन्डी,
इनको सेवै तो रोबै रण्डी।

भाँग, धतूरा और निरगण्डी बूटी का सेवन करने वाले लोग पौरुषवान हो जाते हैं। उनके पौरूष से वेश्याएँ तक परास्त हो जाती हैं।

भोजन करकैं पड़ें उतान, आठ साँस बाकौ परमान।
सोलह दायें बत्तिस बांये, तब कल पड़ें अन्न के खायें।।

भोजन के बाद सीधे चित्त लेटकर आठ साँसें लेते रहें। दाँये करवट लेकर सोलह साँसें और बाँये करवट लेटकर बत्तीस साँसें लेते रहें। इस प्रक्रिया से भोजन अपने आप पच जाता है और आदमी स्वस्थ बना रहता है। यह प्रक्रिया मानव जीवन के लिए उपयोगी है।

माघ मास जो गाजर खाय।
सुरहिन गउ के हाड़ चबाय।।

माघ के महीने में गाजर खाना वर्जित है। जो लोग माघ के महीने में गाजर खाते हैं, मानो वे सुरहिन गाय के हाड़ चबा रहे हों। अर्थात् माघ में गाजर खाना महान पापकारक है।

माँस खाँय माँस बढ़ै, घी खायें बल होय।
साग खाँयें ओज बढ़ै, बल कहाँ से होय।।

माँस खाने से माँस बढ़ता है, किन्तु शक्ति नहीं बढ़ती है। साग–सब्जी खाने से ओज बढ़ता है और घी खाने से शारीरिक बल में वृद्धि होती है।

मोर कबूतर पड़कुली, राज–हँस तमचूर।
इनकी गति नारि निरख, कफ जानौ भरपूर।।

जब शरीर में कफ की मात्रा अधिक होती है तो उस व्यक्ति की नाड़ी मोर, कबूतर, पड़कुल और हंस की तरह चलने लगती है। यदि नाड़ी में इस प्रकार की चाल दिखाई दे तो शरीर में कफ की मात्रा अधिक मानना चाहिए।

यदि अभिलाषा हृदय की, कभऊँ होय जुकाम।
पानी पीजे नाक सौं, पहुँचाबैं आराम।।

यदि आप चाहते हैं कि हमें कभी जुकाम न हो तो आप नाक से पानी पीने का अभ्यास कीजिए। तभी आपको जुकाम में लाभ मिल सकता है।

रोटी आदी कीजै, सब्जी को दुगुना।
पानी को तिगुना कीजै हँसी को चौगुना।।

कहावतकार ने शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से एक उपयोगी गुरु बताया है– भोजन तो आधा ही ग्रहण करना चाहिए और सब्जी रोटी से दुगुनी होना चाहिए और उससे तीन गुना पानी पीना चाहिए और चार गुना हँस लेने से शरीर स्वस्थ रहता है।

साबुन साँजी निबुआ नौन,
और दाद की ओखद कौन।

साबुन, साँजी, नींबू और नमक मिलाकर दाद की बहुत अच्छी औषधि बन जाती है।

सौंठ, कुलंजन, बच मिरच, हींग, पीपरा, पान।
सात दिना सेवन करें, कंठ कोकिलामान।।

सौंठ, कुलंजन, बच, काली मिर्च और पीपरा मूरका काड़ा पीने से सात दिन में कंठ कोयल के समान मधुर हो जाता है।

हर हाँकैं उर पसर चरावैं।
ब्यारी ना करें तो मरई न जावैं।।

बेचारा कृषक बड़े सबेरे उठकर पशुओं को जंगल में चराने ले जाये और दिन भर हल चलाता रहे। यदि वह रात में ब्यालू नहीं करेगा, तो शक्ति क्षीण होते होते एक दिन वह मर ही जायेगा। अतः परिश्रमी व्यक्ति को ब्यालू करना आवश्यक है।

हरी दूब खौं कुचल के, लीजै रसों निकाल।
आधौ तोला पीजिए, आँव मिटै ततकाल।।

कहावतकारों ने पेचिस की एक उत्तम देशी औषधि की ओर संकेत किया है– हरी दूब को कुचल कर रस को निकालकर रख लीजिए। आधा तोला रस पीने से पेचिस तुरन्त मिट जाती है।

होय ना रोगी जो कम खाय,
बिगरै काम न जो गम खाय।

कम भोजन करने वाले लोग प्रायः बीमार नहीं होते हैं। वे लोग सदैव स्वस्थ रहते हैं। धैर्यवान व्यक्ति का कभी कोई काम गलत नहीं हो सकता है।

तिल–गुड़ भोजन तुरुक मिताई, गेंवड़ें खेती गाँव सगाई।
पैलें सुख पाछैं दुखदाई, मतकर भाई मतकर भाई।।

तिल और गुड़ का भोजन, गेंवड़े की खेती और गाँव की सगाई प्रारंभ में तो अच्छे लगते हैं, किन्तु ये सब दुखदायक प्रतीत होते हैं। अतः इन सब व्याधियों से दूर रहना ही उचित है।

नौ मैंदा कीं कै ठनकाँ लाँघन।

वाभिमानी लोग सामान्य स्वार्थों के अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करते। वे या तो बढ़िया भोजन करेंगे अथवा भूखे ही बैठे रहेंगे। इसी भाव को लेकर एक कहावत और कही जाती हैः–'कै हंसा मोती चुनें कै लंघन मर जाय।'

पाँवनों है गम्मखोर, छै मइनाँ नो अड़ो दोर।
हँडिया है सरमदार, छै मइना नों चुरें दार।।

यह एक प्रकार की व्यंग्योक्ति है। यह उन लोगों पर व्यंग्य है जो मेजबान की इच्छा के बिना व्यर्थ में ही डटे रहते हैं। मेहमान तो धैर्यवान है जो बिना किसी शर्म के

डटे रहते हैं। हण्डी भी इतनी शर्मीली है कि छह महीने तक दाल पकती रहती है और मेहबान भी इतना धैर्यवान है, जो एक वर्ष तक डटा रहता है।

बारा बर्स के खौं बैद का?

बारह वर्ष से जो रोगी बन रहा हो, चिकित्सक भला उसका क्या उपचार कर सकेंगे?

बिना रोएं मताई लरका खौं दूध नईं पिआऊत।

जब तक बच्चा रोता नहीं है, तब तक माता बच्चे को दूध नहीं पिलाती है। अर्थात् बिना परिश्रम के किसी कार्य में सफलता प्राप्त नहीं होती। भाग्य के भरोसे बैठा रहना निरर्थक है। प्रायः आलसी लोग ही भाग्य के भरोसे बैठे रहते हैं। कर्मठ लोगों को तो अपने कर्म पर ही विश्वास रहता है। वे अपने भाग्य के निर्माता स्वयं ही हैं।

अटकर सें अदन धरो, धरो हंड भरकैं,
आत–पात दार डारी, नौन सेर भरकैं।
बुला दे बेटा बाप खौं, खा जाय सपरकैं।
बरें मोरे लच्छन, मैं सोंच आऊँ झपटकैं।

ये कहावत एक गंदी और अपवित्र नारी पर लागू होती है, जो बिना नहाये– धोये भोजन बनाने के लिए बैठ जाती है। जरा सोचिए ऐसी अशौच महिला के हाथ से बनाया गया भोजन कैसे सुस्वादु हो सकता है?

अपने मठा खौं को पतरों कात।

अपनी कमजोरी को कोई उजागर नहीं करता है।

अपनों भात पराये मड़वा तरें नईं परसो जात।

अपने घर की सामग्री इधर–उधर वितरित करना किसी भी तरह उचित नहीं है।

अमिया निमुआ बांनिया, मसके सें रस देय।

आम, नींबू, और वणिक दबाव से ही मानते हैं।

अमरौती खाकर आना।

सदा स्वस्थ और सानंद रहना।

अल्ला देय खाने को, कुतका जाय कमाने को।

जब ईश्वर की कृपा से बैठे–बैठे भोजन मिल रहा है तो काम करने की क्या आवश्यकता?

आओ मिन्तर जाओ मिन्तर, घर तुमाओ है।
चून होय तुमाये पास, तौ चूलों हमाओ है।
शिष्टाचार पूर्वक मित्रों को भोजन के लिए मना करना।

आओ–आओ आदर में, पाँव टिकाओं बादर में।
खाट पिड़ी की तुम जानों, पलका टूटो अतफर में।
रूखा–सूखा और केवल बातों के बताशे खिलाना।

आगी खैहों सो अँगरा हगहौ।
जैसा कर्म करोगे, वैसा फल प्राप्त होगा।

पांडे रोबैं रोटी खौं, पांडेन रोबैं धोती खौं,
लरका रोबैं न्यारे खौं।
विपन्नता की स्थिति में खान–पान और रहन–सहन पूरा अस्त व्यस्त हो जाता है।

कथरी ओढ़े घी पी रये।
छिपकर मन–चाहा लाभ प्राप्त करना।

क्वाँर करेला कातक मई,
मरहों नई तों परहों सई।
क्वाँर में करेला और कार्तिक में मट्ठा का सेवन करना हानि कारक होता है।

जैसों जड़कारों, जैसों बसकारौं।
विपन्न व्यक्ति को हर समय एक सा रहता है।

रागी बागी पारसी, नारी और न्याई।
इनके कोई गुर नईं, उपजें अंग सुभाई।
रागी,बागी, पारसी, निहाई और नारी के गुण स्वभाव के अनुसार होते हैं।

भैंस हमें चानें हती, थुरमोलू और उधार।
पड़िया ऊके तरें हो, होबैं भौत दुधार।
कुछ लोग बहुत किफायत का सौदा करना चाहते हैं, किन्तु ये सब संभव नहीं है।

भूँक न जानें जूंठो भात, नींद न जाने टूटी खाट।
प्यास न जानें धोबी घाट, प्यार न जानें जात कुजात।
अति आवश्यकता के अवसर पर सारी मर्यादाएँ भंग हो जाती हैं।

भैंडा भिन्डा तिरपटा, मूँढ़ में गंजा होय।
इनसें बातें जब करों, हाथ में डंडा होय।

इस प्रकार के शारीरिक विकृतियों वाले व्यक्तियों से डंडा लेकर बात करना चाहिए। वे किसी समय उपद्रव कर सकते हैं।

भाँग माँगें मीठो, गाँजौ माँगे घी
दारू माँगें चार पनैया, इच्छा हो तो पी।

भाँग पीने वालों को मीठा और गाँजा पीने वालों को घी अच्छा लगता है, किन्तु दारूखोर हमेशा जूते खाते हैं।

बदी बदाई न टरें, जहाँ वदी लै जाय।
वन पंछी का गमन नईं, उतई के ढीलै जाय।

भाग्य के लिखे अंक कभी अमिट नहीं हो सकते।

पैले दिना के पाँवनें, दूसरे दिना के पई।
तीसरे दिना रुके तों बेशरम सई।

ससुराल में ज्यादा दिन रूकने पर दामाद का भी अपमान होने लगता है।

पौंचोवन करन लगों तो, रोवन गाँवन लगें।
नईं तर लै टिपरिया, कण्डन खौं जाँय।

लोकाचार प्रदर्शित करना।

पढ़ें पारसी बैंचे तेल, जे देखों कर्मों के खेल।

भाग्यवश कभी–कभी योग्य व्यक्ति भी ठोकरे खाते फिरते हैं।

परुआ मुंश खब्बड् जोय, ऊ घर कबहुँ न बरकत होय।

पति निकम्मा हो और पत्नी खाऊ–उड़ाऊ हो, ऐसा घर सदा विपन्न रहेगा।

न सूरा न्योतो, न दो बुलाओ।
न एक कहो न दो कहाओ।

अपनी क्षमता से बाहर कोई काम करना उचित नहीं है।

नाक मूँछ नारी, वारे काय न समारी।

नाक, मूँछ और स्त्री को शुरू से ही देखते रहना चाहिए।

नाव नरबदा, मों नरदा सों,

नाव गनेशी, मों थोंना सों,

नाव लखन्दे, मों कुत्ती सों।

नाम के अनुरूप सूरत–शक्ल न होना।

कंचन पुरी औ परा रसोई, हड़िया चढ़ा नौंन खौं रोई।

बुन्देलखण्ड में कुछ ग्राम इतने अधिक पिछड़े और विपन्न हैं कि वहाँ की महिलाएँ नमक की भी व्यवस्था नहीं कर पातीं।

दाम देव गन्नेंटी खाव, टूटीं पलकिया सरगै जाव।

बिना किसी लोभ–लालच के परोपकार करना।

देवी फिरें बखत कीं मारीं, पण्डा कत कैं परचो दो।

आपत्ति के समय मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

तुबक तीर तकुवा, अनी सूजों सूत विचार।
जै नौं सीधे चाहिए, नाक नार और फार।

बंदूक, तीर, तकली, सूजा, सूत, विचार, नाक, नारी और फार इन नौ वस्तुओं का सीधा रहना अच्छा लगता है।

तालन में ताल भोपाल कौ, और सब तलैंयाँ।
रानिन में रानी कमलावती, और सब रजैयाँ।

तालों में सबसे बड़ा ताल भोपाल का है। रानियों में सबसे श्रेष्ठ रानी महारानी कमलावती हैं।

तिल भोंयरी लहसुन, मसों होय दाहिने अंग।
जाय बसो वन–खण्ड में, रहे लच्छमी संग।

ऐसी लोक मान्यता है कि जिसके शरीर के दाहिने अंग में तिल, भौरी, लहसुन और मसा होता है, उसे हमेशा श्रम करने का सुझाव दिया गया है।

ठाँढ़ो बनिया बैठो बिरोबर, बैठो बनिया परो बिरोबर।
परो बनिया मरो बिरोबर।

वणिक जाति की स्थिति अधिक सोचनीय होती है। वह सदैव कायर और शक्ति हीन होता है।

जो जीमें जानें नहीं, करन काय खौं जाय।
मूँढ़ खचा में घुस गई, पूँछ कुलाटें खाय।

अनुभवहीनता के कारण किसी नवीन कार्य को करते समय असफलता ही हाथ लगती है। इस कहावत के संबंध में एक लघुकथा प्रचलित है।

जो रहीम ओछो बढ़े, कंडी सो उतराय।

छोटे लोग बड़प्पन पाते ही इतराने लगते हैं।

जेई खेल बालापन खेले, जेइ में कटी जबानी।
यारन सों तुम कहत संदेशों, हम सें कहत कहानी।

कुछ लोग बचपन से बुढ़ापे तक निकम्मे बने रहते हैं। ऐसे लोगों को जीवन भर विपन्न और दुखी रहना पड़ता है।

जियत न दीनीं गाँकरीं, कौअैंन मीठी खीर।

जीते हुए माता पिता को कभी भरपेट भोजन नहीं कराया किन्तु आज पितृ–पक्ष में कौवों को खीर–खिलाने का पाखण्ड दिखा रहे हैं।

घर की चीज चौंखरे खाँये।
बाहर तरपैं आँख लगायें।

घर की वस्तुएँ अनावश्यक नष्ट हो रही हैं, किन्तु हम दूसरों की वस्तुओं पर घात लगाये बैठे हैं।

गरज परें कछु और हैं, गरज सरें कछु और
करिया तोरी पीठ पै, दादुर करे किलोर।

आवश्यकता पड़ने पर वस्तु मूल्यवान हो जाती है। स्वार्थ सिद्धि के बाद वस्तु का मूल्य घट जाता है। संकट काल में शत्रु भी मित्र बन जाते हैं।

कौंन–कौंन खौं धरिये नाव,
कथरी ओढ़े सबरौं गाँव।

किस–किस की निन्दा की जाय, जहाँ सारे लोग एक से हों।

कान मूँद लये।

सुनी–अनसुनी करना।

वाणिज्य आधारित

बुंदेलखण्ड में लोक वाणिज्य का विशेष महत्त्व है। पारस्परिक आदान–प्रदान, क्रय–विक्रय लोक वाणिज्य के अंग हैं। आचार–विचार, खान–पान, रहन–सहन लोक वाणिज्य पर ही आधारित है। जीविकोपार्जन का एक साधन लोक वाणिज्य ही है। हमारे वयोवृद्ध और अनुभवी महापुरुषों ने लोक वाणिज्य को दृष्टि पथ में रखते हुए समाज का

मार्ग–दर्शन किया है, जो समाज के विशेष उपयोगी हैं। आज के परिवेश में अनुकरणीय और ग्रहणीय हैं। इस प्रकार की कुछ कहावतों के उदाहरण प्रस्तुत हैं–

व्यौपारी उर पाँवनों, तिरिया और तुरंग।
ज्यों–ज्यों जे ठनगन करें, त्यों–त्यों बाढ़त रंग।।

व्यापारी, पाँहुनों, तिरिया और घोड़ा जैसे–जैसे ठनगन करते हैं, तैसे–तैसे आनंद प्राप्त होता है।

हाल चाल सब ही गओ, रहों न एकौ तार।
पूँजी गई उर बैर भऔ, जो पै दऔ उधार।।

दुकानदारी में उधारी सबसे ज्यादा खतरनाक होती है। उधार लेने के बाद ग्राहक उस दुकान की ओर देखता भी नहीं है। हाल चाल पूछने की तो बात ही अलग है। गाँठ की पूँजी चली जाती है और ग्राहक से शत्रुता भी बढ़ जाती है। अतः उधारी से बचने का प्रयास करना चाहिए।

साझौ उधार दोऊ अशुभ, घर अँधियारी लाय।
ज्यों धोबी कौ कूकरा, घाट बाट घर जाय।।

साझेदारी का व्यापार और उधार देना ये दोनों ही अशुभ और हानिकारक होते हैं। इससे कलह और अशांति बढ़ जाती है। जिस प्रकार धोबी का कुत्ता घर और घाट कहीं का नहीं रहता है।

साझौ जेई करत हैं, परमेसुर दै बीच।
लोभ नसैंनी नरक की, जहँ छीछल तहँ कीच।।

जो लोग परमेश्वर को साक्षी बनाकर साझेदारी करते हैं, उन्हें लोभ से सदा दूर रहना चाहिए, क्योंकि लोभ तो नरक की नसैनी है। जहाँ छिछलापन होता है, वहीं कीचड़ होता है। साझेदारी तो उदार दृष्टिकोण और सहिष्णुता से ही निभ सकती है।

पैले लिखो बाद में देऔ, भूल चूक कागज सैं लेओ।।

पहले लिख लेना चाहिए, बाद में उधार देना चाहिए। किसी तरह की भूल–चूक होने पर कागज पर लिखे हुए को पढ़कर भूल सुधारी जा सकती है।

गाहक एक न फेरिए, सेंतैं वस्तु अनेक।
सकल वस्तु जिनकें कड़ें, वही पसारी एक।।

दुकानदार को चाहिए कि वह सारी वस्तुओं को दुकान में संग्रहीत करके रखे, जिससे कोई भी ग्राहक खाली हाथ न लौट सके।

लोभ कभऊँ नहिं भलौ, कहीं दोहरन साँच।
चार कनूका अधिक कर, दीजौ महमत बाँच।।

लोभ कभी अच्छा नहीं होता। इस बात को अनेक बार दुहराया गया है। व्यापार में तौलते समय चार दाने ज्यादा दे देने पर ग्राहक का मन भर जाता है और दुकान की साख बनी रहती है।

सकल वस्तु संग्रह करें, नौंन गाँठ कौ खाय।
ताकौ मारौ बानियाँ, जरा मूँढ़ सों जाय।।

समस्त वस्तुओं का संग्रह करने वाला वणिक यदि अपनी गाँठ का नमक खाने लगे तो इसका अर्थ है कि वह अपनी पूँजी को नष्ट कर रहा है। यदि यही स्थिति रही तो एक समय ऐसा आयेगा कि वह अपनी पूँजी को ही खो बैठेगा। वणिक को अपने व्यापार से अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करना चाहिए, तभी उसका व्यापार सार्थक है।

साईं लाई लगनई, साझौ जुआ उधार।
लागाई की जे नहीं, यह मत वणिक विचार।।

साई देने की आदत, किसी से शत्रुता, साझेदारी, जुआ और देने की आदत पूरी तरह से त्याग देना चाहिए। इसी में व्यक्ति हित है।

रत्ती–रत्ती साधैं, तौ द्वारैं हाँती बाँदै।
रत्ती–रत्ती खोबैं, तो द्वार बैठकैं रोबैं।।

थोड़ा–थोड़ा साधते रहने पर बहुत कुछ सध जाता है। और तो और उनमें हाथी बाँधने की क्षमता उत्पन्न हो जायेगी। यदि हम थोड़ा–थोड़ा खोते रहेंगे तो एक समय भोजन के लाले पड़ने लगेंगे और हमें अपनी गलती पर पछताना पड़ेगा। इसी तरह की एक कहावत और कही जाती है–

तिल–तिल खाय, पहाड़ बिलाय,
बूँद–बूँद सागर भर जाय।

लाख जाय पर साख न जाय, या रहें साख लाख जाय।
लोभी कौ धन ऐसों जाय, जैसें कुंजर कैंथा खाय।।

कुछ लोग बड़े ही सिद्धांतवादी होते हैं। चाहे उनके लाखों रुपये ही क्यों न चले जायें, किन्तु वे अपनी साख नहीं जाने देते। वे अपनी साख को बनाये रखने के लिए लाखों रुपए बर्बाद कर देते हैं। लोभी का धन इस प्रकार नष्ट होता जाता है, जैसे हाथी

कैंथो को चट करता जाता है। जिसकी साख नहीं होती, वे व्यापार में सफल नहीं हो पाते।

सकल वस्तु संग्रह करों, कबहुँ आइहै काम।
समय पड़े पै नहिं मिलैं, माटी खरचैं दाम।।

सारी वस्तुएँ संग्रह करके रखना चाहिए। कभी न कभी वे समय पर काम आ जाती हैं। कभी न कभी ऐसा समय आ जाता है कि पैसा खर्च करने पर मिट्टी भी नहीं मिल पाती है।

साहू बौ बनज न कीजिए, जो दरबार विकाय।
गाँठ लेत देतन कटे, विनती में दिन रात।।

हे सेठ जी! आप ऐसी वस्तुओं का व्यापार मत कीजिए, जो राज दरबार में बिका करती हैं। यदि तुम उस वस्तु को दरबार में बेचोगे तो कुछ रुपये रिश्वत में कट जायेंगे और रात–दिन विनती करने के बाद बड़ी कठिनाई से पैसे मिल पायेंगे। इसलिए ये कहावत भी कही जाती है – *'वौ सोनौ बरें, जैसें कान फटें।'*

बीदे पै सीदौ देनें परत।

जब किसी पर कोई व्याधि या आपदा आ जाती है, तभी लोग उसके निवारण हेतु देवी–देवताओं को पूजते हैं अथवा ब्राह्मणों को सीधा, आटा, दाल दिया करते हैं। बाबा तुलसी भी दोहावली में यही बात कह गए हैं –

दुख में सुमरन सब करें, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमरन करों, दुख काहे को होय।।

कुछ इसी तरह का भाव बिहारी के एक दोहे में भी व्यक्त किया गया है–

दीरघ साँसन लेय दुख, सुख साँईं न भूल।
दई–दई क्यों करति है, दई–दई सो कबूल।।

सौ बार चोर की, एक बार साब की।

मौका पाकर चोर साहूकार के घर सौ बार चोरी करते रहते हैं और जब साहूकार को मौका मिल जाता है, तो वह चोर पकड़ लेता है और चोर की सौ बार की चोरी एक साथ निकल आती है। इसी भाव को लेकर एक कहावत और कही जाती है– 'चूलें हुन खाँईं मजोटें हुन कड़ आईं।'

बैंन भलो न भइया, सबसें भलों रूपइया।

कुछ लोग घोर स्वार्थी होते हैं, जो पैसे के पीछे सारे संबंध भूल जाते हैं। पैसे के

लेन–देन के कारण कभी–कभी रिश्तों में दरार पड़ जाती है। चाहे बहिन हो और चाहे भाई हो, पैसे के पीछे विवाद हो जाता है।

भगे भूत की लगोटियई भौत है।

सब कुछ नष्ट होते समय जो कुछ बचता है, उसी में संतोष कर लेना उचित है। भूत भाग जाने के बाद उसकी लंगोटी ही बहुत है।

हैं करनी के हीन, खुद खौं साध बतावैं।
आपन गोटा खाँय और खौं ज्ञान लखावैं।
अनुभवहीन होते हुए भी अनुभवी का पाखण्ड दिखाना।

हुल हुलानी सो धर पलानी।
अत्याधिक प्रसन्नता में लोग प्रायः अनियंत्रित हो जाते हैं।

हिल्लें रोजी बहानें मौत।
जीवन–मृत्यु संयोग पर आधारित हैं।

हाँत न मुठी खुरखुरा उठी।
पैसे के बिना व्यापार संभव नहीं।

हाती को माछी समझबो।
अति उत्साहित होना।

हाँत–पाँव के काहिली, मौंमें मूँछें जाय।
मूँछ बिचारी का करें, हाँत न फेरो जाय।
निकम्मे और आलसी व्यक्ति वाणिज्य में असफल रहते हैं।

हाँत नइयाँ कौंड़ी, नाक छिदाबै दौड़ी।
बिना पैसे के शौक पूरा करना।

हाती दुबरो होय तो बिटा बिरोबर रेंई जैंय।
बड़ा आदमी कमजोर होने पर छोटों के बराबर बना रहेगा।

हाँत की बिलइया छोड़कैं म्याऊँ–म्याऊँ करबों।
उपलब्धि छोड़कर पीछे–पीछे फिरना।

हाजर में हुज्जत नईं, गैर की तलाश नईं।
किसी कार्य को तुरन्त निपटा देना।

हंडिया में भये दानें, गोंड गर्रानें।
विपन्न व्यक्ति थोड़ा सा सम्पन्न होने पर इतराने लगता है।

हर कोरें लच्छमी, नारान नईं होत।
एक उपलब्धि एक ही बार होती है।

सोंजयाई कौ बाप लड़इया खा रये।
साझेदारी का व्यवसाय विवादित हो जाता है।

सूम की थैलिया मुश्किल सें खुलत।
कंजूस बड़ी कठिनाई से पैसा छोड़ता है।

सूके कुआँ पतोरन नईं भरत।
विपन्न को झूठे आश्वासनों से सम्पन्न नहीं किया जा सकता।

सूके शंख बजा रये कोरे।
केवल ढकोसला दिखाना।

साँड़–साँड़ लड़ें, बारी के भुरसन होंय।
बड़ों–बड़ों की लड़ाई में छोटों को हानि उठानी पड़ती हैं।

साजन–साजन जुर मिले, झूठे परे बसीठ।
दो व्यक्तियों के मिल जाने के बाद झगड़ा कराने वाला झूठा और निन्दा का पात्र हो जाता है।

सब धान बाईस पसेरी।
छोटे–बड़े को एक साथ तौलना।

समय करोंटा लै गओ।
शुभ समय व्यतीत हो जाना।

लरका सीके नाऊ को मूँढ़ कटे गमार की।
अनाड़ी के हाथ से किया गया कार्य कभी भला नहीं होता।

रास कौ नांव मंगना, भाग की का पूँछत।
जैसा नाम वैसो काम।

राखपत सो रखापत।
सम्मान देने से सम्मान मिलता है।

मोय पीसें पिसनारी, मैं रावर पीसन जाऊँ।
भय वश बड़ों के यहाँ बेगार करना।

मूँढ़ मुड़ाते ही ओरे परे।
शुभ कार्य प्रारंभ करते ही बाधा आ जाना।

मंगलवारी होय दिवारी, मूँढ़ धरे रोय व्यापारी।
यदि दीपावली मंगलवार को पड़ती है तो व्यापार मंद पड़ जाता है।

बिना मरें सर्ग नईं दिखात।
कुछ पाने के लिए कुछ करना जरूरी है।

बनिया गम्म खाये में सियानों।
व्यापारी गंभीर और सहनशील होता है।

व्यापारी अरु पाँहुनों, तिरिया और तुरंग।
ज्यों–ज्यों जे ठनगन करें, त्यों–त्यों बाढ़ै रंग।
व्यापारी, पाहुनों, तिरिया और घोड़े का ठनगन आनंद दायक होता है।

ब्याये न बरातें गये।
अनुभवहीनता का कारण।

पइसा न धेला, बहू चली मेला।
बिना पैसे के मेले में घूमना।

पैसे बिन नर नाहर, भीतर रये चाय बाहर।
भूखा आदमी शेर के समान भयानक कहा जाता है।

पीतर की नथनी पै इतनों गुमान,
सोने की होती तो छूती आसमान।
छोटी सी उपलब्धि पर बहुत इतराना।

परो है बनियां भोमें, दये है कछू गों में।
ठग धरती में पड़ा–पड़ा, ठगी की योजनाएँ बनाता रहता है।

पानी उतर गओ।
इज्जत चली गई।

नौंनीं के नौ मायके, गली–गली ससुरार।
गुण और बुद्धि की हर जगह कीमत होती है।

न लरका दिया कैहें, और न सोनें हुइयै।
असंभव को संभव में बदलने का प्रयास।

नंगू कैं गढ़ई भई, बेर–बेर हगन गई।
बाह्य प्रदर्शन और कोरा दिखावा।

धुआँ में लट्ठ मारना।
कोरी गप्पें हाँकना।

दिया लैकैं खोजबो।
सूक्ष्मता से अन्वेषण करना।

दबो बानियाँ देय उधार।
कमजोरी का नाजायज फायदा उठाना।

तेली कौ तेल जरें, मसालची कौ जी जरें।
देने वाले देते हैं, किन्तु देखने वालों को कष्ट होता है।

तेली कै तेल होत, तो बौ पहारें नईं चुपरत।
अपात्र को दान देना उचित नहीं है।

ढोर न मोर, बाबा जू चुपरकैं खाँय।
हराम खोरी करने वाले मजा उड़ाते हैं।

जित्ते के ढोल नईं बजे, उत्ते के मजीरा फूट गये।
लाभ की आशा में हानि अधिक हो जाना।

चित्त मोरी पट्ट मोरी, अन्टा मोरे बाप के।
किसी तरह से विजय श्री प्राप्त करना।

चलत बैल खौं अरई लगाबौ।
कर्तव्यनिष्ठ को बार–बार टोकना।

चढ़त बेल खिसलाबौ।
बनता हुआ काम बिगाड़ना।

घर घाम में आना।
पूरी तरह बरबाद होना।

गुर–गोबर हो गओ।
सारी योजनाएँ विफल हो जाना।

कानों कान उड़ाई।
झूठी खबर फैल जाना।

कर नईं तों डर नईं।
निर्दोष व्यक्ति निर्भीक रहता है।

ऊमर से ठूँसे।
किसी से बातचीत न करना।

कसाई के खूँटा बाँधना।
निर्दयता दिखाना।

विश्वास आधारित

लोक के सारे कार्य–कलाप लोक विश्वास पर आधारित हैं। शकुन, अपशकुन, छींक, प्रमुख दिन और तिथियों पर आवागमन, टोंनुवाँ, टोटका, मंत्र, ताबीज, व्रत, पूजा, उपवास, घोल्ला को भाव भरना आदि पर लोक का अटूट विश्वास और अंध विश्वास आज भी ग्रामीण जनता में दिखाई देता है। झाड़–फूँक और प्रेत–पूजा पर आज भी लोग विश्वास करते हैं। कहा भी गया है कि– 'विश्वासो फलदायकः।' आज भी सर्प दंश, पीलिया और मोतीझरा के रोगी झाड़फूंक से ठीक हो जाते हैं। ऐसी अनेक लोक कहावतें हैं, जिनमें लोक विश्वास की पुष्टि की गई है। आज का शिक्षित और सभ्य समाज भी विश्वास करके उनका अनुगमन करता है। उनमें से बहुत सी बातें सत्य सिद्ध हो जाती हैं। प्राचीन ग्रंथों में इनके उदाहरण भरे पड़े हैं। आदिकालीन आल्हाखण्ड, जायसी के पद्मावत, सूरसागर और रामचरित मानस में अनेक स्थलों पर लोक विश्वास के दर्शन होते हैं। वे सारे निर्देश और मार्ग दर्शन कहावतों में दिखाई देते हैं, उनमें से कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं –

तिल भोंयरी लासन मसों, होय दाहिनें अंग।
जाय बसों वन–खण्ड में, रहें लक्ष्मी संग।।

जिस व्यक्ति के दाहिने अंग में तिल, भोंहरी, लासन और मस्सा होता है, वह बहुत भाग्यवान माना जाता है। लक्ष्मी कभी उसका साथ नहीं छोड़ती, चाहे वह घनघोर जंगल में ही निवास क्यों न करता हो।

कैरा भेंड़ा तिरपटा, मूँढ़ में गंजा होय।
इनसैं बातें जब करों, हाथ में डण्डा होय।।

कैरे, भेड़े, तिरपटे और गंजे लोग प्रायः उद्दण्ड और उपद्रवी होते हैं। पता नहीं कि वे कब किससे क्या कह बैठें। इसलिए हाथ में डण्डा लेकर ही इनसे बात करना उचित है।

सौ पै फुली सहस में काना, सवा लाख पै ऐंचकताना।
ऐचकताना करें विचार, मैं मानी कैरा सैं हार।
कैरा बुद्धि विनासी, करें बाप की हाँसी।
जीकी नइयाँ छतियँन बार, ऊँसें मानें कैरा हार।।

इस कहावत में कुछ विशिष्ट विकलांगों की पहचान और उनके दुर्गुणों की ओर संकेत किया गया है। सौ में से किसी एक की आँख में फुली होती है और वह धूर्त होता है। हजार में कोई एक काना होता है और वह भी महान धूर्त होता है। लाखों में कोई ऐंचकताना होता है और वह दुर्गुणों से भरा रहता है। ऐंचकताना सोचता है कि– अरे! मुझसे आगे तो कैरा है। उसकी बुद्धि तो भ्रष्ट होती है। और वह अपने पिता का भी उपहास करता है। जिसकी छाती में बाल नहीं होते, वह और अधिक दुर्गुणी होता है और उससे तो कैरा भी हार जाता है।

गैल में मिलैं काना, तौ लौट आना।

काना आदमी अपशकुन सूचक होता है, यदि यात्रा करते समय काना मार्ग में मिल जाता है, तो तुरंत ही लौट आना चाहिए अन्यथा यात्रा विफल हो जायगी।

परमा गमन कीजिए, चाय सोनें कौ होय।

प्रतिपदा के दिन कहीं प्रस्थान नहीं करना चाहिए, चाहे कितने लाभ की संभावना हो।

मंगल गये न बायरे, फिर घर लौट न आँय।

मंगलवार के दिन कहीं बाहर यात्रा नहीं करना चाहिए। मंगलवार को गया हुआ आदमी फिर लौटकर नहीं आता है। अगली कहावत में स्वयं ही मंगल कह रहा है –

सवा पार मना लें मोय, सोनें तौल तुला दऊँ तोय।।

आप मुझे सवा प्रहर तक मनाकर यात्रा कीजिए। फिर मैं आपको सुख–समृद्धि से सम्पन्न कर दूँगा।।

मंगल उत्तर दिस कालू।

मंगलवार के दिन उत्तर दिशा में यात्रा करना हानिकारक है।

इतवा जरें सोम्मा बरें, मंगलवा पीरा करें।
सुक्र सनीचर गैरे वार, कपड़ा पैरों बारम्बार।।

नए कपड़े पहनते समय कुछ वारों का ध्यान रखना चाहिए। इतवार के दिन पहिनने वाले कपड़े जल जाते हैं और सोमवार को भी यही स्थिति रहती है। मंगलवार को नए कपड़े पहिनने पर कष्ट होता है। नए कपड़े धारण करने के लिए शुक्रवार और शनिवार शुभ दिवस हैं। इन दिनों नवीन वस्त्र धारण करना उचित है।

कलसा पानी कौ तचैं, नहाय चिरैया धूर।
अंडा चिटियाँ लै चलें, तौ बरसैं भरपूर।।

कलसा में रखा हुआ पानी अपने आप गर्म होने लगे और चिड़िया धूल में स्नान करने लगे तथा चींटियाँ अंडे लेकर जाने लगे तो समझ लीजिए कि इस वर्ष भरपूर वर्षा होगी।

छींकत नहाइए छींकत खैये, छींकत रहिए सोय।
छींकत घरै न जाइए, चाय सोनें कौ होय।।

छींकते हुए स्नान करना, छींकते हुए भोजन करना और छींकते हुए सोना शुभ होता है, किन्तु छींकते हुए किसी दूसरी जगह नहीं जाना चाहिए, चाहे कितना ही लाभ क्यों न हो।

गैल चलत नेहरा मिल जाय, बाम भाग चुख चारा खाय।
काग दाँयनें खेत सुहाई, सुफल मनोरथ समझौ भाई।।

मार्ग चलते हुए नेवले का मिलना, बायीं ओर गाय और बछड़े को घास चरते हुए मिलना तथा दायीं ओर खेत में कौए उड़ते दिखाई दें तो शुभ शकुन माना जाता है और हम जिस कार्य को जा रहे हैं, वह कार्य निश्चित ही पूर्ण होगा। ऐसी अनुभवी और वयोवृद्ध लोगों की मान्यता है।

जब बदरा उल्टौ चढ़ै, राँड़ निलज्ज न होंय।
कहत सियानें जौ सुनौं, जो बरसैं वौ जाय।।

जब बादल उल्टा चढ़ने लगे, और विधवा नग्न होकर नहा रही हो तो वयोवृद्ध लोग कहा करते हैं कि उल्टा चढ़ने वाला बादल अवश्य बरसेगा और विधवा घर छोड़कर किसी दूसरे के घर चली जायेगी।

नारि सुहागिन घट भर लाबैं, दूध मछली जो संमुख आबैं।
सामें गऊ चुखावैं बच्छा, जेई सगुन है सबसें अच्छा।।

सुहागिन महिला घट भर सामने दिखाई दे। दूध और मछली सामने आ जायें। सामने गाय बछड़े को दूध पिलाती दिखाई दे तो सबसे बड़ा शकुन माना जायेगा।

विप्र परोसी अजथ धन, बिटियँन कौ दरबार।
एते पै धन न घटैं, पीपर राखों द्वार।।

पड़ोस में ब्राह्मण निवास करता हो, घर में खोटे धन की अधिकता हो और बेटियों की संख्या अधिक हो तो धन निश्चित ही घट जायेगा। यदि इतने पर भी धन न घटे तो दरवाजे के सामने पीपल का वृक्ष लगा लीजिएगा।

शनि मंगल आबैं दीवारी।
मरै रंक जीबै भड़सारी।

यदि मंगलवार या शनिवार को दीपावली पड़े तो निर्धन लोगों को कष्ट होगा और व्यापारी आनंद करेंगे।

सम्मुख छींक लड़ाई भाखैं, छींक पछिली सुभ अभिलासैं।
छींक दाहिनी धन को नासैं, बाम छींक सुख सदा प्रकासैं।।

इस कहावत में छींक की विविध स्थितियों पर विचार किया गया है। सामने की छींक लड़ाई कराती है। पीठ पीछे की छींक शुभ होती है। दाहिनी छींक धन को नष्ट कर देती है और बायीं छींक सुख सुविधा प्रदान करती है।

सास बहू की एकई सोर,
लच्छों कड़ गई पाँखा फोर।

जहाँ सास–बहू का प्रसव एक साथ होता है, वहाँ लक्ष्मी पाखा फोड़कर निकल जाती है। वह परिवार निर्धन हो जाता है।

सावन घोरी भादों गाय, माघ मास जो भैस ब्याय।
जेठें बहू अषाढ़ें सास, तौ घर हू है बाराबाट।।

जिस घर में सावन में घोड़ी, भादों में गाय और माघ मास में भैंस ब्याहती है। जेठ में बहू और आषाढ़ में सास का प्रसव होता है तो ऐसा घर बुरी तरह से विनष्ट हो जाता है।

राम रखवारौ, तौ को मारबे बारौ।।

ऐसा लोक विश्वास है कि जिसकी रक्षा करने वाले भगवान है उसे संसार में मारने वाला कोई नहीं है। इसी प्रकार कुछ की कहावतें और प्रचलित हैं–

जाखौं राखैं साँइयाँ, मार सकें न कोय।

× × × ×

संकर सहाय तौ भयंकर का करें।

लल्ला के लच्छन पल्लाँ में दिखा परत।

होनहार बच्चे के लक्षण पालने में दिखाई देने लगते हैं और ये भी कहा जाता है–

होनहार बिरवान के होत चीकनें पात।

अक्कल गई सठियाई।

साठ वर्ष की अवस्था में बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

अक्कल बिन पूत लठेंगर सों।
गुन बिन बिटिया डेंगुर सी।

बुद्धि के बिना पुत्र और सद्‌गुणों से रहित पुत्री किसी काम की नहीं होती।

अपनों खता अपनें हाँतन नईं फूटत।

दुख में दूसरों का सहारा लिया जाता है।

अंदयारे में परछाई नईं होत।

दुख में सब साथ छोड़ देते हैं।

आदी छोड़ सारी खौं धाबै।
आदी मिलें न सारी पाबैं।

लालच में आदमी, दोनों ओर से मारा जाता है। इसी भाव को लेकर एक कहावत और कही जाती है– *'दोई दीन सें गये पांडे, हलुवा मिले न मांडे।'*

अपन डुबन्ते पांडे, लै डूबे जजमान।

अपने साथ दूसरों को हानि पहुँचाना।

आसमान फटो, थिगरिया कैसें लगायें।

बिगड़े हुए कार्य को संभालना कठिन है।

एक पाख दो गाना, राजा मरें कै साना।

एक पक्ष में दो ग्रहण पड़ना भारी अपशकुन सूचक है। इस स्थिति में राजा अथवा मंत्री की मृत्यु हो जाती है।

ऐसई होते कंत तों काय खौं जाते अंत।

यदि योग्यता परिपूर्ण होती तो रोजगार की तलाश में इधर–उधर भटकना नहीं पड़ता।

कछू धरैं चीकने, कछू कुलर मोंथरे।

जैसे को तैसा मिल जाना।

कपड़ा न लत्ता पान खाँय अलबत्ता।
कबहुँ शक्कर घना, कबहुँ मुट्ठक चना।
और कबँहुं बेई मना।

समय परिवर्तनशील है, सम्पन्नता और विपन्नता का चक्र चलता रहता है।

काम सटो दुख बिसरो।

स्वार्थ सिद्धि के बाद लोग उपकारों को भूल जाते हैं।

कुत्ता खौं मौ लगाव, सो वौ मौं चाटत।

छोटों को मुँह लगाने से मर्यादा भंग होती है।

कैंकरे कौ जाव हमेशा माटी खोदत।

कुछ लोग अपनी कुल परंपरा का परिपालन करते हैं। यही बात एक दोहे में भी कही गई है– *'जाके कुल की रीति जो, लहैं रात है तौंन। सिंह बाज के चैनुवा, मार सिखाबै कौन।*

खसुआ की कमाई, दाढ़ी मूँछ में गमाई।

आमदानी से दुगुना खर्च होना।

खुरपी को टेड़ों बैंट।

जैसे को तैसा मिल जाना।

गंगा गये गंगादास, जमुना गये जमुनादास।

कार्य के अनुरूप अपना नाम रख लेना।

गनेश जू खौं चौक पूरों, मैंदरे जू उचक कैं बैठे।

पात्र के स्थान पर कुपात्र सम्मानित हो जाना।

गरब कौ बिरछा कबहुँ नईं हरयात।
घमण्ड किसी का भी अच्छा नहीं होता।

गरे में प्रान अटके।
जीवन का अंतिम समय आ जाना।

गली में डेरा।
बे–घर बार हो जाना।

गुर न देव तो गुरीरी बातें तो करो।
यदि किसी को कुछ दे नहीं सकते, तो मीठा बोलने में क्या बिगड़ता है?

घर की घरईं में रैंन दो।
घर की गोपनीयता भंग नहीं होना चाहिए।

घर खोदें आसपास, जिनकौ नाम धरमदास।
कुछ लोग दूसरों की हानि करने में विशेष रूचि लेते हैं।

चट्ट राँड़ पट्ट ऐबाती।
सारे काम तुरत–फुरत करना।

जनम की पदू चनन खौं खोर।
अपने अपराध छिपाने का प्रयास।

चार–दिना खौं हिल–मिल जी लें।
जीवन नाशवान है। प्रेम–पूर्वक रहना उचित है।

छींक तन छिनारो।
छोटे से अपराध का भारी दण्ड।

जान पाँड़े होना।
झूठे ज्ञानी बने फिरना।

जो लौ पाग समारत तोलो, बरातई आ जैय।
अति शीघ्रता में कार्य प्रारंभ करना।

जोलों सांस तोलों आस।
अंतिम समय तक प्रतीक्षा करना।

टापते रह जाना।
वंचित रह जाना।

तरे कौ रोय न ऊपर कौ फाये करे।
मिथ्या प्रदर्शन करने वाले लोग।

दो ईंटों खौं नाँय–माँय।
थोड़ी सी जरूरत के लिए इधर–उधर भटकना।

न्यारों पूत परोसी बिरोबर।
कभी–कभी आत्मीय जन पराये हो जाते हैं।

नागनाथ सो साँपनाथ।
नाम बदलने से दुर्गुण कम नहीं होते हैं।

निंगतन बनें न रजाई कौ लंगोट कसें।
क्षमता से अधिक बोझ उठाना।

पच न पानी, कुतिया बियानी।
अभावग्रस्त के समक्ष विशेष समस्या।

पटा बनेंती घुमा रये।
लड़ने की तैयारी करना।

पढ़े न लिखे हाफज जी नाम।
केवल झूठा दिखावा करना।

परमेसुर के पूरे।
बहुत खराब आदमी।

पाँसा परें तो दाव, राजा करें तो न्याय।
सभी सबल के पक्षधर होते हैं।

पिया न पूछें बात, सुहागन नाँव।
मिथ्या प्रदर्शन करके उपहास कराना।

ब्याव न सगाई, तैं मोरी लुगाई।
पूर्व परिचय के बिना संबंध स्थापित करना।

ऐतिहासिक संदर्भ आधारित

कुछ ऐसे महत्त्वपूर्ण राजे–महाराजे हो गए हैं, जो अपने शौर्य, मानवीय गुणों और उत्तम आदर्शों के कारण बहुचर्चित हो गए हैं। उनके उत्तम गुणों और उच्चादर्शों के उदाहरण लोक कहावतों में दिए जाते हैं, जिनसे जनसामान्य प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। राजा नल, राजा भोज, सत्य हरिश्चंद, राजा विक्रम, वीरसिंह जू देव, लाला हरदौल, शिवाजी और राजा छत्रसाल, राजा मधुकरशाह और रानी गणेशकुंवरि की चर्चा अनेक कहावतों में की गई है, जो आज के संदर्भ में विशेष महत्त्वपूर्ण है। ऐसी कुछ प्रमुख कहावतों के उदाहरण प्रस्तुत हैं –

काँ राजा भोज, उर काँ भुजुवा तेली।

कहाँ राजा भोज के समान, दानी, विद्वान और गुणज्ञ राजा और कहाँ एक साधारण सा भुजुवा तेली। इन दोनों की तुलना क्या हो सकती है?

छत्ता तोरे राज में धक–धक धरती होय।
जित–जित घोड़ा मुँह करे, तित–तित फत्तें होय।।

इस कहावत में महाराजा छत्रसाल के शौर्य और पौरुष की चर्चा की गई है। हे छत्रसाल! आपके राज्य में धरती काँपती रहती है। जिस ओर आपका घोड़ा चल देता है, वहीं आपको विजय प्राप्त होती है।

इत जमुना उत नर्मदा, इत चंबल उत टौंस।
छत्रसाल से लरन की, रही न काहू हौंस।।

यदि महाराज को बुंदेलखण्ड का पर्याय कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। उन्होंने जहाँ–जहाँ तक विजय पताका फहराई, उसी से सारे बुंदेलखण्ड की सीमा का निर्धारण हुआ है।

राजन में राजा छत्रसाल, और सब रजइयाँ।
रानिन में रानी कमलापति, और सब रनइयाँ।।

बुंदेलखण्ड के सारे राजाओं में पन्ना नरेश छत्रसाल ही सर्वश्रेष्ठ हैं। शेष राजा पौरुषहीन हैं। रानियों में सर्वश्रेष्ठ महारानी कमलापति हैं। अन्य रानियों का कोई मूल्य नहीं है।

एक पाख दो गाना, राजा मरैं का साना।।

ज्योतिष के अनुसार जब एक ही पखवाड़े में दो ग्रहण पड़ते हैं तो वह राजा और मंत्री को अपशकुन कारक होता है। उस वर्ष राजा अथवा मंत्री की मृत्यु हो सकती है।

जे राजा नल के पाँसे,
हरदम हुइयैं सासें।

राजा नल के पाँसे सदैव विजयश्री प्रदान करते हैं, वे कभी विफल नहीं होते।

ऐंठ दतिया में पैंठ दतिया में।
बिरचन घोर खाँय, पठरौटिया में।।

दतिया में राजे–रजवाड़े लोग झूठी शान–शौकत का प्रदर्शन करते हैं। ऐंठ तो दिखाते है बड़े–बड़े रईसों जैसी और घर में भोजन करने के लिए बर्तन भी नहीं होते। उनके खाने के लिए बेरों का बिरचन और उसे पत्थर की पठरौटिया में घोलकर खाते हैं और आ जाते हैं मूंछे ऐंठते हुए दतिया के राजा बनकर। यह एक प्रकार की व्यंग्योक्ति है।

ओरछा के राजा, दतिया की राई।
छत्रसाल अपनें मों, बनें धनाबाई।।

ओरछा के शासकों को राजा और दतिया के शासकों को राव की उपाधि मुगल शासकों की ओर से प्रदान की गई थी, किन्तु छत्रसाल ने अपने आप अपने को पन्ना का राजा घोषित कर दिया था।

नरवर चढ़ेन बेड़नी, एरच पकैं न ईंट।
गुदनौटा भोजन नहीं, बूंदीं छपैं न छींट।।

नरबर गढ़ पर चढ़कर बेड़िनी नाच नहीं दिखाती। एरच में ईंट नहीं पकती, गुदनौटा में भोजन प्राप्त नहीं होते और बूंदी में छींट नहीं छपती। इन सब पर अलग–अलग अन्तर्कथाएँ हैं, जिन्हें अलग शीर्षक में स्थान दिया जायेगा।

बाबन कुआँ, चौरासी ताल।
तौऊ टिमरौं में परौ अकाल।।

जालौन जिल के उरई के दक्षिण में 15 कि.मी. दूर 'टिमरो' नामक बहुत पुराना ग्राम है, जो आज ध्वस्त होकर धरती के नीचे दबा पड़ा है। ऐसा कहा जाता है कि इस गाँव में बावन कुआँ और चौरासी तालाब थे। फिर भी वहाँ एक बार घोर अकाल पड़ गया था। यह तो विधि का विधान है।

भैंस बँधी है ओरछा, पड़ा होसंगाबाद।
लगवैया है सागरैं, चपिया रेवा पार।।

इस कहावत में बुंदेलखण्ड की सीमा का निर्धारण किया गया है, जिसमें भैंस का उदाहरण देते हुए सीमा निर्धारित की गई है। सीमा में एक ओर ओरछा और दूसरी ओर होशंगाबाद है। एक ओर सागर जो नर्मदा के उस पार तक फैला हुआ है।

दतिया दलपत राय की, जीत सकें नहिं कोय।
जो जाकौ जीतें चहैं, अदभर फजियत होय।।

दतिया तो केवल राजा दलपतराय की ही है। यह इतना शक्तिशाली राज्य है कि उसे कोई नहीं जीत सकता। जो उसको जीतने की इच्छा रखता है, उसे हार कर भारी लज्जित होना पड़ता है।

झाँसी गरे की फाँसी, दतिया गरे कौ हार।
ललितपुर कबँहु न छोड़िए जब लो मिलें उधार।।

झाँसी गले की फाँसी है, क्योंकि झाँसी के लोग बिगड़े स्वभाव के हैं। दतिया गले का हार है, क्योंकि दतिया नगर के लोग मिलनसार और प्रेमी स्वभाव के लोग हैं। किन्तु ललितपुर नगर आकर्षक और प्रिय नगर है कि माँगने पर ग्राहकों को मनचाहा सौदा उधार दुकानदार देते रहते हैं। इसलिए इस नगर को छोड़कर नहीं जाना चाहिए।

कहावतों की कहानियाँ

कुछ ऐसी कहावतें यहाँ कही जाती हैं जो लंबी कहानियों के संक्षिप्त सूत्र हैं। लोक कहावत को सुनते ही जानकार लोगों को अपने आप आशय समझ में आ जाता है। अधिकांश लोग कहावतों की कहानियों से अपरिचित हैं। कुछ विद्वानों ने उनमें से अधिकांश कहावतों की कहानियाँ खोज निकालीं हैं, जो पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हैं।

घी देतन बामुन नर्रयात ।

अर्थात्, किसी की भलाई करने पर उसे बुरा लगना। एक छोटे से ग्राम में एक किसान रहता था। थोड़ी सी खेती किसानी करके जीवन यापन करता था। उसी के पड़ोस में गणेशगंज में श्यामलाल पंडित जी रहते थे। वे बड़े बुद्धिमान और भक्त पंडित थे। आसपास के पंद्रह बीस गाँवों में उनकी पंडिताई थी। उनके पास एक अच्छी फुर्तीली घोड़ी थी। उसी पर बैठकर वे पंडिताई करने के लिए घूमते रहते थे। एक दिन बड़े सबेरे उसी घोड़ी पर बैठकर वे अपने प्रिय शिष्य मगनलाल के घर पहुँचे। उस समय मगनलाल खेत पर गया था। उसकी पत्नी किशोरी घर पर थी। पौर के किवाड़ लगे थे। किशोरी घर की झारा बटोरी कर रही थी। पंडित जी ने घोड़ी से उतर कर घोड़ी को नीम के पेड़ से बाँध दिया और फिर पौर के किवाड़ खटखटाये।

सुनते ही किशोरी किवाड़ खोलकर बाहर आई। बाहर आकर पंडित जी को पहचान गई और तुरंत चरणों पर गिर पड़ी। पंडित जी ने ढेर सारा आशीर्वाद दिया। किशोरी बोली– अबकीदार तो बहुत दिनन में अबाई भई। हाँ बेटा! सारे क्षेत्र में जाना–आना पड़ता है। अकेला हूँ और काम बहुत है। किशोरी बोली– धन्य भाग हैं

हमारे! महाराज भीतर चलबौ होय, मैं भोजन आटा, दाल, घी, गुड और भाटा रखे देती हूँ। आप बढ़िया, भोजन बनाकर पा लीजिएगा। तब तक आपके किसान चेला खेत से लौटे आते हैं। किशोरी ने पहले घोड़ी के लिए घास रख दिया। पंडित जी पौर की खटिया पर जा बैठे। किशोरी भोजन सामग्री रख गई। पंडित जी ने बढ़िया भोजन बनाया और खूब प्रसाद पाया। थोड़ी देर शिष्य की प्रतीक्षा करने के बाद उसी खटिया पर लेट कर सो गए और खर्राटे भरने लगे। किशोरी घर–गृहस्थी के कामों में व्यस्त हो गई। इतने में उनका शिष्य खेत से लौटकर आ गया और घोड़ी को देखते ही समझ गया कि गुरू जी पधारे हैं। अंदर जाकर पत्नी से बोला– कि क्यों री, तूने गुरूजी को घी दिया था। किशोरी बोली– हाँ, सब दिया था और वे भोजन करके आराम कर रहे हैं। आप अंदर आकर भोजन करिए, उन्हें मत जगाइएगा। मगन बोला– अरे! मैं क्या भोजन करूं? मेरे गुरूजी को कोई भयंकर रोग हो गया है, तू बड़ी कंजूसिनी है, तूने उन्हें घी नहीं पिलाया है। जल्दी एक कटोरी में घी गर्म करके ले आओ मैं उन्हें घी पिलाकर ही भोजन करूँगा। किशोरी एक कटोरी में घी गर्म करके ले आई। मगन ने उस कटोरी को पकड़कर उनके खुले हुए मुँह में वह उबलता हुआ घी उड़ेल दिया। पंडित जी का सारा मुँह जल गया और वे वहाँ से चिल्लाते हुए भागे। यह देखकर मगन लाल चकित होकर कहने लगा कि अरे! यह कैसा ब्राह्मण है जो घी पिलाते हुए चिल्लाता है। उसी समय से इस कहावत का प्रचलन हो गया है।

घी देतन बामुन नर्रयात।
पईं–पईं करत फिरो।

एक भिखारी को माँगने से थोड़ा सा आटा प्राप्त हुआ। वह भूखा था। वह आटा माड़कर रोटी बनाना चाहता था। उसके पास बर्तन नहीं थे। वह किसी एकांत स्थान पर बैठकर आटा गूँथना चाहता था। उसे गाँव के बाहर एक कुआँ की पाट खाली दिखाई दी। वह थोड़ा सा पानी डालकर आटा गूंथने लगा। कुछ समय बाद पनिहारिनों की भीड़ बढ़ गई। औरतें कहने लगीं कि भइया माँय सरकियौं, वह खिसक–खिसक कर परेशान हो गया। वह पछताने लगा। एक औरत को उसकी दुर्दशा पर दया आ गई। वह बोली– भइया ये आटा मुझे दे दो, मैं रोटी बना दूँगी। तुम मेरे घर आकर रोटी खा लेना। उसने आटा उस औरत को दे दिया और वह आटा लेकर चली गई। जल्दी–जल्दी में वह उसका नाम पता पूछना भूल गया। उसने सोचा कि चलो कोई बात नहीं, मैं तो गाँव में खोज लूँगा। थोड़ी देर तक एक पेड़ के नीचे बैठा रहा, फिर सोचा कि अब तो रोटी बन गई होगी। ऐसा सोचकर गाँव की ओर चल दिया। गाँव के एक

छोर से हर घर के द्वार पर खड़े होकर पूछने लगा– 'काय बाई पईं, काय बाईं पईं कहता हुआ पूरे गाँव में घूम आया पर कहीं से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ। अंत में निराश होकर एक चबूतरे पर बैठ गया। थोड़ी देर बाद हिम्मत बाँधकर फिर 'काये बाईं पईं' कहता हुआ घूमने लगा। अचानक एक दरवाजे से आवाज आई। हऔ भइया रोटी बनीं धरीं आव हम तुमाई कब की बाट हेरैं सुनते ही भिखारी बैठकर रोटी खाने लगा। उसी समय से यह कहावत चल पड़ी है।

अबै साँप बामी में सें कड़ो गमरदंदोर में नई फंसो।

इस कहावत के सम्बन्ध में एक लोककथा कही जाती है– किसी हाट से एक ठाकुर साहब घोड़े पर चढ़कर शाम को घर लौट रहे थे। उनके घोड़े का तंग टूट गया और वे परेशान थे। इतने में हाट करके लौटता हुआ एक कारीगर भी पीछे से आ गया। ठाकुर ने उससे तंग सिल देने के लिए कहा। उसके पास औजार तो थे पर चमड़ा नहीं था। पास ही रास्ते में एक साँप पड़ा हुआ था। संध्या के अँधेरे में उसने उसे एक चमड़े की पट्टी समझ लिया और उसे उठाकर तंग के साथ सिल दिया। ठाकुर साहब का घोड़ा आगे बढ़ा। रास्ते में एक दूसरा साँप मिला जो मौज मस्ती में चल रहा था। उसे देखकर तंग में जड़े साँप ने कहा कि यह साँप अभी बामी से निकला है, अभी इसे संसार का कोई अनुभव नहीं है। इसीलिए मौज मस्ती में लहरा रहा है। जब तुम मेरी तरह गमरदंदोर में फंसोगे तभी तुम्हें दुनियादारी का ज्ञान होगा। उसी समय से इस कहावत का प्रचलन हो गया।

घर के जान बरातै गए, रानीपुरा कठवा में दए।

इसका अर्थ हुआ– आशा के विपरीत स्थिति। किसी व्यक्ति के घर के लोग समझ रहे हैं कि वह बारात में गया है। लेकिन समाचार मिला कि बारात में झगड़ा हो जाने के कारण उसे कोतवाली में बंद कर दिया गया है। तभी से यह कहावत चल पड़ी है।

दोई दीन सें गए पाँड़ें, हलुवा मिले न माँड़े।

पंडित जी को खाने के लिए न हलुआ मिल पाया और न माँड़े ही मिल पाये। वे दोनों ओर से वंचित हो गए। माँड़े जाति विशेष का प्रिय भोजन है। पाण्डे जी यजमान के यहाँ का हलुवा छोड़कर माँड़े खाने के लालच में वहाँ यहाँ चले गये। वहाँ माँड़े नहीं मिले और वहाँ खाने के कारण यजमानों ने भी उनका बहिष्कार कर दिया। इस तरह खान–पान की मर्यादा का उल्लंघन करने से उन्हें नुकसान उठाना पड़ा। जो लोग कई

जगह से एक साथ लाभ उठाने के चक्कर में रहते हैं, उन्हें हर तरफ से घाटा ही होता है।

नंगी भली कै मूसर आड़ौ।

अपनी लाज बचाने के लिए यदि कोई उपयुक्त साधन न मिले तो किसी अन्य वस्तु को सामने रखकर लाज बचाई जा सकती है। जैसे नारी मूसल को तिरछा करके गुप्तांगों को ढंक लेती है।

कोई व्यक्ति धन कमाने के लिए परदेश गया था। वह बहुत दिनों तक लौटा नहीं। इधर उसकी पत्नी की इतनी दुर्दशा हुई कि उसके तन को ढंकने के लिए कपड़े भी नहीं बचे। पति परदेश से लौटते समय सोच रहा था कि मेरे घर पहुँचते ही मेरी पत्नी वस्त्राभूषण पहने पूरी तरह से सुसज्जित मिलेगी, किन्तु जब वह घर में घुसा तो उसकी पत्नी मूसल की ओट में अपने अंगों को छिपाती हुई मिली। यह देखकर आश्चर्य हुआ। तभी से यह कहावत चल पड़ी।

पानी कौ धन पानी में, नाक कटी बेईमानी में।

पानी की कमाई पानी में चली गई और धंधे में जो बेईमानी की उसकी बदले दण्ड स्वरूप नाक कट गई। हत्या–हराम से धन कमाने वाले की ऐसी ही दुर्गति होती है। बदले में उसे कष्ट भोगना पड़ा। इस कहावत के संदर्भ में एक लघु कथा कही जाती है।

एक दूध बेचने वाली ग्वालिन ने दूध में पानी मिला–मिला कर बचाए हुए रुपयों से एक सोने की नथ बनवाई। नई नथ पहनकर जब वह बाजार से घर लौट रही थी। वह अपना चेहरा देखने के लिए ललचा रही थी। उसने रास्ते में मिलने वाले कुएँ में झाँक कर अपना चेहरा देखा। नथनी से सुसज्जित चेहरा बहुत ही आकर्षक लग रहा था। उसे देखकर वह मन ही मन प्रसन्न हो रही थी। उसी बीच एक पक्षी ने उसकी नाक पर झपट्टा मारा, जिससे नथनी उसकी नाक को फाड़ती हुई कुएँ के पानी में जा गिरी और उसकी नाक मुफ्त में ही कट गई। तभी से यह कहावत चल पड़ी है।

जो जैसी करनी करें, सो तैसों फल पाय।
बेटी पौंची राजघर, बाबैं बँदरा खाय।।

एक साधु किसी राजा के यहाँ गया। वह राजा की राजकुमारी पर मुग्ध हो गया। वह उसे प्राप्त करना चाह रहा था। साधु ने कहा कि इस राजकुमारी का आपके यहाँ

रहना भारी अपशकुन सूचक है। इसलिए आप इसे एक लकड़ी के एक डिब्बे में बंद करके नदी में प्रवाह में बहा दीजिए। तभी आपका कल्याण हो सकता है। उसने सोचा कि मैं उस डिब्बे को पकड़कर राजकुमारी के साथ रमण करूँगा। साधु ने मंत्रोच्चारण करते हुए राजकुमारी के डिब्बे को पानी में बहा दिया और वह स्वयं जंगली मार्ग से आश्रम में पहुँच गया और नदी किनारे बैठकर डिब्बे की प्रतीक्षा करने लगा। इधर एक और राजकुमार शिकार खेलने के लिए जंगल में निकला। उसने उस बहते हुए संदूक को रोक लिया। संदूक खोलने पर उसमें एक सुंदर राजकुमारी मिली। उसने सारी कहानी राजकुमार को सुनाई। राजकुमार ने उसके साथ विवाह कर लिया और उसे अपने साथ राजमहल ले गया। उस संदूक में एक भयानक बंदर को बंद करके संदूक को फिर नदी में बहा दिया।

साधु तो आश्रम में बैठकर संदूक की प्रतीक्षा कर ही रहा था। संदूक सामने आते ही उसने संदूक आश्रम में रख लिया। वह तो कामातुर था ही। रात में ज्यों ही बड़े चाव से संदूक खोला तो उसमें से भयानक बंदर ने निकलकर साधु को बुरी तरह से काट खाया और साधु को दुर्भावना का दुष्परिणाम भोगना पड़ा। तभी से यह कहावत चल पड़ी है।

विद्या पढ़े संजीवनी, निकरे मत के हीन।
ऐसे बिना विवेक के, वन में खा लय तीन।।

प्राचीन काल में काशी नगरी संस्कृत शिक्षण का प्रमुख केन्द्र था। तीन ब्राह्मण बालक संस्कृत की शिक्षा प्राप्त करके काशी से लौट रहे थे। उन्होंने आयुर्वेद शास्त्र में संजीवनी विद्या पढ़ी थी। अर्थात् वे मरे हुए को जिंदा कर सकते थे। उन्हें रास्ते में एक मरा हुआ सिंह दिखाई दिया। उसे देखकर उन्होंने सोचा कि हम अपनी सीखी हुई संजीवनी विद्या की परीक्षा कर लें। भले ही उन्होंने विद्या सीख ली थी, किन्तु थे वे विवेक हीन। वे तीनों यह नहीं सोच सके कि यदि हम इस मरे हुए सिंह को जिंदा कर देंगे तो यह हम तीनों को खा जायेगा। अंत में उन्होंने बिना ही सोचे उस मरे हुए सिंह पर अपनी संजीवनी विद्या का प्रयोग कर डाला, जिससे वह मरा हुआ सिंह जीवित होकर खड़ा हो गया और अपने सामने तीन लोगों को देखकर उसकी भूख बढ़ गई और उसने तीनों को मार कर खा लिया। इस प्रकार अपनी विवेकहीनता के कारण तीनों पढ़े लिखे ब्राह्मणों को अपने प्राणों से हाथ धोने पड़े। तभी से यह कहावत चल पड़ी है।

सीक ओइकों दीजिए, जाको सीक सुहाय।
सीक न बाँदर दीजिए, घर बैया कौ जाय।।

एक दिन बरसात में भींगता हुआ एक बंदर वृक्ष पर छाया के लिए बैठ गया। उस वृक्ष पर बया पक्षी का घोंसला भी था, जो बहुत ही सुंदर घोंसला था। बया बड़े प्रेम से अपने घोंसले में बैठी थी। नर और मादा किलोलें कर रहे थे। बया ने बंदर को भीगता हुआ देखकर कहा कि देखो हम बहुत ही छोटे हैं, फिर भी एक–एक तिनका चुनकर हम अपने लिए घोंसला बना लेते हैं और आप शरीर से कितने बड़े हैं। फिर भी आप बरसात से बचने के लिए मनुष्यों की तरह घर नहीं बना पाते। यह सुनकर बंदर को क्रोध आ गया। उसने क्रोधावेश में आकर बया पक्षी के घोंसले को तोड़कर कुएँ में फेंक दिया। किसी विद्वान ने ठीक ही कहा है –

पयःपानं भुजंगाना, केवलं विष वर्धनम्।
उपदेशानां मूर्खाणाम्, क्रोधाय न शान्तये।।

जैसे को तैसों मिलें, मिलै खीर में खाँड़।
तैं जात की बेड़नी, मैं जात कौ भाँड़।।

इस कहावत के संबंध में एक अन्तर्कथा प्रचलित है – एक बार एक गाँव की बेड़िनी के मन में पितृपक्ष में ब्राह्मणों को आमंत्रित करके उन्हें भोजन कराने की इच्छा जागृत हुई। किन्तु ब्राह्मण वेश्या के यहाँ भोजन की तो बात अलग है, जल भी ग्रहण नहीं करते। बहुत विनय करने पर भी कोई ब्राह्मण उसके यहाँ भोजन करने को तैयार नहीं हुआ। वह वेश्या ब्राह्मण की खोज में गाँव के बाहर सड़क पर बैठ गई। वहाँ उसे पीत वस्त्रधारी हाथ में चिमटा, सिर पर त्रिपुण्ड और गले में तुलसी की माला पहने एक अपरिचित व्यक्ति दिखाई दिया। उसे ब्राह्मण समझकर वेश्या ने अपने घर भोजन करने की प्रार्थना की। वेश्या की प्रार्थना स्वीकार करते हुए वह उसके यहाँ भोजन करने चला गया। वहाँ उसे भोजन में बढ़िया खीर खिलाई गई।

बेड़िनी ने भोजन के पश्चात् दक्षिणा देते हुए कहा कि महाराज आप यह दक्षिणा स्वीकार कीजिए। आपने मेरा आमंत्रण स्वीकार करके मुझ अधम वेश्या को धन्य कर दिया। यहाँ के सारे ब्राह्मणों ने मेरे आमंत्रण को ठुकरा दिया था। साधु वेशधारी ने कहा कि मैं जाति का भाँड हूँ। मैं तो साधु का वेश बनाकर निकला था कि कहीं पितृपक्ष में बढ़िया भोजन मिल जाएगा और तुम्हारे यहाँ मुझे बढ़िया भोजन मिल भी गया। हमारा तुम्हारा तो वैसे ही जोड़ा होता है। संयोगवश जैसे को तैसा ही मिल गया। जिस प्रकार तुम जाति की बेड़िनी हो और मैं जाति का भाँड़ हूँ। हमारे तुम्हारे मिलने में कोई बाधा आड़े नहीं आ सकती है।

तीन में ना तेरा में,
ढोल बजाबैं डेरा में।

बानपुर के सुप्रसिद्ध राजा मर्दनसिंह ने बानपुर में एक बहुत बड़ा आयोजन किया। उसमें आस–पास के सभी राजाओं–महाराजाओं और जागीरदारों को आमंत्रित किया गया। ठाकुरों में सोलह उपवर्ग होते हैं। उनमें से तीन बुंदेला, धँधेरे और पवाँर श्रेष्ठ माने जाते हैं। उस आयोजन में तीन और तेरह उपवर्गों के अतिरिक्त एक ठाकुरों का ऐसा भी वर्ग उपस्थित हुआ, जो तीन और तेरह उपवर्गों में नहीं आता था। ऐसे लोगों को किसके साथ बैठाया जाये। यह समस्या उत्पन्न हो गई। पंचायत में यह निर्णय हुआ कि उन्हें अलग शिविर लगाकर भोजन कराया जाये। तभी से यह कहावत चल पड़ी है।

जब किस्मत मारैं जोर,
तौ कोदौं नीदें चोर।

एक किसान के खेत में कोदों की फसल खड़ी थी। वह अपना खेत निंदवाना चाहता था। उसके पास मजदूरों को देने के लिए पैसे भी नहीं थे। इसलिए उसने खेत निदवाने की बात छोड़ दी, उसी दिन कुछ चोरों का पीछा पुलिस कर रही थी। चोर दौड़ते हुए उस किसान के खेत के समीप पहुँच गए और उस किसान से बोले कि आप हम लोगों को अपने खेत में काम करने दीजिएगा। किसान तो यह चाहता ही था। उसने उन चोरों को अपने कोदों के खेत में काम करने के लिए लगा दिया। पीछे से सिपाही चोरों को खोजते हुए उसी खेत के समीप पहुँचे। तब उस किसान ने कह दिया कि ये चोर नहीं हैं। ये हमारा खेत नींदने वाले मजदूर हैं। चोरों को मजदूर मानकर सिपाही लौट गए। भाग्य की प्रबलता के कारण चोरों ने उस किसान का खेत नींद दिया और चोर भी जेल जाने से बच गए, तभी से यह कहावत चल पड़ी है।

खेती धन की नास, धनी न होबै पास।
खेती धन की आस, धनी जो होबैं पास।।

इस कहावत पर आधारित एक अन्तर्कथा प्रचलित है। एक बंजारे ने खेती करने का मन बनाया। उसने खेती करने के लिए एक खेत खरीदा। उसने खेत की जुताई–बुआई करा दी और उसे सूना छोड़कर व्यापार करने चला गया। जब वह लौटकर आया तो देखा कि खेत की सारी फसल उजड़ चुकी थी।

कुछ समय बाद दूसरा बंजारा आया। वह खेत की बोनी कराने के बाद उसी खेत

की मेड़ पर रहने लगा, जिससे उस बंजारे को खेती का भरपूर लाभ प्राप्त हुआ। तभी से यह कहावत चल पड़ी है।

नरबर चढ़ेन बेड़नी, एरच पकैं न ईंट।
गुदनौटा भोजन नहीं, बूंदीं छपैं न छींट।।

इस कहावत के संदर्भ में एक अन्तर्कथा कही जाती है। शिवपुरी जिले में नरवरगढ़ नाम का एक प्राचीन नगर है। ऐसा कहा जाता है कि यह नगर महाभारतकालीन राजा नल की राजधानी थी। ऐसा कहा जाता है कि यहाँ एक वेश्या कच्चे सूत पर नाचने आई। उसने सारे हथियारों को मंत्रों के द्वारा बाँध दिया। केवल वह राँपी को बाँधना भूल गई। राँपी से कच्चा सूत काट दिया, जिससे बेड़िनी नीचे गिरकर मर गई। उसी समय से बेड़िनी नरवरगढ़ में नृत्य के लिए नहीं जाती हैं।

एरच झाँसी जिले के बेतवा नदी के किनारे स्थित एक ऐतिहासिक नगर है। ऐसा कहा जाता है कि ये नगर हिरण्यकश्यप की राजधानी थी। यहीं प्रहलाद का जन्म हुआ था। इस नगर का सात बार उलट फेर हुआ। जमीन खोदने पर यहाँ प्रचुर मात्रा में ईंटें दबी हुई मिलती हैं। इसलिए यहाँ नईं ईंटें पकाने की जरूरत नहीं पड़ती। इसलिए एरच पकें न ईंट की उक्ति चल पड़ी है।

बुन्देलखण्ड में एक गाँव गुदनौटा है। जहाँ बाहरी लोगों को ठहरने नहीं दिया जाता था। गरीबी के कारण वहाँ भोजन की भी कोई व्यवस्था नहीं थी। इसी कारण से यह कहावत चल पड़ी है।

बूँदी राजस्थान का एक नगर है, जहाँ छींट नहीं छापी जाती है बल्कि वहाँ आयुध तैयार किए जाते हैं।

राजा भोज भरम में भूले, घर–घर में मटियारे चूले।

राजा भोज के महल में सोने के चूल्हे बने हुए थे। एक बार उनके राज्य में अकाल पड़ गया। उनकी जनता भूखों मरने लगी। जनता राजस्व नहीं चुका पा रही थी। सरकारी व्यय अधिक हो रहा था। इस कारण से खजाना खाली होने लगा। राजा भोज चिंतित थे। राजा जानते थे कि जैसे हमारे राजभवन में सोने के चूल्हे हैं, वैसे जनता के पास भी सोने के चूल्हे होंगे। राजा भोज ने आज्ञा दी कि जनता के सारे चूल्हे खोदकर खजाने में जमा करा दिए जायें। जनता के पास तो मिट्टी के ही चूल्हे थे। तभी से यह कहावत चल पड़ी।

अमर नाव के मरतों देखे, चूलों फूँकत लाखनरा।
धनपत कंडा बीनत देखे, तुमई भले मोरे ठनठनरा।

एक गाँव में पति–पत्नी निवास करते थे। पति का नाम 'ठनठनरा' था। पत्नी को यह नाम अच्छा नहीं लगता था। पड़ोस की औरतों के बीच उसे लज्जा का अनुभव होता था। 'ठनठनरा' भी अपने इस नाम से परेशान था। जब कभी कोई उसे 'ठनठनरा' कहकर पुकारता तो उसे ऐसा लगता कि जैसे किसी ने उसके गाल पर तमाचा जड़ दिया हो। किन्तु अब करता ही क्या? मन मसोस–कर रह जाता। नाम तो प्रचलित हो ही चुका था। वह अपना नाम बदलकर कोई अच्छा सा नाम रखना चाहता था। वह अच्छे नाम की तलाश में परदेश निकल पड़ा।

चलते– चलते वह एक घनघोर और सुनसान जंगल के बीच से निकल पड़ा। उसने देखा कि एक औरत जंगल में से सूखे कंडे बीन रही है। ठनठन को बड़ी जोर की प्यास लगी थी। ठनठन ने उससे कहा कि माता जी मुझे थोड़ा सा जल पिला दीजिए। औरत ने उसे जल पिला दिया। ठनठन ने पानी पीकर पूछा–कौन जात हो माई। उस औरत ने तुरन्त कहा कि देखो भाई पानी पीकर जाति नहीं पूछी जाती। सुनकर ठनठन लज्जित होकर रह गया, फिर पूछा– तुम्हारा नाम। 'लक्ष्मी है भैया। सुनकर ठनठन आश्चर्य चकित हो गया। देखिए नाम तो है लक्ष्मी और फटी पुरानी धोती पहने कंडे बीन रही है। वाह री लक्ष्मी! किसने रखा तेरा यह नाम। तेरा नाम तो दुखिया होता। चलते–चलते ठनठन एक गाँव पहुँचा, उसे बड़ी जोर की भूख लगी थी। एक झोपड़ी के दरवाजे पर एक आदमी बैठा था। देखने में वह उच्च जाति जैसा लगता था। ठनठन ने उसका नाम पूछा– उसने बताया कि भैया मेरा नाम धनपाल है। उसे यह नाम अच्छा लगा। उसने सोचा कि धनपाल से भोजन माँग लेना चाहिए। उसने कहा कि भाई साहब कुछ खाने को दे दो। उसने ठनठन को झोपड़ी में ले जाकर टाट–पट्टी पर बैठा दिया। चूले पर हाण्डी चढ़ाकर एक मुठ्ठी चावल डाल दिए और कहा कि भैया घर में नमक तो है नहीं, पड़ोस से माँगना पड़ेगा। देखकर ठनठन दंग रह गये। नाम तो है धनपाल! इससे अच्छा तो इसके पड़ोसी का नाम है गरीबा। फिर ठनठन अच्छे नाम की तलाश में आगे बढ़े। वे एक गाँव के बाहर ही पहुँच पाये थे कि उन्हें भीड़ में राम नाम सत्य है कि आवाज सुनाई दी। उसने देखा कि लोग अर्थी पर एक मुर्दा रखे श्मशान की ओर जा रहे हैं। ठनठन ने पूछा कि भैया ये कौन स्वर्गवासी हो गया है। लोगों ने बताया कि 'अमर सिंह' चले गए। सुनते ही ठनठन भौचक्के रह गये। बोले– देखो तो अमर मर गये हैं। उसके मुँह से अचानक निकल पड़ा –

लक्ष्मी कंडा बीनती, हर हाँकें धनपाल।
अमर हते सो मर गये, नौनें ठनठन पाल।

इस सबसे तो मेरा ही नाम अच्छा है। मैं परेशान होकर व्यर्थ ही भटकता रहा। तभी से यह कहावत चल पड़ी है। लोगों को इसकी वास्तविकता का पता नहीं था।

आधी छोड़ सारी खौं धाबैं, आधी मिलें न सारी पाबैं।

कुछ कहावतकार इस कहावत को *'रेवन–ककबारे की कुतिया'* भी कहा करते हैं। इस कहावत के विषय में एक लघु कथा कही जाती है– 'मऊरानीपुर के गुरूसराय की ओर जाने वाले मार्ग पर रेवन नाम का ग्राम स्थित है और रेवन से 3 कि.मी. दूर ककवारा गाँव स्थित है। एक दिन रेवन ग्राम में शादी का आयोजन हुआ और उसी दिन विशाल भोज की तैयारी होने लगी। यह देखकर रेवन की कुतिया फूली नहीं समा रही थी। वह सोच रही थी कि आज तो खूब छक्के–पंजे उड़ना है। ढेरों जूंठन मिलेगा। महीनों की भूख मिट जाना है। वह भोज के आस–पास बैठकर भोज की प्रतीक्षा करने लगी। उसी दिन उसे पता लगा कि ककवारे में भी एक विशाल भोज हो रहा है। अब कुतिया की प्रसन्नता की क्या कहना। वह सोच रही थी कि अब तो दोनों ही ग्रामों के भोज का आनंद मिलेगा। दोनों ग्रामों की दूरी तो ज्यादा है नहीं। मैं दौड़कर दोनों ही भोज निपटा लूँगी। उसने देखा की अभी रेवन के भोज में बिलम्ब है, तब तक मैं ककवारे का भोज दौड़कर देख लेती हूँ। वह उठी और सीधी ककवारे की ओर दौड़ गई और आधा घंटे में ककवारे के भोज स्थल पर पहुँच गई। उसने देखा कि वहाँ भी भोज प्रारंभ होने में देर है। वह वहाँ बैठकर सोचने लगी कि कहीं रेवन का भोज प्रारंभ न हो गया हो। यहाँ तो बहुत देर दिखाई दे रही है। चलो, तब तक रेवन का भोज निपटा आयें। यह सोचकर वह रेवन की ओर दौड़ पड़ी। दौड़ते–दौड़ते हांप गई। वहाँ पहुँचकर देखा कि रेवन का भोज तो समाप्त हो गया है। और गाँव के कुत्ता खा–खाकर मस्त हो गए हैं। यह देखकर वह बहुत दुखी हो गई।

उसने सोचा कि ककवारे के भोज में तो बहुत बिलम्ब था, अभी शुरू नहीं हुआ होगा। चलो, यहाँ की कसर ककवारे में ही लगा लेंगे। यह सोचकर वह फिर ककवारे की ओर दौड़ पड़ी। वह भूखी थी और थकी भी थी। उसके ऊपर यह कहावत चरितार्थ हो रही थी। *'दूबरी और दो अषाढ़, चरन गई दूर को हार।'* वह वहाँ जाते ही गिर पड़ी। कुतिया ने देखा कि– अरे! यहाँ भी मैदान साफ है। यहाँ के कुत्तों ने सारा जूठन साफ कर दिया। कुतिया अपना माथा ठोककर रह गई। सोचने लगी कि यदि एक जगह बैठे

रहते तो थोड़ा बहुत खाने को मिल ही जाता भाग दौड में सारा सत्यानाश हो गया। तभी से यह कहावत चल पड़ी है

आधी छोड़ सारी खौं धाबैं, आधी मिलें न सारी पाबैं।

सिकाय पूत दरबारें नईं जात।

बड़े–बूढ़े कहा करते हैं कि बिल्ली शेर की मौसी है। बिल्ली ने शिकार की सारी विधियाँ उछलना, कूदना, पकड़ना, नोंचना–चींथना बिल्ली ने ही शेर को सिखाया है। शेर के बच्चे जब कुछ सयाने हो गये। सो वे बिल्ली पर ही झपट पड़े। बिल्ली उछलकर पेड़ पर चढ़ गई। बच्चे नीचे खड़े–खड़े उसी की ओर निहारते रहे। उन्हें पेड़ पर चढ़ना नहीं आता था।

शेर के बच्चों ने कहा कि मौसी नीचे उतरिये। आपने हमें पेड़ पर चढ़ना तो सिखाया ही नहीं है। बिल्ली ने हँसकर कहा कि बेटा! *सिकाय पूत दरबारें नईं जात।* तभी से यह कहावत चल पड़ी है।

दरिद्र नारायन की सेवा में फंस गये।

पुराने समय में आजकल जैसे घर–घर में शौचालय नहीं होते थे। गाँव के नर–नारी गाँव के बाहर लोटा लेकर खेतों में गड्ढों में और झाड़ियों की ओट में शौच करने के लिए जाया करते थे। इसी के संबंध में एक पहेली पूछी जाती है –*'बताव भैया टट्टी होत में का पकरत हैं और का खात हैं।'* समझदार लोग इस पहेली का उत्तर देते हुए कहते हैं– *टट्टी होते हुए नर–नारी ओट पकड़ते हैं और शरम खाते हैं।* इसी आधार पर गाँव के ठाकुर साहब और दरिद्रनारायण में होड़ बँध गई। एक गाँव के प्रतिष्ठित ठाकुर साहब सबेरे उठते ही नदी के किनारे झाड़ियों की ओट में शौच करने बैठ गये। बैठे ही थे कि उनकी निगाह गाँव के ही एक सज्जन पर पड़ी जो शौच करने के लिए दूसरी झाड़ी की ओट में डटे हुए थे। उस दरिद्रनारायण की निगाह ठाकुर साहब पर पड़ गई। दोनों ने एक दूसरे को देख लिया, किन्तु दोनों अपने–अपने मोर्चे पर डटे रहे। ठाकुर साहब सोच रहे थे, कि यदि मैं पहले उठा तो मेरी हेटी होगी। उनके पेट में कुछ है भी नहीं, इसलिए जल्दी उठ गये और जल्दी उठने में मेरा अपमान होगा। यह योचकर ठाकुर साहब डटे रहे। दरिद्रनारायण सोच रहा था कि यदि मैं

जल्दी उठा तो ठाकुर साहब सोचेंगे कि अरे! ये तो दरिद्रनारायण ठहरे। भूखों मरते होंगे, इनके पेट में क्या रखा है। इस कारण से ये तो जल्दी उठेगा ही। यह सोचकर संकोचवश दरिद्रनारायण भी डटा रहा। एक दूसरे के संकोच में वे दोनों दोपहर तक अपने अपने स्थानों पर डटे रहे। अंत मै। बड़बड़ाते हुए ठाकुर साहब उठे और नदी के किनारे बैठकर चुल्लू में पानी ले लेकर गुप्तांग का प्रक्षालन करने लगे। कुछ देर में दरिद्र नारायण भी उठा और नदी का पानी चुल्लू में ले–ले कर प्रक्षालन करने लगा। अब क्या था दोनों में प्रक्षालन की भी होड लग गई। ठाकुर सोचते थे कि यदि मैं जल्दी उठ जाऊँगा तो हरिजन सोचेगा कि अरे ठाकुर अच्छी तरह से गुप्तांग भी साफ नहीं करते। इस कारण से ठाकुर साहब जुटे रहे। वह भी सोच रहा था कि मैं जल्दी उठ जाऊँगा तो ठाकुर साहब सोचेंगे कि अरे यह अच्छी तरह से गुप्तांग भी साफ नहीं करता, इस कारण वह भी शौच प्रक्षालन में जुटा रहा। दोनों के पोंद रगड़ते–रगड़ते लाल हो गये। इसी होड़ में शाम हो गई। अंत में ठाकुर साहब ने एक राहगीर को रोककर कहा– देखो भैया। हमारे बच्चों से कह देना कि मवेशियों को बाहर चरने के लिए निकाल देना। मैं यहाँ दरिद्र नारायण की सेवा में फंस गया हूँ। तभी से यह कहावत चल पड़ी है।

वे जौंन पाँड़े कहाउत हैं।

विधि का विधान बड़ा विचित्र है। कभी संयोगवश किसी की वाणी सत्य हो जाती है और भविष्यवक्ता के रूप में उसे मान–सम्मान, यश और लक्ष्मी की प्राप्ति होने लगती है। फिर अनुमान से उनका रोजगार जीवन भर चलता रहता है। एक–दो बार यदि उनकी भविष्यवाणी सत्य हो गई तो खोटा सिक्का भी चलता रहता है। इसमें संयोग की प्रबलता प्रमुख है।

एक गाँव में एक पुत्र और माता निवास करते थे। पिता जी बहुत पहले स्वर्ग सिधाार चुके थे। पुत्र का विवाह करने के बाद पिता की मृत्यु हो गई थी। उनका पुत्र भोला कभी ससुराल नहीं गया था। उसकी माँ अकेली रहते–रहते ऊब गईं थी। वह अपनी पुत्रवधू को अपने घर बुलाना चाहती थी। भोला का विवाह बचपन में हो गया था। उसे अपनी पत्नी की सूरत–शक्ल का भी कोई ध्यान नहीं था और न ससुराल का अता–पता। भोले के ससुर बाबा बहुत पहले स्वर्गवासी हो गए थे। ससुराल में केवल उनकी सास और पत्नी ही थीं। दोनों माँ–बेटी गुजर–बसर करती थीं। एक दिन भोले ने अपनी माँ से कहा– माता जी, मैं अपनी ससुराल जाना चाहता हूँ। आप अकेली परेशान होती हैं। मैं आपकी बहू को लाना चाहता हूँ।

अपनी माता से ससुराल के गाँव का रास्ता पूछकर और अपने ससुर बाबा का नाम पूछकर ससुराल जाने को तैयार हो गया। माँ ने भोजन के लिए चार–पूड़ियाँ बनाकर एक थैले में रख दी। वहाँ से ससुराल के गाँव की दूरी लगभग 10 कोस थी। भोला माँ के चरण छूकर जाने लगा। माँ ने कहा कि बेटा जल्दी लौट आना और रात होते ही रूक जाना।

भोला को चलते–चलते शाम हो गई। वे गाँव के समीप पहुँच ही गये थे। अँधेरा हो चला था। गाँव के बाहर एक सराय के पास गन्ने से भरी हुईं गाड़ियाँ खड़ी थीं। कुछ पास के घरों के बदमाश गन्ने चुरा–चुराकर रख रहे थे। भोला चुपचाप देखते हुए चले गए। उन्हें रास्ते में तालाब के पास कुछ गधे चरते हुए दिखाई दिए। ये सब देखते हुए वे अपनी ससुराल के घर के पिछवाड़े में रूक गए। माँ ने कहा था कि रात में आगे मत बढ़ना। थैले में तो पूड़ियाँ रखी ही थीं। लोटा डोर से पास के कुआँ से जल भर लाया और आराम से भोजन करके तौलिया बिछाकर लेट गया। वह चुपचाप माँ–बेटी की बात सुनने लगा। उसकी घरवाली ने कहा कि आज अपने पास केवल एक रूटिया–कुचिया है। कुचिया तुम खालो और रूटिया मैं खा लूँगी। कहीं कोई मेहमान न आ जाये। आ जायेगा, तब देखेंगे। इतनी चर्चा करके वे रूटिया–कुचिया खाकर सो गईं। इधर करवट लेते–लेते भोला भी सो गए। चार बजे उठकर भोला ने तालाब पर जाकर स्नान किया। शंकर जी को जल चढ़ाकर त्रिपुण्ड लगाकर कुछ देर वहाँ बैठे रहे। बालों को अच्छा संभालकर गले में तौलिया डालकर, एक हाथ में झोला और एक हाथ में डंडा लेकर सीधे दरवाजे पर जाकर खड़े हो गए। सास ने पहचान लिया, वह पाँव छूकर उन्हें सम्मान पूर्वक पौर की खटिया पर बैठाया। कुशल समाचार पूछकर लोटा भरकर जल ले आईं। उनकी घरवाली किवाड़ों की ओट से अपने पति के दर्शन करने लगी। सास ने पूँछा कि कहीं रात में रूक गये थे? भोले ने कहा कि– हाँ यहाँ से एक कोस दूर गनेशगंज में रूक गये थे। सास ने कहा– आप वहाँ व्यर्थ रूके रहे, आपको रात में सीधे घर ही आ जाना था। सुनते ही भोले बोले कि हम रात में आकर क्या करते माता जी, आपके घर में तो केवल एक रूटिया और कुचिया ही थी। हम खाते ही क्या? सुनते ही माँ बेटी अचंभे में पड़ गईं। अरे! ये तो सगुनिया दमाद हैं। सास ने दामाद का खूब आदर–सत्कार किया। घरवाली ने पतिदेव के खूब पाँव पलोदे। धीरे–धीरे औरतों के द्वारा ये बात सारे गाँव में फैल गई। सारे गाँव के लोग अपनी–अपनी समस्या को लेकर इकट्ठे होने लगे। सारे गाँव में माँ–बेटी का रूतबा जम गया। भोले 'धुआँ में लट्ठ मारते और उनकी ख्याति बढ़ती जाती। एक व्यापारी की गाड़ियों से गन्ना चोरी हो गया था। वह भागता हुआ सगुनिया दामाद (भोले) के

पास पहुँचा। भोले ने आँखें बंद करके शकुन विचारा और कहा कि देखो भाई, तुम्हारा गन्ना पास के घरों में छिपा रखा है। आप लोग घरों में घुस कर गन्ना निकाल लाओ। देखो, मेरा नाम मत लेना। व्यापारी घरों में घुसा और गन्ना निकाल लाया। उसे जान पांडे के ज्ञान पर पूरा–पूरा भरोसा हो गया। व्यापारी ने भोले के चरणों पर एक हजार रूपये चढ़ाकर चरण स्पर्श किए। जो भी उनके पास जाता सो दक्षिणा जरूर चढ़ाता। अब क्या था? माँ–बेटी को खासी आमदनी होने लगी। भोले की घरवाली शाम को रूपये बटोरकर रखती जाती। वह खूब मालामाल हो गई थी। आस पास के गाँव के लोग भी उन जान पांडे के पास जाने लगे। बड़ेगाँव के गदेरे के गधे चार दिन से खोये हुए थे। वह खोजते–खोजते थक गया, गधे नहीं मिल पाये। भोले तो गधों को किले के पास चरता हुआ देख ही आया था। गदेरे ने जान पांडे के चरणों पर सिर रखकर निवेदन किया। भोले पाँच मिनिट तक आँखें बंद किये कुछ बड़बड़ाते रहे और फिर बोले– देखो भाई, तुम्हारे गधे राजा के किले के नीचे चर रहे हैं। जल्दी जाकर ले आइये, नहीं तो वे इधर–उधर हो जायेंगे। गदेरा दौड़कर किले के पास पहुँचा। वहाँ उसे अपने गधे चरते हुए मिल गये। उसने प्रसन्न होकर जान पाडे के चरणों में भेंट चढ़ाई। जान पांडे के ज्योतिष ज्ञान का समाचार राजा के कानों तक पहुँच गया।

एक दिन रानी हार उतारकर नदी में स्नान करने लगीं। सेवा के लिए वहीं खबासिन खड़ी थी। रानी स्नान करके सीधी राजमहल में चलीं गईं। खबासिन ने हार चुराकर पत्थर के नीचे रख दिया। शाम को अचानक रानी को हार का स्मरण हुआ। नदी के घाट पर हार की खोज की गई, किन्तु हार नहीं मिल पाया। राजा को जान पांडे का पता तो पहले से ही था। राजा ने मंत्री के द्वारा यह संदेश भेजा। जैसे भी हो सबेरे तक रानी के हार का पता लगना चाहिए, नही तो तुम्हें फाँसी पर लटका दिया जायेगा। सुनते ही जान पांडे के प्राण सूख गये। माँ–बेटी की उल्टी साँस चलने लगी– अब यहाँ ज्यादा दिन रूकना ठीक नहीं है। राजा के सामने अब कोई पाखण्ड नहीं चल सकता। इस समस्या का समाधान होते ही हम यहाँ से चले जायेंगे। अब तो हमें भगवान ही बचा सकते हैं। अब सबेरे तक हार मिलता कैसे है। जैसे–तैसे दिन निकला। उन्हें अपनी औकात का पता था ही। रात को बिना भोजन किए, खटिया पर लेट गये। चिन्ता के मारे नींद कैसे आ सकती थी। वे पड़े–पड़े रट रहे थे। 'आ जा री निंदिया, तोरी भोर कटें घिचिया।' उधर हार चुराने वाली खबासिन को पता लगा कि चोरी का पता जान पांडे को लगाना है। यह जानकर वह खबासिन घबड़ा रही थी कि अब मैं निश्चित ही पकड़ी जाऊँगी वह रात को जान पांडे के घर पर चक्कर लगा रही थी। उसे जान पांडे की आवाज सुनाई दी 'आ जा री निंदिया तोरी भोर कटें घिचिया।'

सुनते ही खबासिन अधमरी हो गई। उसका नाम निंदिया था। उसने सोचा कि जान पाडे को मेरी चोरी का पता लग गया है। इसी कारण वे मुझे नाम लेकर बुला रहे हैं। वह दौड़कर जान पांडे के घर में घुस गई। उसे देखकर भोले बैठ गए। खबासिन ने उनके चरणों पर सिर रखकर निवेदन किया– अब आप ही मुझे बचा सकते हैं। मैं आपके चरणों में दस हजार रूपये समर्पित कर रही हूँ। आप मेरा नाम ले–लेकर पुकार रहे हैं। मैं ही निंदिया खबासिन हूँ। मैंने ही रानी का हार चुराकर नदी की चौथी सीढ़ी के पत्थर के नीचे रख दिया है। आप मेरा नाम राजा को मत बताना। वे मुझे मरवा डालेंगे। सुनते ही उन्होंने भगवान की कृपा और भाग्य की प्रबलता मानी, नहीं तो सुबह फांसी पर तो लटकना ही था। अब भोले निश्चिन्त होकर बोले– जाव निंदिया आराम करो, मैं तुम्हारा नाम नहीं लूँगा। खबासिन दस हजार सौंपकर अपने घर चली गईं। भोले भी निश्चिन्त होकर सो गये। राजा को जब दस बजे तक कोई सूचना नहीं मिली, तो उन्होंने जान पांडे को दरबार में बुलवाने को सिपाही भेजे। भोले ने सिपाहियों से कहा कि आप लोग महाराज से कहिये कि मुझे बैठने के लिए बग्घी भेजें। मैं दरबार में पहुँचकर उत्तर दे दूँगा। सिपाही चले गये। सिपाहियों की बात सुनकर राजा समझ गये कि लगता है कि जान पांडे को हार मिल गया है। वे बड़ी शान से एक थाल में हार रखकर दरबार की ओर चल दिए। घर के दरवाजे पर राजा की बग्घी देखकर, माँ–बेटी बहुत प्रसन्न थीं। राजा ने खड़े होकर उनका सम्मान किया और पुरस्कार के रूप में थाल भर अशर्फियाँ दी। इसके बाद वस्त्राभूषण देकर उन्हें उसी बग्घी में बैठाकर विदा किया। घर आकर सारी सामग्री पत्नी को सौंपते हुए कहा कि अभी तक तो भगवान लाज बचाते रहे। किसी दिन बहुत बड़ा संकट सिर पर आ सकता है। पैसा तो अपने पास पर्याप्त इकट्ठा हो गया है। इस फरेब और ठगी को छोड़कर कोई दूसरा धंधा करेंगे। यह कहकर भोले अपनी पत्नी को लेकर अपने गाँव चले गए।

सकरे में समदियानों।

बुंदेलखण्ड में समधी से पर्दा करने की प्रथा है। समधिने अपने समधियों के सामने बाहर नहीं निकलती हैं। समधियों को ठहरने के लिए अलग कमरा होता है। समधिन अपने समधी के सामने घूँघट डालकर ही निकल सकती है। समधी और समधिन के विषय में हास–परिहास के अनेक गीत गाये जाते हैं, जिनमें बड़ा ही फूहड़ मजाक होता है। ये गीत प्रायः वैवाहिक अवसरों पर ही गाये जाते हैं। जैसे – *'समधिन तोरी घोड़ी चनन के खेत में।'*

× × ×

समधिन है नई नवेली, समधिन को ले गया बाजे वाला।

'सकरे में समदियानों' का अर्थ है– संकीर्ण स्थल पर पर्दा प्रथा का दुष्परिणाम। घूँघट की इस कुप्रथा के कारण कभी–कभी नव–विवाहित वधुएँ भी बदल जाती हैं। वे अपने पतियों को छोड़कर किसी दूसरे के साथ चली जाती हैं।

वैसे तो समधिने–समधी के सामने बाहर निकलती ही नहीं हैं। यदि पति की अनुपस्थिति और विशेष परिस्थिति में बाहर निकलना ही पड़े तो घूँघट डालकर संकेतों में बात होती है। चाहे भले ही उनमें विकृति आ जाय, किन्तु परंपरा का पालन तो है। अगर विवश होकर समधिन को समधी के सामने निकलना ही पड़ेगा, तो इसको *'पौंदों की ओट या सकरे में समदियानों* कहा जाता है। इस कहावत के परिप्रेक्ष्य में एक लघु कथा कही जाती है, जो इस प्रकार है–

एक दिन समधी अपने समधी के घर गया। दरवाजे पर खड़े होकर आवाज दी– *' अरे कोई है घर पर।'* समधी तो घर पर थे नहीं। समधिन ने समधी की आवाज पहचान ली। उसने पौर में बैठाया। फिर सामने बैठकर खूब बोल–चाल हुआ। स्वागत–सत्कार के बाद समधी चले गए। शाम को जब पति लौटकर आये तो पत्नी ने बताया कि आज दोपहर को समधी साहब आये थे। स्वागत और सत्कार के बाद हमारा और उनका खूब वार्तालाप हुआ। सुनते ही पति ने कहा कि– अरे! तुमने बहुत गलत किया। अपने यहाँ समधी से पर्दा किया जाता है। उनसे बातचीत करने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता।

अगली बार जब समधी आये तो उन्होंने दरवाजे पर खड़े होकर आवाज लगाई– तो समधिन ने दरवाजे की ओट में खड़े होकर और साँकल खनखना कर अपनी उपस्थिति जताई। 'समधी जी हैं घर में? समधी ने पूछा। समधिन ने समधी की तरफ पीठ की और दरवाजे के बाहर जाने का संकेत किया।

अच्छा–अच्छा बाहर गये हैं? लेकिन कहाँ गये हैं? समधिन ने खड़े–खड़े मूत की धारा से एक लकीर सी खींची और उस लकीर को उछलकर पार कर गई।

अच्छा–अच्छा नदी के पार गये हैं। यह कहकर समधी जी हँसते हुए चले गये। ये था समदियाने का उदाहरण और तभी से यह सकरे में समदियानें की कहावत प्रचलित हो गई। इन अश्लील हरकतों से तो समधी और समधिन का वार्तालाप ही अच्छा है। ये पर्दा प्रथा आज भी गाँवों में संचालित है। नगरों में यह प्रथा समाप्त होती जा रही है।

भुस में आगी डार, जमालों दूर खड़ी।

संसार में कुछ ऐसे दुष्प्रवृत्ति के लोग होते हैं, जो एक दूसरे को भिड़ाकर दूर खड़े–खड़े मजा लेते हैं। ये उनके लिए मनोरंजन का एक मात्र साधन है। कुछ लोगों की खुराक ही यही है। जब तक एक–दूसरे को लड़ा नहीं लिया, तब तक उनका भोजन नहीं पचता है। हिन्दी और संस्कृत के कहानीकारों ने ऐसी अनेक कहानियाँ लिखी हैं, जिनमें इस विचार–धारा के लोगों की राम कहानी है। पं. विष्णु शर्मा कृत अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कथा ग्रंथ 'पंचतंत्र' के 'सुहृद भेद' में इस प्रकार की कहानियाँ भरी पड़ी हैं। कर्कत और दमनक नाम के श्रृगालों ने ऐसा कुकृत्य किया था। त्रेता युग के नारद और चंदेलकाल के 'माहिल' इस दुष्कार्य में अग्रणी थे। बुन्देलखण्ड में इस प्रकार के लोगों पर आधारित अनेक कहावतें कहीं जाती हैं, जैसे–

दोई पलीतन दे दो तेल, तुम नाचो हम देखें खेल।

× × ×

बनी न बिगारी, तौ बुंदेला काय के।

बाबा तुलसी भी मानस में कह गये हैं–*देख न सकहिं पराइ विभूती*

एक संस्कृत के श्लोक में निंदक को निकृष्ट कोटि का माना गया है–

काकः पक्षिसु चाण्डालः पशुसु गर्दभः।
नराणां कोऽपि चांण्डालः सर्वेषु निंदकः।

ऐसे लोगों को किसी के बनते हुए काम को बिगाड़नें में बड़ा मजा आता है। यदि इनको काम बिगाडूमल कहा जाय तो उचित ही होगा। इसी प्रकार के बिगाडूमल के सम्बन्ध में एक लघुकथा कही जाती है। बिगाडूमल का प्रमुख काम किसी का बना हुआ काम बिगाड़ना ही था। वे हमेशा भजन में विघ्न पैदा करते थे। वे लोगों के काम बिगाड़ने की ऐसी–ऐसी युक्तियाँ सोचते थे कि लोगों को आश्चर्य होता था। उनकी बुद्धि सर्जनात्मक नहीं ध्वंसात्मक थी। उन्हें किसी की चढ़ती बेल उतारने में आत्मिक सुख मिलता था। जब तक किसी का बुरा नहीं कर लिया, तब तक उनका अन्न हजम नहीं होता था। उनका केवल यही काम था। किसी की मित्रता भंग करने, निश्चित शादी को मिटाने, किसी की प्रगति में बाधा बनने के लिए वे इधर–उधर भटकते ही रहते थे। वे दस बारातें लौटा चुके और अनेक बारातों में जूता–बाजी करवा चुके थे। लोग अपनी बारात इनकी आँखें बचाकर ले जाते थे। एक दिन उनके भतीजे की बारात जा रही थी।

चाचा को तो बुलाया ही जाएगा, किन्तु उसके भाई को डर था कि कहीं ये दुष्ट लड़के की बारात न लौटवा दे। फिर भी वे मन मारकर उसे न्योता देने पहुँचे। प्रसन्न होकर बिगाड़ूमल बोले– भैया, तुमने खबर भले नहीं दी, मुझे पता चल गया था। मैं तैयार ही बैठा हूँ। चलो, वे थैला उठाकर खड़े हो गये। देखो कक्का लोगों ने हाथ जोड़कर निवेदन किया–भतीजे की शादी में कोई विघ्न मत डालना।

अरे! लोगों ने मुझे बेकार बदनाम किया है। हाँ इतना जरूर है– *'सांसी कयें मौसी कौ काजर।'*

देखो कक्का, आप सांची–झूठी कुछ मत कहना। बिगाड़ूमल बोले–पूरी बारात में अगर मेरे मुँह से एक शब्द भी निकल जाये, तो जो चोर की सजा, सो मेरी।

लोग आश्वस्त हुए और बिगाड़ूमल बारात में चले गये। बारात की कच्ची पंगत हो रही थी। दालान में बैठी रोटी बेलने वाली औरतें, एक–एक आदमी को देखती, उनके नाम गुणों का बखान करती हुईं गारियाँ गा रही थीं। एक औरत को पत्तल के पास दोना नहीं दिखा, तो वह गा उठी –

काय मोरे समधी ऊसई आ गये।
दौना काय न ल्आये?
जा कड़ी बगर गई, भग जा भड़ुवा उतै खड़ो रओ।

बिगाड़ूमल ने धीरे से बगल में रखे दोने की ओर इशारा किया। उस औरत को बिगाड़ूमल में अधिक रस आ रहा था। वह फिर गा उठी–

दौना जो ल्आये ते समधी, पातर काय न ल्आये।
जौ पानी बगर गओ।

बिगाड़ूमल ने धीरे से दोना उठाया, उसमें रखे मठा में अपना गुप्तांग डुबाया फिर दोना उसी जगह पर रखकर चुपचाप बैठ गये। इसे सिर्फ उस औरत ने देखा और वह चकित होकर रह गई। परस पूरी होने के बाद लड़की के पिता ने खड़े होकर सभी से हाथ जोड़कर निवेदन किया– *'तो मालिक होंन दो लक्ष्मी नारायन की'।* लोग कौर तोड़ने ही वाले थे तो बिगाड़ूमल ने वधू पक्ष के एक आदमी को बुलाकर कहा कि– भैया, इस दोना को उठाकर बाहर फेंक आओ।

क्यों उस आदमी ने पूछा। देखो भैया! मैंने न बोलने की कसम खाई है, आप तो दोना अलग कर दीजिए।

लेकिन क्यों कर दें क्या हमने इसमें जहर मिलाया है? देखो भैया! मेरा हाथ जोड़कर निवेदन है कि आप दोना हटा दें।

वर पक्ष के लोग भी चिल्ला पड़े कि जब वे इतनी बार कह चुके हैं कि दोना अलग कर दो तो आप कर क्यों नहीं देते, इसमें आपको क्या परेशानी है?

वधू पक्ष के लोग भी चिल्ला पड़े कि आखिर अलग क्यों कर दें, आप कारण बताइये।

देखा भैया! मैं तो बोल नहीं सकता, आप चाहें तो उन बाई से पूछ लें। बिगाड़ूमल ने उस औरत की ओर इशारा किया, जिसने उनके इस कुकृत्य को देखा था।

ये मोरे भगवान! वा बात हम मौसे कैसें बतायें? यह कहकर वह वहाँ से भाग गई। इस मसले को लेकर दोनों पक्षों में भयंकर झगड़ा हुआ। बिगाड़ूमल दूर खड़े रहे। बारात बिना भोजन किए उठकर चली गई। करामात बिगाड़ूमल की। वे बोले भी नहीं और सगे भतीजे की बारात लौटा दी। तभी से ये कहावत चल पड़ी है। कहा भी गया है– *'नीम न मीठे होय खाव गुर घी सें'।*

सत्तू–मन भत्तू।

आदिकाल से चंचल और बदमाश लोग भोले लोगों को ठगते आ रहे हैं। इस प्रकार की अनेक लघु कथाएँ ग्राम के वयोवृद्ध लोगों के मुख से सुनने को मिलती रहती हैं, जिनमें इस प्रकार की ठगी का चित्रण है। बुंदेलखण्ड में एक 'सत्तूमन भत्तू' की कहावत कही जाती है, जिसके तारतम्य में एक लघुकथा कही जाती है–

दो ग्रामीणजन तीर्थ यात्रा के लिए जा रहे थे। उन दिनों मार्ग में नाश्ता और भोजन की समुचित व्यवस्था नहीं थी। तीर्थयात्री यात्रा करते समय एक थैले में लोटा–डोर, पूड़ी, पँजीरी और सत्तू लेकर चलते थे। कुछ लोग लाई, धान के फूल और भुने हुए चने तथा गुड़ ले जाते थे। वे दोनों यात्री एक पोटली में सत्तू और गुड़ दूसरी पोटली में धान बाँधे थे। उन दोनों यात्रियों में एक बहुत ही सीधा–सादा और भोला–भाला व्यक्ति था। दूसरा चतुर चालाक और धूर्त था। चलते–चलते मार्ग में उन्हें भूख लग आई। पोटली उनके पास थी केवल दो। एक में सत्तू और एक में धान थी। अब निर्णय होना था कि कौन सत्तू ले और कौन धान? वह चालाक यात्री विश्लेषण करने लगा– देखो भाई! सत्तू के साथ अनेक झंझटें हैं –

सत्तू–मन भत्तू,
जब पीसो, जब घोरौ
तब खाओ।'
और धान बिचारी,
चट्ट कूटी, पट्ट खाई।

अब आप ही बताइये? आपको क्या लेना है? भोला यात्री बोला तो आप मुझे धान दे दीजिए।

चंचल यात्री ने सत्तू की पोटली ले ली और धान की पोटली उसे दे दी। अब क्या था? जब भूख लगती तो सत्तू वाला मस्ती से कटोरी में गुड़ के साथ सत्तू घोलकर खा लेता, किन्तु धान वाला धान लेकर जगह–जगह भटककर, कहीं धान कुटवाता, कहीं चावल निकलवाता तब कहीं चावल पकाकर दिन भर में एक ही बार खा पाता। वह बेचारा परेशान हो–होकर बीच रास्ते से ही घर लौट आया, और दूसरा सत्तू के बल पर यात्रा पूरी करके ही घर लौटा। इस प्रकार की ठगी की घटनाएँ आरंभ से ही घटित हो रही हैं और आज तो इनकी संख्या अधिक है।

इसी प्रकार का एक चुटकुला और कहा जाता है। एक भोले आदमी के सामने विकल्प रखा गया। 'क्यों भाई– तुम मुसर–मुसर हर हांकौ कै मुश्किल काम बरातें जैव।' विकल्प की प्रस्तुति से भोले लोगों को ठग लिया जाता है। उसे लगा कि हल हाँकना सहज है और बारात में जाना कठिन है। यह सोचकर उसने हल चलाना स्वीकार कर लिया।

हगा खौं हगई की सूद।

इस कहावत के तारतम्य में एक रोचक कथा कही जाती है, जो इस प्रकार है–

बड़े गाँव के जागीरदार ठाकुर साहब बड़े सबेरे उठकर नदी के किनारे दिशा–मैदान के लिए गये और धुंधलके में एक बेरी के पेड़ के नीचे डट गये। निवृत्त होते–होते उजेला हो आया। रात में खूब आँधी चली थी, जिससे बेरी के पके–पके बेर नीचे बिछ गये थे। अचानक ठाकुर साहब की नजर उन पके बेरों पर पड़ी, जिससे उनके मुँह में पानी आ गया। अभी वे प्रक्षालन तो कर नहीं पाये थे। फिर भी वे अपने को रोक नहीं सके। वे शौच करते गये और बीच–बीच में अपने आस–पास पड़े हुए पके बेरों का आनंद लेते गये। इसी बीच में एक बेड़िनी (नर्तकी) उधर से जा निकली। ठाकुर साहब

ने उसे जाते हुए देख लिया। उन्होंने सोचा कि इस बेड़िनी ने मुझे बेर खाते देख लिया। यह सोचकर वे सहम गये। उसने देखा हो चाहे न देखा हो, किन्तु उनके मन में भ्रम बना रहा। वे जल्दी से उठ खड़े हुए और प्रक्षालन के लिए नदी के नीचे चले गये। प्रक्षालन कर अपने घर चले आये, किन्तु मन में पछतावा बना रहा।

इस घटना के कुछ दिन बाद गाँव की चौपाल पर राई हुई और वही बेड़िनी नाचने को आई। ठाकुर साहब भी राई देखने गये। चौपाल पर पूरा गाँव इकठ्ठा था और वहीं कुर्सी पर ठाकुर साहब डटे थे। गाँव के जागीरदार तो थे ही वे। हालाँकि बेड़िनी ने उन्हें बेर खाते देखा भी नहीं था, किन्तु ठाकुर साहब को भ्रम ही था। बेड़िनी नाचती जा रही थी और उसकी नजर जागीरदार साहब पर थी। वह फिरकिया खा–खाकर ठाकुर साहब के पास आ–आकर कहती–*'काय बलम तुमाई बेई बतियां'* सुनते ही ठाकुर साहब पाँच का नोट निकाल कर उसे थमा देते। वह फिर जाकर नाचने लगती है। वह फिर पन्द्रह मिनिट बाद नाचती हुई उन्हीं के पास जाकर उसी पंक्ति को दुहराती है। ठाकुर साहब फिर उसे पाँच का नोट पकड़ा देते हैं। इस प्रकार वह बार–बार उनके पास पहुँचती और वे हर बार पाँच का नोट देते जाते। नोट देते–देते उनकी जेब खाली हो गई। जब बेड़िनी फिर उनके पास आयी तो वे झुंझलाकर चिल्ला पड़े– मैं कहाँ तक तुझे रूपया देता रहूँ। तुझे जो कहना हो वह कह दे। हाँ मैने हगे बेर खाये थे। सुनते ही सब हँस पड़े और उसी समय से यह कहावत चल पड़ी।

लाल बुझक्कड़ बूझकैं, और न बूझै कोय।
सड्म गड्डा दै करो, तन–तन सब खौं होय।

गाँवों में कुछ ऐसे चरित्रनायक हैं जिनसे ग्रामीण जनता मार्ग दर्शन प्राप्त करती है। वे हर समस्या का समाधान करने को तत्पर रहते हैं। किसी आदमी के सामने कोई भी समस्या होती, वह दौड़कर लाल–बुझक्कड़ (सर्वज्ञ) के पास पहुँच जाता। वह तुरंत ही हर प्रकार की समस्या का समाधान कर देते। ऐसे लोगों को गाँवों में लाल बुझक्कड़, जान पांडे, ऊँट कटारे और जनवा कहा जाता है। हर नगर और हर गाँव में इस प्रकार के लाल बुझक्कड़ हुआ करते हैं जिनसे सारे समाज का काम चलता है।

एक बार गाँव के बाहर गली की धूल में चक्के के पाट के समान गोला और बड़े–बड़े पद–चिन्ह दिखाई दिये, जिन्हें देखकर गाँव के लोग अचंभे में पड़ गये। सोचने लगे कि यहाँ कौन पशु–पक्षी, जिन्न या भूत निकला होगा, जिसके इतने बड़े चरण चिन्ह हैं। वह भला कितना बड़ा होगा। गाँव में कोई बहुत बड़ा दानव तो नहीं

घुस आया है? पूरे गाँव में सनसनी फैल गई, जिसने सुना, वही सारा काम छोड़कर उन्हें देख–देखकर चकित होता रहा। ग्रामवासियों के मन में भारी भय व्याप्त था। लगता है गाँव में कोई भयंकर भूत घुस आया है। डर कर लोग अपने किवाड़ बंद कर लेते हैं। कोई घर से बाहर नहीं निकल रहा था। डर के कारण सारे काम–काज ठप हो गये। गाँव पर घोर संकट आ गया। गाँव के जमींदार साहब दौड़कर सीधे लाल बुझक्कड़ के समीप पहुँचकर अपनी ये गंभीर समस्या रखी। लाल बुझक्कड़ ने ध्यान–पूर्वक उन पद चिन्हों को देखा और बड़ी देर तक चिंतन मनन करते रहे। अंत में उन्होंने निर्णय किया कि–

लाल बुझक्कड़ बूझकैं, और न बूझै कोय।
पाँव में चक्की बाँध कैं, हिरना कूदो सोय।

सारे गाँव की शंका का समाधान तुरन्त हो गया और गाँव के सारे काम पूर्ववत् चलने लगे। ये थी लाल बुझक्कड़ की बौद्धिक क्षमता और निर्णय पटुता। जबकि गांव के बाहर से हाथी निकला था और वे उसी हाथी के पद चिन्ह थे, जिन्हें देखकर लोग भयभीत थे। लाल बुझक्कड़ का निर्णय कितना हास्यास्पद और मिथ्या भरा था। वे केवल पाखण्डी और छद्मवेशी विद्वान ही थे।

एक बार नगर में भारी अकाल पड़ गया। जनता भूखों मरने लगी। नगर में हा–हा कार मच गया। जनता एक दूसरे को लूट–लूट कर पेट भरने लगी। राजा बहुत चिन्तित थे। ज्योतिषियों से उपाय पूछा गया। ज्योतिषियों ने राजा से कहा कि यदि राज्य की तरफ से एक बार नगर की जनता को सामूहिक भोज दे दिया जाय तो अकाल का संकट दूर हो सकता है। राजा ने नगर भोज के लिए सौ बोरा चावल का भात तैयार कराकर रख लिया। चावल का पहाड़ की तरह ढेर लग गया। जनता भोजन करने आने ही वाली थी। इतने में एक चील उड़ती हुई आई और चावलों के ढेर पर वीट कर गई, जिससे सारा ढेर अशुद्ध हो गया। अब राजा के सामने बहुत बड़ी समस्या आ गई। इस अकाल के समय पर इतना चावल अब कहाँ से लायें? इस समस्या का समाधान करने के लिए राजा ने लाल बुझक्कड़ के पास जाकर अपनी समस्या बताई। लाल बुझक्कड़ ने सोच समझकर कहा –

लाल बुझक्कड़ बूझकैं, और न बूझै कोय।
सड्म गड्ड़ा दै करों, तन–तन सबखों होय।

उनके निर्देशानुसार मिला–जुलाकर सबको भोजन करा दिए गए। उनके निर्णय

बड़े विचित्र हुआ करते थे। इसमें उनकी कोई विशेष चतुराई दिखाई नहीं देती। उनके सारे फैसले मूर्खतापूर्ण हुआ करते थे।

लाबर बड़ों कैं दौंदा।

जब कभी कोई असत्य बात सामने आती है तो प्रायः लोग इस कहावत का प्रयोग करते हैं। कभी–कभी कोई चालाक आदमी उल्टे–सीधे तर्क देकर मिथ्या को सत्य के रूप में बदलने का प्रयास करते हैं। उस समय इस कहावत का वास्तविक रूप सामनें आ जाता है। इसके संबंध में एक छोटी सी कहानी कही जाती है –

एक नगर में एक लबरा और एक दौंदा रहता था। लबरा का अर्थ है– झूठ बोलने बोला। और दौंदा का अर्थ है– झूठ पर अडिग रहने वाला। उन दोनों में होड़ लगी रहती थी कि हम दोनों में कौन बड़ा है? इसलिए वे दोनों अपनी–अपनी चलाते रहते थे।

एक दिन लबरा बोला कि मेरे पिता के पास इतने घोड़े थे कि इस पूरी पृथ्वी पर बँध नहीं पाते थे। दौंदा बोला कि मेरे पिता जी के पास इतना लंबा बाँस था, इतना लंबा कि वह बादल में छेद करके पानी बरसा देता था। तब लबरा शंका करता कि वे इतना लम्बा बांस कहाँ रखते थे। तब तुरंत दौंदा उत्तर देता कि तुम्हारी बाप की घुड़साल में। लबरा एक गाय खरीदकर ला रहा था। वह झूठा तो था ही। उसने सबको बताया कि यह गाय नहीं साक्षात् कामधेनु है। यह केवल दूध ही नहीं वरदान भी देती है। रास्ते में दौंदा मिल गया, उसने कहा– अरे! ये पाँच–पाँव की गाय कहाँ से खरीद लाये? पाँच–पाँव की गाय, लबरा ने कहा– लगता है तुम्हारी बुद्धि की तरह तुम्हारी आँखें भी कमजोर हो गई हैं। भाई, मुझे जो दिखाई दे रहा है, सो कह रहा हूँ। अब रही अविश्वास की बात सो आप कल पंचायत बैठा लीजिये जो फैसला होगा, सो मुझे मंजूर है। अगर तुम जीते तो तुम्हें मैं एक हजार रूपये दूँगा, नहीं तो एक हजार रूपये तुम्हें देने पड़ेंगे।

लबरा प्रसन्न हो गया। वह सोचता था कि इस शर्त को तो मैं ही जीतूँगा और भरी सभा में दौंदा को लज्जित कर दूँगा। दौंदा की पत्नी ने सुना तो वह पति से बहुत नाराज हुई। अगर फैसला तुम्हारे पक्ष में नहीं हुआ तो बेकार में अपने एक हजार रूपये चले जायेंगे। दौंदा को तो अपनी कला पर पूरा भरोसा था। उसने कहा कि फैसला कुछ भी हो, मैं मानूँ तब न। जब तक फैसला मेरे पक्ष में नहीं होगा, सो मैं दौंदता रहूँगा।

उन दोनों में छोटे–बड़े की होड़ थी और इसका फैसला पंचायत को करना था। पंचों ने कहा कि तुम दोनों एक दूसरे से प्रश्न पूछ लो, जो उत्तर नहीं दे पायेगा, वही हारा माना जायेगा। दौंदा ने लबरा से पूछना शुरू किया, तुम किस पर खड़े हो? पृथ्वी पर।

पृथ्वी किस पर खड़ी है? शेषनाग पर।

शेषनाग काहे पर? लबरा उत्तर न दे पाया और हार गया।

अब दौंदा की बारी आई। दौंदा एक गधे पर टोकनी रखकर पंचायत में आया। टोकनी में साँप था।

लबरा ने पूछा– तुम किस पर खड़े हो ? पृथ्वी पर।
पृथ्वी किस पर खड़ी है ? शेषनाग पर।
शेषनाग काहे पर?
टोकनी पर।
टोकनी काहे पर?
गधे पर।
गधा काहे पर?
पथ्वी पर।
पृथ्वी किस पर खड़ी है? शेषनाग पर।

इस गोल माल प्रश्नों के कारण लबरा हार गया और दौंदा जीत गया। प्रायः हर क्षेत्र में दौंदा की ही जीत होती है।

मुहावरे

मुहावरे अपना लक्षणा या व्यंजना मूलक अर्थ तो रखते हैं, किन्तु इनका अर्थ पूर्ण रूप से तभी स्पष्ट होता है, जब इनका वाक्यों में प्रयोग किया जाता है। ये कहावतों की तरह अपना स्वतंत्र अर्थ नहीं रखते। मुहावरे शरीर के विभिन्न अंगों के आधार पर निर्मित हुए हैं। जैसे– आँख, कान, नाक, सिर, हाथ, पाँव आदि पर अधिकांश मुहावरे तैयार हुए हैं।

अधिकांश मुहावरे संज्ञा, क्रिया, विशेषण के स्थानापन्न प्रयोग होते हैं। अधिकांश मुहावरे शरीर के विभिन्न अंगों पर आधारित होते हैं।

अक्कल को अजीरन होबौ।
कम अक्ल वाले व्यक्ति को अधिक अकलमंद होने का भ्रम होना।

अक्कल खौं लट्ठ लयें फिरबौ।
सदैव मूर्खतापूर्ण कार्य करना। मानो अक्ल के पीछे लाठी लिए हुए घूमते हैं।

अक्कल चरबे जाबौ।
बुद्धि भ्रष्ट करना। कार्य को विचार–पूर्वक नहीं करना।

अक्कल सठयाबौ।
साठ वर्ष की आयु होते ही बुद्धि में कुछ मंदता आ जाती है। स्मरण शक्ति और विवेक कुछ क्षीण होने लगता है।

अँसुआ ढारबौ।
तीव्र वेदना के कारण आँसुओं का निकल पड़ना।

आँसू पोंछना।
धैर्य प्रदान करना, संवेदना व्यक्त करना।

आँख उठाबौ।
बुरी नजर से देखना।

आँख खुलबौ।
नींद से जाग उठना।

आँख कौ काजर चुराबौ।
देखते–देखते बड़ी ही सफाई से चोरी कर लेना।

आँखन कौ सनेव।
आमने सामने होने वाला लिहाज।

आँखन पै चढ़बौ।
किसी व्यक्ति अथवा वस्तु का सदैव ध्यान रखना।

आँखन में खटकबौ।
किसी की प्रगति देखकर ईर्ष्या करना।

आँखन में झूलबौ।
किसी मार्मिक दृश्य अथवा किसी प्रिय व्यक्ति का बार–बार स्मरण आना।

आँखन में उतरबो।
नजरों से गिरना अथवा उपेक्षित समझना।

आँख लगबौ।
नींद लग जाना।

आँखें जुड़ाबौ।
किसी प्रिय व्यक्ति से मिलकर आनंद प्राप्त करना।

आँखें दिखाबौ।
क्रोधित होकर किसी को धमकाना।

आँखें खुलबौ।
वास्तविकता का ज्ञान होना, भ्रम दूर हो जाना।

आँखें नटेरबौ।
आँखें फाड़–फाड़कर देखना।

आँखें मुदबौ।
मृत्यु हो जाना।

आँखें मूँदबौ।
जान बूझकर किसी व्यक्ति अथवा वस्तु को अनदेखा करना।

आँखें लड़ाबौ।
आँखों ही आँखों में इशारों से बात करना।

आँखें सैंकबौ
सौन्दर्य को देखकर सुख प्राप्त करना।

कान पकरबौ।
अपनी भूल स्वीकार करना।

कान भरबौ।
उल्टा–सीधा कहकर किसी के विरुद्ध भड़का देना।

कान फूंकबौ।
गुरू के द्वारा गुरू मंत्र दिया जाना।

कान मौरयाबौ।
अनसुनी करना।

कान पै जूँ न रेंगना।
सुनी–अनसुनी करना।

काँय उतारबौ।
उसी के मुँह पर उसकी सारी गलतियाँ बता देना। अथवा किसी व्यक्ति के सामने ही पोल खोलना।

कान न देना।
किसी बात पर ध्यान न देना।

कानों कान खबर।
कोई बात सुन–सुन कर दूर–दूर तक फैल जाना।

गला भर आना।
भावावेश में बहना।

गला रूँध जाना।
बोलकर थक जाना।

गले मिलना।
प्रेम पूर्वक मिलना।

गले की फाँस।
महान व्याधि का कारण।

गलबैयाँ डालना।
गले में बाहें डालकर प्रेम पूर्ण मिलन।

गरे में नौ देबौ।
किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए दुराग्रह करना।

गरे में बंदबौ।
किसी अनचाहे व्यक्ति से अनावश्यक सम्बंध बनाना।

दाँत काड़बौ।
अत्यंत दीनता प्रदर्शित करना अथवा व्यर्थ में हँसना।

दाँत गड़ाबौ।
किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए नीयत बिगाड़ना।

दाँत तिनूँका दाबबौ।
आत्म समर्पण करना।

दाँत निपोरबौ।
चापलूसी करना। बिना सोचे–समझे किसी की बात का समर्थन करना।

नकुअन पै रूई बरबौ।
हमेशा क्रोधित बने रहना।

नाक बचाना।
इज्जत बचाने का प्रयास करना।

नाक नकेल डारबौ।
स्थाई रूप से नियंत्रित रखना।

नाक कटाबौ।
हर तरह से बदनाम होना।

नाकन चना चबाबौ।
कोई कठोर और दुष्कर प्रयत्न करना।

नाक में दम करबौ।
किसी को अधिक परेशान करना।

अगवान होबौ।
किसी कार्य के करने में अग्रणी होना।

अड़ाई लेंड़ी कौ कोड़ौ।
अपनी पृथक अस्मिता बनाने का प्रयास करना।

डेढ़ चावल की खिचड़ी।
अपनी अलग महत्ता प्रदर्शित करना।

अण्ड कौ मिरदंग।
असंभव को संभव करने का प्रयास।

अँदयारे में लुड़िया घालबौ।
अंदाजिया आरोप लगाना।

अन्न कौ कुन्न करबौ।
अच्छे अन्न को बुरी तरह से पकाना।

दाना पानी उठबौ।
आजीविका का साधन मिट जाना।

अफरे की ब्याई।
थोड़ा सा शौक के लिए खा लेना।

अब्बे–तब्बे करना।
अपमानजनक ढंग से बातचीत करना।

अभर काड़बौ।
मन में छिपी हुई बात को निकाल लेना।

अरया तुरया कैं बोलबौ।
अपमानजनक ढंग से बातचीत करना।

आज मरे कल दूसरों दिन।
वृद्ध के मरने के बाद नवजीवन प्राप्त हो जाता है।

आट काट जोरबौ।
इधर–उधर के लोगों को इकट्ठा करना।

आँदू चढ़बौ।
धन का घमण्ड हो जाना।

आयाली बायली बकबौ।
अचेतावस्था में प्रलाप करना।

उड़त चिरइया परखबौ।
अनुभवी और चतुर व्यक्ति।

उत्त भूलबौ।
किंकर्त्तव्यविमूढ होना।

उल्टी गंगा बहाबौ।
अमर्यादित कार्य करना।

कछवारे में बगार लगाबौ।
सारे समूह पर आरोप।

कटी उँगरिया पै नईं मूँतबौ।
कभी किसी के काम नहीं आना।

कण्डा कड़बौ।
मर जाना।

कतरब्योंत करना।
किसी वस्तु में कमियाँ निकालना।

कथरी आढ़ कैं घी पीबौ।
देखने में रहन–सहन बहुत सहज, किन्तु रहन रईसों जैसी।

करिया अच्छर भैंस बिरोबर।
अपढ़ और मूर्ख।

करिया मौं करो।
नजरों से दूर हटाना।

करेजे पै पथरा धरबौ।
अत्यंत कठोर हृदय करना।

करेजे पै साँप लोटबौ।
ईर्ष्या की अनुभूति।

कलई खोलबौ।
पोल खोलना।

कुठिया में गुर फोरबौ।
एकांत में किसी समस्या का हल खोजना।

कुतका सें मारबौ।
परवाह न करना।

कुलाबे मिलाबौ।
संदर्भों को जोड़ना।

कूँड़ में कूँड़ मिलाना।
किसी की हाँ में हाँ मिलाना।

कोढ़ में खाज होना।
एक समस्या के साथ दूसरी समस्या खड़ी हो जाना या एक साथ कई समस्याओं का होना।

गदन खौं मुड़गरे बाँधबौ।
अपात्रों को पात्र का स्थान देना।

गुर भरो हँसिया।
ऐसी परिस्थिति निर्मित कर देना कि जिसे न छोड़ा जा सके और न कोई हल निकल सके।

गोबर गनेस।
निष्क्रिय व्यक्ति जिससे किसी काम की आशा न हो।

गाँठ बाँदबौ।
किसी बात का निश्चय करना।

गाल बजाबौ।
व्यर्थ की बकवास करना।

खाबे की खदान।
खाना खाने के लिए सदैव तत्पर रहना।

खुपड़िया खाबौ।
अनावश्यक रूप से किसी को परेशान करना।

खौं गाड़ैं कौरा माँगैं।
संपन्न होते हुए भी विपन्नता प्रदर्शित करना।

खड़े तोड़े की।
बेलिहाज और अमर्यादित बातें।

खट्टौ खाबौ।
दुष्परिणाम भोगना।

गाड़े सैं पाड़ौ बाँदबौ।
असंगत कार्य करने के लिए तत्पर रहना।

घर के न घाट के।
द्विविधा के कारण कहीं भी स्थान प्राप्त न होना।

गुर्गन की अथाई।
बदमाशों का प्रमुख स्थान।

गुआ चुरत की हँडिया फूटबौ।
मौज–मस्ती का अड्डा समाप्त होना।

घाई में घाई डारबौ।
किसी प्रश्न के उत्तर के साथ दूसरा प्रश्न प्रस्तुत करना।

चीकनौ घाट उतरबौ।
किसी समस्या का धैर्यपूर्वक समाधान करना।

चील कौ मूत लाना।
अलभ्य वस्तु को प्राप्त करने का प्रयास।

चीं बोलबौ।
पराजय स्वीकार करना।

चूले को लुअर बताना।
जानकार के समक्ष अपरिपक्व ज्ञान प्रस्तुत करना।

चैधी में आँखें लगबौ।
आने वाली व्याधियों और समस्याओं से बेखबर रहना।

चैंन छानबौ।
निश्चिंत होकर सुखों का उपभोग करना।

रैं खोदबौ।
किसी को नष्ट करने के लिए तत्पर रहना।

छुकर–छुकर करबौ।
बचकानी हरकतें प्रदर्शित करना, अथवा किसी काम में आगे आगे होना।

जी जुड़ाबौ।
आत्मिक शांति प्राप्त होना।

उठाई जीव तरूआ सें मारी।
बिना सोचे समझे वार्तालाप करना।

टटकी सुनाबौ।
खरी–खोटी सुना देना।

टिल्ले टारबौ।
किसी काम के करने का बहाना बनाते रहना।

टुड़ी तरे की बातें।
अन्तर्मन के छिपे रहस्य को उजागर करना।

ठन–ठन गोपाल।
जिनके पास दिखावे के अतिरिक्त कुछ न हो।

टका–टका सी कैदेबौ।
खरी–खरी कह देना।

डंके की चोट।
साफ–साफ बेहिचक कह देना।

ढपोल संक होना।
केवल मुँह से कहते रहना और करना कुछ भी नहीं।

डेरे दाँयनें होना।
बहाने बना–बना कर काम से बचते रहना।

तरवा चाटते रहना।
हमेशा दूसरों की चापलूसी करते रहना।

तवा पै पौंद धरबौ।
छोटी–छोटी बात पर उत्तेजित होना।

तातीं–तातीं उचेलबौ।
किसी भी काम में जल्दबाजी दिखाना, धैर्य और विवेक से काम न लेना।

तिरप–तिरप करबौ।
अत्यधिक चंचलता प्रदर्शित करना।

तुरइयाँ सी छोंकबौ।
हर कार्य में जल्दबाजी दिखाना।

ताव खाबौ।
गुस्से में आ–आ जाना।

तुर्की छाँटबौ।
अस्वाभाविक भाषा का प्रयोग करना।

धन्नों देबौ।
किसी माँग की पूर्ति के लिए हठ करना।

दूद करूला करबौ।
हर प्रकार से सुखी और सम्पन्न।

दार भात में मूसरचंद।
किसी कार्य में निष्कारण हस्तक्षेप करना।

दच्चों देना।
किसी को अनावश्यक आर्थिक हानि पहुँचाना।

दूद कौ दूद पानी कौ पानी।
समुचित और निष्पक्ष न्याय करना।

दो घोड़े असवार रहना।
स्वार्थ सिद्धि के लिए दुहरी और वैकल्पिक व्यवस्था रखना।

धरम धक्का लगाना।
अच्छे कार्य में समुचित सहयोग करना।

धरती आसमान एक करना।
किसी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए सारे प्रयत्न करना।

धनी मरे कौ टिया।
ऐसा वादा करना जिसका पूर्ण होना कठिन है।

दाँदर दैबों।
तर्कहीन निरर्थक बहस करते हुए क्रोधित करते रहना।

धजी कौ साँप बनाना।
छोटी सी बात को बढ़ा–चढ़ा कर कहना।

निमुआँ नौन चुखाना।
धोखा देकर किसी को ठगते रहना।

निहू परबौ।
विनम्र होकर हीनता प्रदर्शित करना।

पजींरी फाँकबौ।
बिना कुछ करे मौज–मस्ती करते रहना।

पन पना कपना।
भय की आशंका से दिल दहल जाना।

पिटिया सुद्ध होकें जुटबौ।
पूर्ण मनोयोग से किसी कार्य में जुट जाना।

पेट में बात न पचबौ।
किसी गोपनीय बात को गुप्त न रख पाना।

वारे कैसों ब्याव।
बाधाहीन कार्य सम्पन्न होना।

बीच में कीच मचाबौ।
किसी कार्य में अनावश्यक हस्तक्षेप करना।

बादर में थिंगरा लगाबौ।
असंभव कार्य को संभव करके दिखा देना।

बुई कैसों बैल जोतबौ।
किसी दूसरे की वस्तु को निर्दयतापूर्वक उपयोग करना।

फट्टा लौटबौ।
सारा व्यवसाय चौपट हो जाना।

पेटैं टूटबौ।
भूखा रह जाना।

पैरे–पैरें फिरबौ।
किसी कार्य में आगे आगे रहना।

फूँद में हुन कड़ गई।
मनोनुकूल कार्य सम्पन्न होना।

बारी पै हुन हांत बौड़ाबौ।
अमर्यादित कार्य करना।

बार न बाँकौ होबौ।
जरा भी शारीरिक हानि न होना।

बच्छन के दाऊ।
बहुत ही चंचल और चालाक।

बगला भगत।
कपटी और पापी, सुंदर वेशधारी।

बर्रन के छिदनाँ में हांत डारबौ।
जानबूझ कर आपत्ति मोल लेना।

बातें मठोलबौ।
मीठी–मीठी रोचक बातें करना।

पेट सैं टूटबौ।
अपर्याप्त भोजन मिलने से शरीर कमजोर हो जाना।

बीड़ा उठाबौ।
किसी कार्य को करने का संकल्प लेना।

बीरवल की खिचड़ी।
मंद गति से कार्य का संचालन।

बिस पादना।
किसी कार्य में बाधा उत्पन्न करना।

बादर देख कैं पोतला फोरबौ।
उपलब्धि की आशा मात्र से सामान्य साधनों को त्याग देना।

फूँद में हो सरकबौ।
बिना किसी प्रयास के किसी कार्य में सफलता प्राप्त हो जाना।

बातन के भन्ना।
केवल बातें ही बातें करने वाला।

फूँक सरकबौ।
किसी आपदा की आशंका से भयभीत हो जाना।

बोलवाला होना।
किसी प्रभावशाली व्यक्ति की धाक जम जाना।

पुठ्ठे पै हांत नईं धरन देबैं।
दृढ़तापूर्वक अस्वीकार कर देना।

नाँव धराबौ।
अमर्यादित और अशोभनीय कार्य करके निंदा के पात्र बन जाना।

पीठ दिखाना।
किसी कार्य से बचकर भागना।

पिठियाँ सुद्द होकै।
किसी कार्य में पूर्ण मनोयोग से जुट जाना।

पतोरन कुआ भरबौ।
बिना ताल–मेल और उपयुक्त साधनों के कार्य पूर्ण करना।

प्रान अतंगै चढ़बौ।
भय और घोर विपदा की आशंका से प्राण सूख जाना।

पीप मं दाँत चबोरबौ।
किसी गंदी वस्तु को देखकर नीयत बिगाड़ना।

पुराने मड़ पै कलई करबौ।
किसी पुरानी वस्तु को सुसज्जित करना।

धरती धमकन।
एक मोटा ताजा हृष्ट–पुष्ट आदमी।

चढ़त बेल उतारबौ।
किसी की प्रगति में बाधा उत्पन्न करना।

जमन की मार।
मरणासन्न स्थिति।

घर–घर मटया चूलें।
सभी घरों में कोई न कोई समस्या का होना।

चम्बोदर के पाँवनें।
जहाँ जाते हैं, वहीं अटककर रह जाते हैं।

खसम मारकैं सत्ती होबौ।
जानबूझ कर अपराध करना।

ओंने पौनें दाम।
किसी वस्तु की मनचाही कीमत वसूल करना।

कलेवा बाँद कैं कड़बौ।
किसी कार्य को करने का दृढ़ निश्चय करके घर से निकलना।

इँदवान की जरें।
अलभ्य वस्तु।

देखत के इँदवान नौंने।
ऊपर से देखने में सुन्दर किन्तु भीतर से कड़वे दुर्गुण भरे हों।
(विष रस भरा कनक घट जैसे)

माटी समिट जाबैं।
संसार छोड़कर जल्दी चला जाना।

भौंतेरे में बीदबौ।
जाल में फंस जाना।

भूभर मूँतबौ।
अधिक उत्पात करना।

मौं मिलाबौ।
मुँह देखी बात करना।

रमा कै बेड़ैं जाबौ।
जान–बूझकर आपत्ति में फंसना।

सरग तरइयां टोरबौ।
असंभव कार्य को करने के लिए तैयार करना।

सकरे में समदयानों करबौ।
संकीर्ण स्थान पर कोई बड़ा कार्य करना।

सत्तनारायण में गदा।
किसी शुभ स्थान पर अशुभ कार्य करना।

लार टपकाबौ।
किसी वस्तु को देखकर अपनी मनोभावना विकृत करना, अथवा किसी वस्तु को देखकर ललचाना।

रेबड़ी बाँटबौ।
अपनों को अधिक लाभ पहुँचाने का प्रयास।

रेंवन ककवारे की कुतिया।
द्विविधा में पड़कर कहीं का न रहना।

राँग सौ ढलकाबौ।
सावधानीपूर्वक अपनी बात की पुष्टि करना।

साँय सट्ट।
लाभ–हानि कुछ भी नहीं।

सोऊत बर्रे रूराबौ।
उपद्रवियों के साथ छेड़छाड़ करना।

सौत कैसों लरका।
सारे अधिकारों से वंचित रहने वाला।

सरगै गैल लगाबौ।
खतरनाक कार्य करने के लिए तत्पर होना।

सरग राजा होबौ।
मृत्यु हो जाना।

हँड़िया कौ नौन जानबौ।
किसी व्यक्ति की वास्तविक स्थिति से पूर्ण परिचित।

हत चलई करबौ।
छोटी–मोटी चीजें चुराना।

हाड़ैल कैसी नकरिया पकरबौ।
किसी जिद पर अड़े रहना।

होरी कुदाबौ।
किसी की झूठी प्रशंसा करके उसे जोखिम भरे कार्य को करने के लिए प्रेरित करना।

हाल में चाल।
अचानक बाधा का आ जाना।

उल्टी सूदी कैबों
अमर्यादित बात करना।

काँन पकरबौ
अपनी गलती स्वीकार करना।

कान भरबौ
किसी के विरूद्ध उल्टा सीधा कहना।

किरिया करम
अन्त्येष्टि कर्म करना।

खट करम
षट्कर्म या पैचीदा काम।

खट राग
(षट्राग) आडंबर, किसी क्रिया का अनावश्यक विस्तार।

खसम मार कैं सत्ती होबौ
जान–बूझकर कुकर्म करना।

खूँटा पै गाँड़ धरबौ
जान बूझकर विपत्ति मोल लेना।

गरे में नौं दैबौ
दुराग्रह करना।

गरे में प्रान अटकबौ
मरणासन्न स्थिति।

गलयारे फारबौ
अत्याधिक क्रोधित होना।

गिर्रो दैबों
किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए एकदम पीछे पड़ना।

घर–घर मटया चूले
हर घर में कोई न कोई समस्या और अभाव ग्रस्तता।

चट्ट राँड़ पट्ट ऐवाती
क्षण–क्षण पर स्थिति परिवर्तन और बात पलटना।

चढ़त बेल उतारबौ
किसी की उन्नति में बाधा उत्पन्न करना।

चमक चउदस
कोई चंचल और चपल नारी।

चम्बोदर के पाँवने
जहाँ जायें, वही अटक जायें।

चलत बैल को अरई गुच्चबौ
काम करने वाले को बार–बार टोकना।

चलते पुर्जा
विविध युक्तियों से अपना काम पूर्ण करना।

चूलें की खाईं मजोटे में निकरबौ
गल्तियों का दुष्परिणाम तो भोगना ही पड़ता है।

चाट–चूट कैं बैठना
सारी संपत्ति को नष्ट करके अभावग्रस्त रह जाना।

चूली कैसे पान रखना
किसी वस्तु को बहुत सँभालना।

चौचयाबौ
किसी युवक–युवती की शादी विवाह की चर्चा।

छक्के छूटना
भयभीत होकर शांत हो जाना।

छूमंदे की नाक
थोड़ा सा नीच–ऊँच होने पर तुरंत बिगड़ जाना, अति संवेदनशील होना।

जंगलै जाबौ
शौच के लिए बाहर जाना।

जंजर पंजर
जर्जर स्थिति, अति सोचनीय स्थिति।

जमन की मार
मरणासन्न स्थिति।

जमन खौं बुत्ता देबौ
किसी वृद्धा का बार–बार बीमार होकर स्वस्थ हो जाना।

जरबौ मरबौ
ईर्ष्या से जलना भुनना।

जरें खोदबौ
किसी को समूल नष्ट करने का प्रयास।

जी में जी आवौ
आशंका से मुक्ति, शांति लाभ।

जोग में भोग करबौ
धार्मिक अनुष्ठान की ओट में कुकर्म करना।

झाड़ पोंछ कैं
सब कुछ समाप्त करके।

टका सी सुना देना
साफ–साफ सुना देना।

ठक्कयाबौ
गोली मारकर उड़ा देना।

ठक्कयानौ लड़ैया
धोखा खाया हुआ सियार।

डंका बजबौ
शान शौकत और ऐश्वर्य की चर्चा।

तनातनी होबौ
उत्तेजनापूर्ण वातावरण।

तू–तू तुसार
अत्यंत दुर्बल, कमजोर।

थुक्कम–थुक्का
एक दूसरे पर कीचड़ उछालना।

थूकन सतुआ सानबौ
अत्यल्प साधनों में काम चलाना।

धूल–मथूल
खूब मोटा ताजा।

थूँक कैं चाटबौ
बात कहकर पलट जाना।

थूँक उचटाबौ
जिसकी विपरीत प्रतिक्रिया हो।

दई में मूसर पटकना
किसी बने हुए कार्य में अनावश्यक बाधा उत्पन्न करना।

दाँत काड़बौ
भीख माँगना।

दाँत निपोरबौ
किसी का अनावश्यक उपहास।

दाँत तिनूंका दबाना
अत्याधिक विनम्र होकर किसी बड़े के सामने उपस्थित होना।

दाँद करबौ
अनावश्यक तर्कहीन बात करना।

दूद कौ दूद, पानी कौ पानी
निष्पक्ष न्याय करना।

दूर के ढोल सुहावने
वास्तविकता जाने बिना किसी वस्तु के प्रति आकर्षण।

दूदन अनाओ, पूतन फलो
सुख समृद्धि और संतान का आशीर्वाद।

सकरे में समदियानों
संकीर्ण स्थान पर कोई नवीन कार्य प्रारंभ करना।

सत्तनारायन में गदा पेंड़वो
शुभ कार्य के बीच किसी अशुभ वस्तु का प्रदर्शन।

सरग तरैयाँ टोरबौ
असंभव कार्य को संभव करना।

सदा सुहागिन
वेश्या या पर–पुरूष गामिनी।

सरमन बेटा
एक आज्ञाकारी पुत्र।

सोसनया हात
बाँया हाथ।

सैना कानी करबौ
इशारे बाजी करना।

साँड़ारे में नारायनदास
एक मात्र अनोखे व्यक्ति।

सुख हो रए
विश्राम करना।

सुट्ट हो रए
शांत रहना।

हल्ला उड़बौ
किसी की बदनामी होना।

हरौ–हरौ दिखाबौ
सभी काम सहज और सरल दिखाई देना।

हल्ला होबौ
प्रसिद्धि फैल जाना।

हाँत कौ पिल्ला छोड़ कूर कूर करना
लापरवाही करने के बाद पछताते रहना।

हाय हत्या
लूट खसोट से अर्जित की गई सम्पत्ति।

हापे में आना
नियंत्रण में रहना।

हिये की फूटबौ
विवेक शून्य होना।

हियाव आना
शक्ति अर्जित होना।

होंन ब्याँन
बच्चे का जन्म होना।

लिपे में आना
कर्म–क्षेत्र में उतरना।

लुगरयाव लड़ैया
धोखा खाया हुआ सियार।

लुअर लगबौ
सत्यानाश होना।

लुगरयानों लड़इया बिजली खौं डरात
धोखा खाया हुआ व्यक्ति संभलकर चलता है– *'दूद पियत जर मरे ईसुरी, पीलो मठा सिराकैं।'*

लुअरन जोग
अनावश्यक बेकार।

लरन जीत, मरन जीत
जैसे भी हो सफलता प्राप्त करना।

लाँगन कैसे खाये
अत्यधिक निर्बल।

रेबड़ी बाँटबौ
मुँह देख–देखकर अपनो को अधिक से अधिक लाभ देना।

राम नाम सत होबौ
स्वर्गवास हो जाना।

रुपइया की तीन अठन्नी भुनाना
अत्यधिक चतुरता प्रदर्शित करना।

रन्तभोर मचबौ
मिलजुल कर झगड़ा करना।

रेवन ककवारे की कुतिया
द्विविधा के कारण दोनों तरफ के लाभ से वंचित होना।

रमा कै बेड़ै जाबौ
जान–बूझ के खतरा मोल लेना।

रड़ापों रोबौ
सभी के समक्ष दुख व्यक्त करना।

म्यांरी कौ मूँड़ा साधबौ
भारी उत्तरदायित्व का भार वहन करना।

मौं सीबौ
सब कुछ जानते हुए भी चुप रहना।

मौं की खाबौ
पराजित होकर चुप रहना।

मोंई–मोंई लेबौ
अमर्यादित वार्तालाप करना।

मूत दिया बरबो
उल्टी सीधी चलाना।

मौं पसारबौ
माँग बढ़ाते जाना।

मूसर नईं बल्दावनें
किसी से कोई प्रयोजन न होना।

मौं छीबौ
थोड़ा बहुत कहना।

मूँढ़ें मारबौ
सिर धुन–धुन कर पछताना ।

मूँढ़ पै हाँत धरबौ
जबरन अधिकार जमाने का प्रयास।

मूँढ़ चाटबौं
व्यर्थ का बकवास करना।

मूँढ़ पै हाँत धरबौ
संरक्षण प्रदान करना।

माहिल मामा
चुगलखोर (आल्हाखण्ड का एक प्रमुख पात्र)।

मम्मा के आगे ममयावरे की धमकना
एक जानकार को जानकारी प्रदर्शित करना।

माते की भाँवरन में भाँवर पारबौ
दूसरे के काम के साथ अपना काम बना लेना।

मूँढ़ मुड़ात नई ओरे परे
कार्य प्रारंभ करते ही बाधा उपस्थित हो जाना।

मूतत के ना माड़ पसाउत के
निकम्मे और अकर्मण्य।

माटी में मिलाबौ
पूरी तरह से नष्ट होना।

माटी समेट लो
जीवन से ऊबकर मृत्यु की आकांक्षा।

महाभारत मचबौ
घोर संग्राम होना।

मरे पै मर्दन चढ़ाबौ
किसी निर्बल का सबल बनाने का प्रयास करना।

मरघटा कूका दै रऔ
मृत्यु का समय समीप आना।

मगरे पै मूतबौ
अपनी शक्ति और वैभव प्रदर्शित करने का प्रयास।

माटी मोल
जिसकी कोई कीमत नहीं।

मंथरा आय
किसी के कान भरने वाली कुल्टानारी।

भौतेरा में बीदबौ
किसी बड़े कुचक्र में फँस जाना।

भूभर मूतबौ
व्यवधान डालना।

भर मोंसराँ दे देना
आवश्यकता से भी अधिक प्राप्त होना।

भुस मिलाबौ
बने हुए काम में व्यवधान डालना।

मन भर दक्षिणा
सामर्थ्य के अनुसार दान देना।

भारे कौ पवारौ
बेमन से किसी काम को करना।

बादर में थिगरा लगाबौ
असंभव कार्य को संभव करने का प्रयास।

बाप की बहोरबो
अपने सम्पूर्ण ज्ञान का उपयोग।

बारे कैसों ब्याव
बाधा हीन कार्य सम्पन्न हो जाना।

बिना गाँड़ के गुठली लीलबौ
क्षमता के बाहर कार्य करने का साहस जुटाना।

बूढ़ी बेड़िनी खौं काजर
जानकार को ज्ञान बताना।

पैरें–पैरें फिरबौ
किसी कार्य में सर्वाधिक उपस्थित।

फूँक सरकबौ
अचानक डर जाना।

वे पेट से हैं
गर्भवती होना।

निबुआ नोंन चखाबौ
साझेदारी में धोखा देना।

पिट पुछा होना
अंतिम संतान।

पतापत बैठबौ
पंक्तिबद्ध बैठना।

बिलइया के गू
किसी काम के नहीं होना।

पाठे पै बूँद नईं परबौ
संवेदनहीनता।

पाठे पै गाज गिरबौ
असंभव कार्य हो जाना।

पड़ा बैल कौ गाँथौ
अनमेल जोड़ मिलाना।

पटा पै राँड़–नीम दतौन जो करें, सूखी हर्र चबायें
बाल–विधवा होना।

धनी मरे कौटिया
ऐसा वादा जिसका कोई ठिकाना नहीं हो।

धरम धक्का
अच्छे कार्य में थोड़ा सहयोग।

दो घोड़े असवार
अपनी वैकल्पिक व्यवस्था रखना।

चैन छानबौ
सुख शांति से रहना।

करिया मौं करों
नजरों से दूर रखना।

अभर काड़बौ
अन्तर्मन की छिपी बात जानना।

पजोखों करना
मृत्यु के बाद फेरे में पहुँचना।

पानी उतारबौ
किसी भले आदमी का अपमान होना।

पोंन छक मसकबौ
मनचाहा आनंद लेना।

पटरी से उतरबौ
लीक छोड़ देना।

उजरा नटवा से
अनियंत्रित नवयुवक।

पनमेसुर के पूरे
कपटी और गुड़ैल व्यक्ति।

चुप्पा बदमास
शांत रहकर चालाकी दिखाना।

चुखरयाई करबौ
इधर की उधर मिलाना।

चमचियाई करबौ
किसी दूसरी की खुशामद करते रहना।

चोचले करबौ
अनावश्यक मिथ्या प्रदर्शन।

चिनचिनों लगबौ
किसी बात का बुरा लगना।

छठवें सवार
अनचाहे मेहमान।

बुकलयात फिरबौ
अनावश्यक उपद्रव करना।

वजन बढ़वों
मान–सम्मान प्राप्त होना।

रिगरिगया आये
स्वास्थ्य में वृद्धि।

अजगर से धरे रत
निकम्मा और आलसी।

गौंघात करना
धोखा देना।

पनमेसुर कौ पंजा
भगवान की पूर्ण कृपा।